

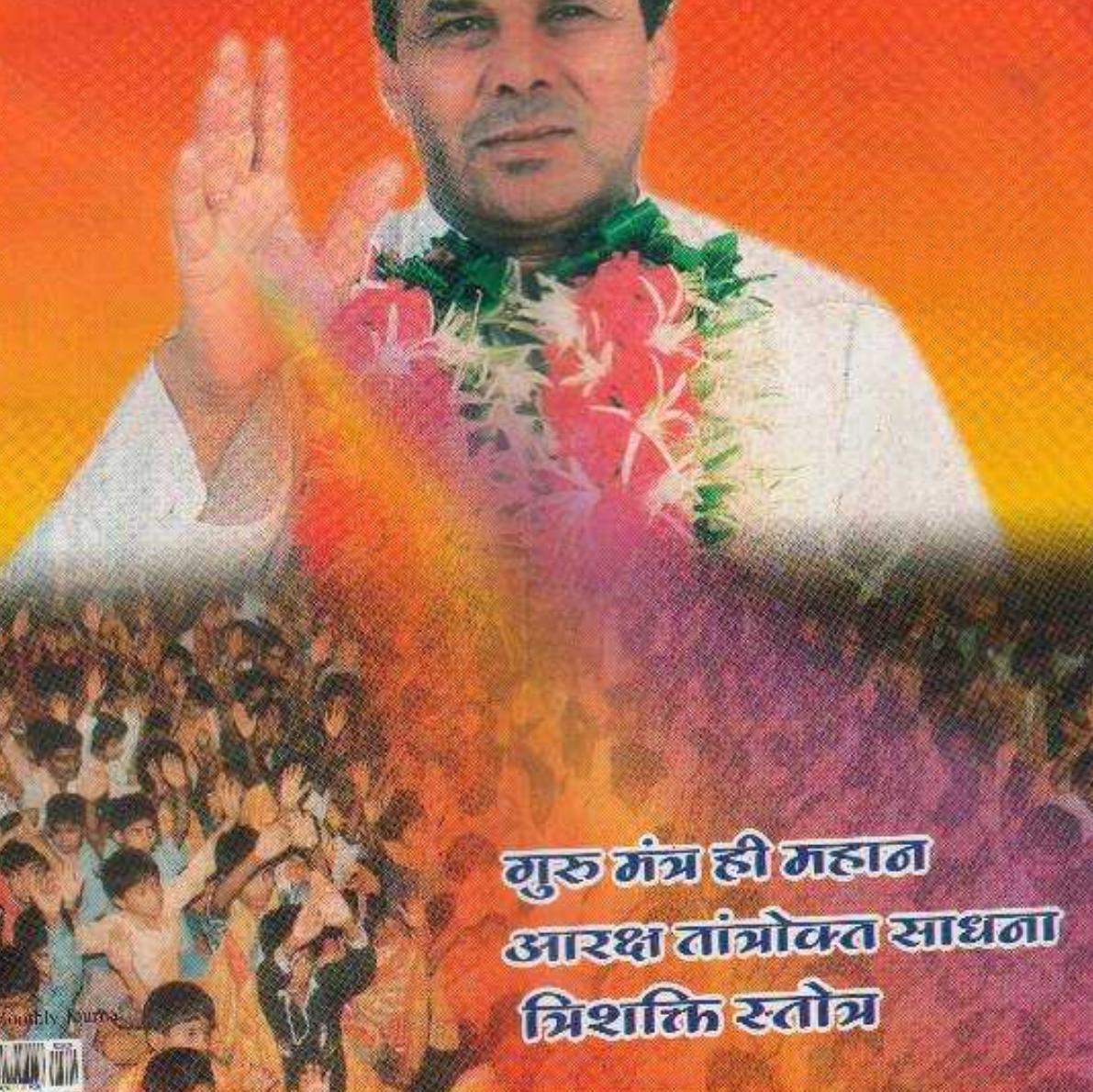
NOT FOR SALE  
जुलाई 2002

निस्त्रिल गुरु पूर्णिमा विशेषांक

मूल्य : 18/-

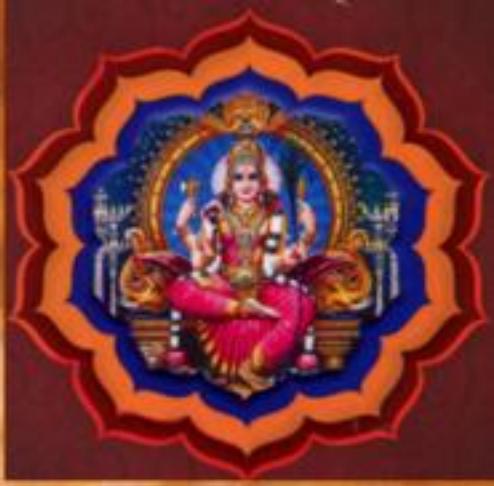
# गुरु-तंत्र-संग्रह

दिनांक



गुरु मंत्र ही महान  
आरक्ष तांत्रोक्त साधना  
ग्रिशति स्तोत्र





## COLLECTION OF VARIOUS

- > HINDUISM SCRIPTURES
- > HINDU COMICS
- > AYURVEDA
- > MAGZINES

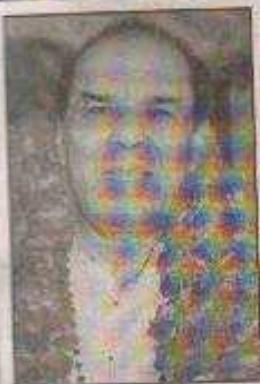
FIND ALL AT [HTTPS://DSC.GG/DHARMA](https://dsc.gg/dharma)

Made with  
By  
  
Avinash/Shashi

Icreator of  
hinduism  
server!

# श्रीकृष्ण-प्रकाश

॥ उम पदम तत्वाद्य नारायणाद्य जुड़त्या नमः ॥



## साधना

गुरु मंत्र पुरश्वरण साधना	22
गायत्री साधना	46
कृष्ण कलाओं की	
चार अनूठी साधनाएं	55
आरक्ष साधना	64
आनन्द भैरवी साधना	68
Wealth unlimited S.	82
Riddance Ailments S.	83
Health Happiness S.	84
Fulfil all Wishes S.	85
<b>सदगुरुदेव</b>	
सदगुरु प्रबधन	5
गुरु बाणी	44
<b>स्तुति</b>	
नक्षत्रों की बाणी	60
मैं समय हूँ	62
वराहमिहीर	63
जीवन सरिता	51
साधक साथी	72
इस मास विल्ली में	80
एक दृष्टि में	86
घं 22 अंक 7	
जुलाई 2002 पृष्ठ 86	



प्रेरक संस्थापक  
दॉ. नारायणदत्त  
श्रीमाली  
(परमहंस द्वार्मी  
निष्ठिलोकवरांदं ती)

प्रधान सम्पादक  
श्री नवदयिश्वर  
श्रीमाली

कार्यालयक सम्पादक  
श्री वैकल्पशश्चन्द्र श्रीमाली  
संयोजक व्यवस्थापक  
श्री अरविन्द श्रीमाली



## विवेचन

जगतगुरु श्रीकृष्ण 29

## स्तोत्र

विशक्ति स्तोत्र 74

## विशेष

श्री कृष्ण पूजन 37

प्रकाशक एवं स्वामित्व  
श्री वैकल्पशश्चन्द्र श्रीमाली

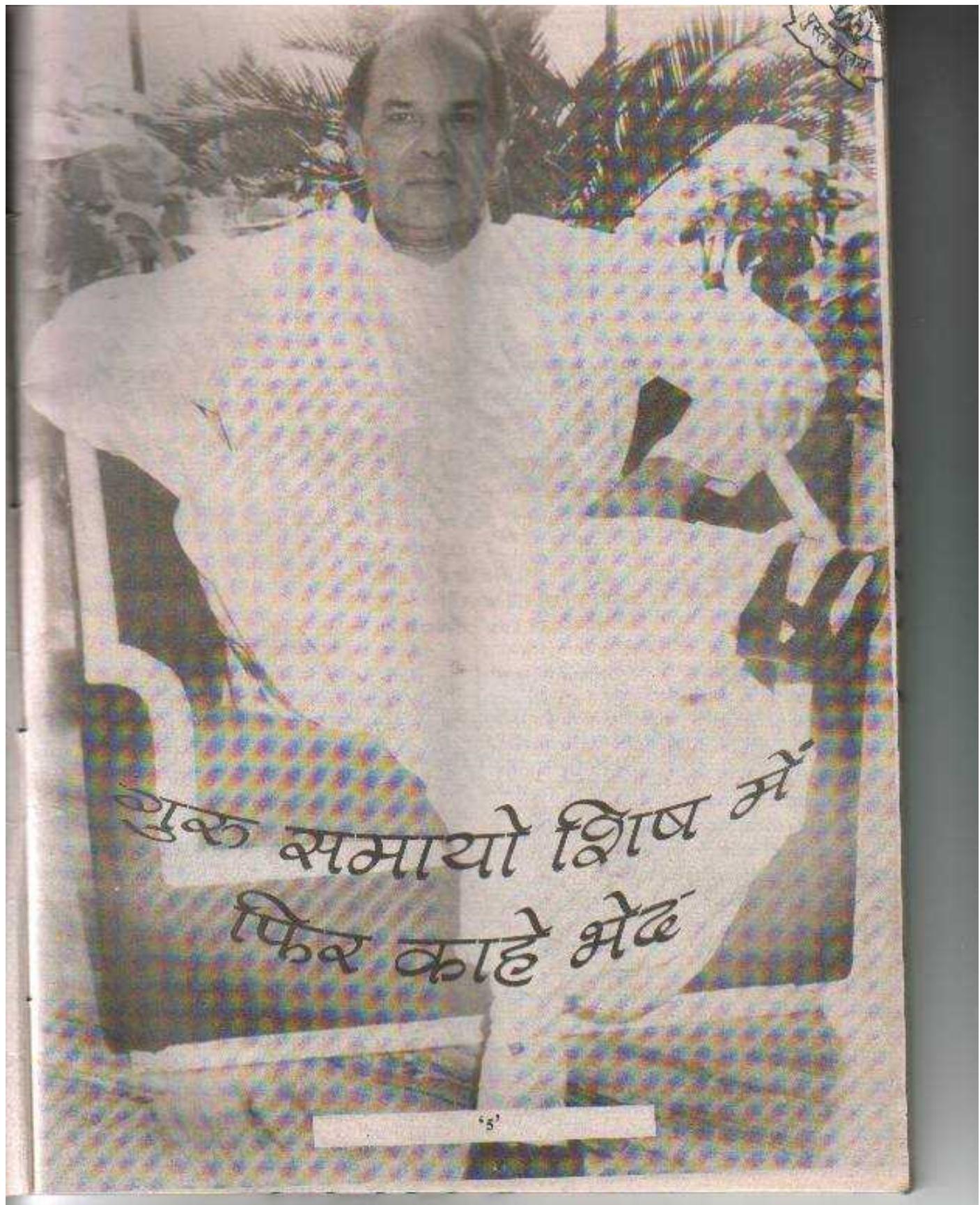
ब्राह्म  
नील अर्ट डिजिटल  
D-179, नारायण इंडस्ट्रीजल  
शिर्या केन्द्र, नह विल्ली  
मेरुदित नगर



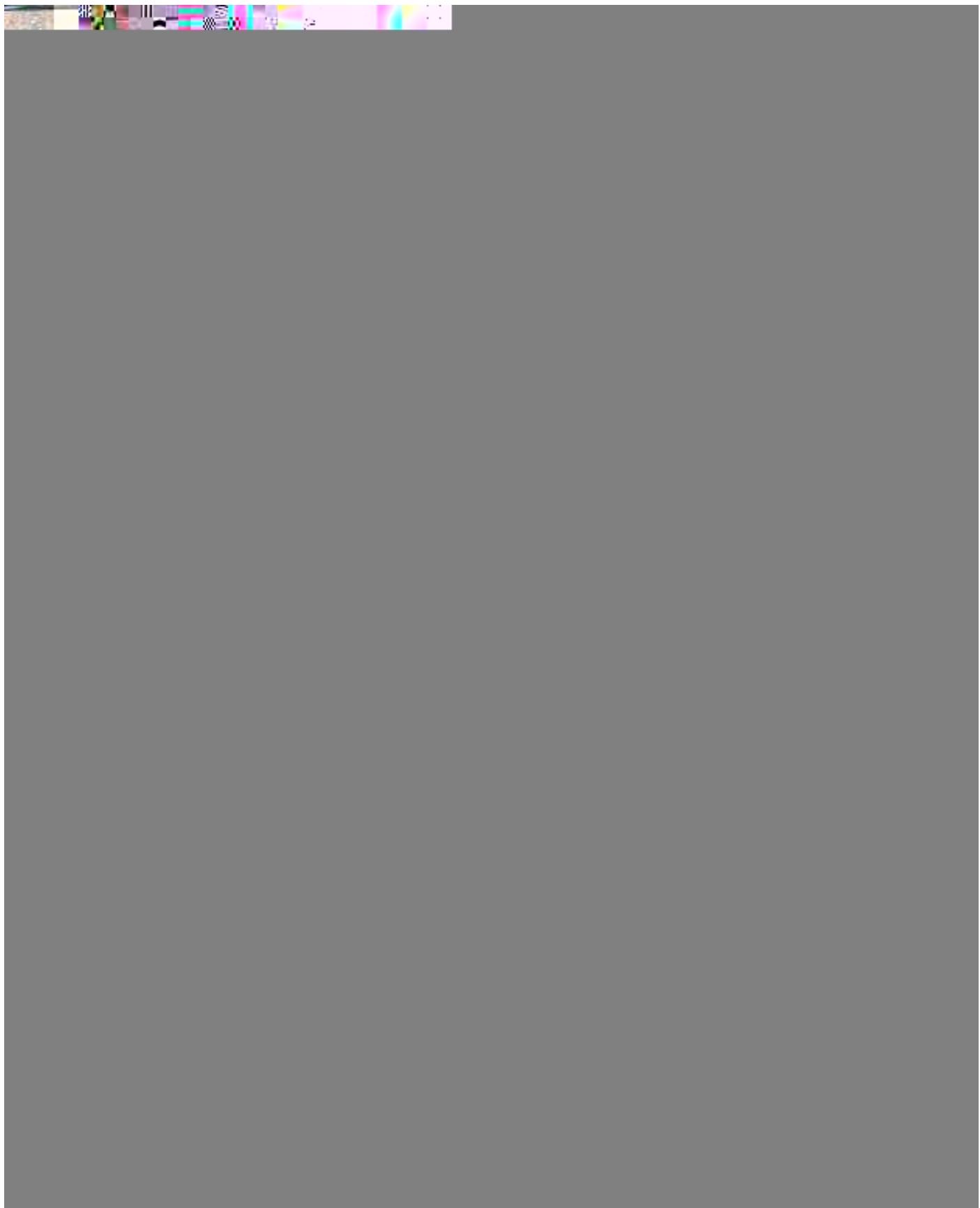
नियम

यहाँ इस ग्रन्थालय में उपलब्ध वस्तुओं का अधिकार परिवर्तन  
कर दें। इस 'अंतर-संग-वांश' विभाग' की

प्रार्थना



उक्त समायो शिष्म में  
पिंड काहे में



नहीं है।

निलमित ने इसी प्रकार की बात कही है, अति ने इसी प्रकार की बात कही है। यह नक्ष शंकराचार्य ने यह कहा कि मैंने अपने जीवन में समस्त चीजों को नियंत्रण किया है, यीथा है, अनुभव किया है और मैं दोषों के साथ यह कह सकता हूँ कि मुझ उपनिषद से बड़ा कोई गंथ नहीं है। जोहे कृगवेद हो, याहे वायुवेद हो, याहे सामवेद से चाहे ऋशविविध हो। इसलिए नहीं है कि उन वेदों को व्याख्यन के लिए गुरु की ही आवश्यकता डॉटी है। वही समझा भक्ती है कि वेद व्याख्या है, वही समझा सकता है कि उपनिषद व्याख्या है, वही समझा सकता है कि पूर्णता व्याख्या है।

उन में जो इलोक दिया है, वह युरु उपनिषद का इलोक है और इस इलोक में बहुत ही उत्तम कोटि की बात कही गई है, उत्तम कोटि की बात इसलिए कि ठीक हस्ती इलोक को शंकराचार्य ने भी कहा अपने शंकरभाष्य में जो कि उनका सर्वश्रेष्ठ गंथ है और निलकां आज पूरे सम्बाद में अनुवाद हुआ है, फ्रेंच में अनुवाद हुआ है, उसका सभी भाषाओं में अनुवाद हुआ है, उसका इंग्लिश में अनुवाद हुआ है। कठिन गंथ है किंतु भी इस बात है, उसका अंग्रेज विद्वानों ने अमेरिकियों ने, फ्रांस के, जापान के, स्वीकार किया है अंग्रेज विद्वानों ने की कि इसमें जो भी हथ्य है वह अपने आप में अद्वितीय है।

और वही भाव शंकराचार्य ने अपने इलोक में कहे हैं कि

राष्ट्रादि परेशं

युरुते पदे पूर्ण वदैव लित्यं

ज्ञायित्य रुपं सहितो यदैयः

उत्तम त्रूपूर्णे सरसु पूर्से देयः

उस इलोक का अर्थ और उस इलोक का अर्थ एक ही है। पर वह इलोक लिखा गया अब च ३८०॥ साल बहला। इसलिए मैंने इस प्राचीन गात्र तक वह विचार हमारे शास्त्रों ने भेजा करता रहा जिसका जीवन का

सार है, यही गीवन का आधार है, यही गीवन की पूर्णता है।

लेला हम इलोक में क्या है?

मैंने उस इलोक को इनमी महसूदी गई है।

इस इलोक में वह बताया गया है कि व्यक्ति जपने औपर में पूर्ण हो जा सकता है। पूर्ण तो प्रस देख करता है। जब एक गर्भ में बालक होता है तो वह पूर्ण होता है। इसलिए पूर्ण होता है कि बड़ा अच्छा उसको भीतर जनुभव होता है।

उस इलोक के भाष्य की बात कर रहा हूँ मैं इलोक का अर्थ तो बोध में करूँगा। इस इलोक का भी भाष्य किया गया, इसका अर्थात् किया गया, उस परलाच का भी सरल अर्थ किया गया

जब जोपास ने इस इलोक में—

जब। किसी ने कहा मैं तुम्हारा चावा हूँ यह एक बंधन, दूसरे ने कहा कि मैं तुम्हारा पिता हूँ तीसरे ने कहा मैं तुम्हारी मां हूँ, चौथी ने कहा मैं तुम्हारी जयी हूँ, पांचवी ने कहा मैं तुम्हारी ननी हूँ। सभी बंधन ही बंधन।

जब ऐसेही नहीं हुआ है, और उतने बंधन उसके नले में बढ़ जा। और ज्यो-ज्यो-जन्म-

जन्म बहुत लोल रहत है तो तो और बंधन उसके शरीर को जकड़ते रहते हैं।

जब जन्म कोई नहीं तो त्रिमिका है, कोई कहती है मैं तुम्हारी बालों हूँ। अतिम स्थान-

जब उस बंधन में जकड़ा हुआ वह धिता पर जाकर सो जाता है।

जब ने बहने वह ड्रग है, जन्म से पहले निर्विकल्प है, जन्म से

जले उन्हें किसी प्रकार का मोह नहीं है। मोह नहीं है इन्हिं।

उस नुड नृविद्धा को उस ऊनद को वह छोड़कर जन्म ले लेता

है।

इन्हिं जन्म के बालक को ब्रह्म कहा है, और जन्म से जन्म

लेने के बाद उसको मनुष्य कहा गया है।

उस क्षण जब जन्म लेता है एक धरण में उस बालावरण से

इस बालावरण में आता है, उन्मुक्त भाव से उस बंधन के भाव

में आता है तो वह बहुत व्याधित होता है, रोता है, बहुत दुखी

होता है, रोने चिल्लने लग जाता है।

और किर वह वास गुलाम सा बन जाता है। एक जन्मत

के शेष को पकड़ कर लाएं और पिंजरे में ढालें तो वह

ताजा शेर जो आया है जंगल से, बहुत चौखटा है हुक्कार

भरता है, सीखने तोड़ने की कोशिश करता है, उछलता

है, कृता है। बहुत रोता है चौखटा है और किर शांत हो

जाता है। शेष वैसे ही गह मनुष्य शांत हो जाता है।

तो किर इन नारे बंधनों को कर्ते लोडेंगे, हम वापस

उस मुंह तक कैसे गहनेग हम, अगर बंधन में ही मर

जाए हम, गुलाम को नहीं ही मर जाएंगे, ब्रह्म को तरह

ही मर जाएंगे नो किर नारे की सार क्या हुआ।

मैं आपका ऐसा उपरोक्त नहीं दूता कि अगले सब

उपरोक्त का लालू का मैं यह भी उपरोक्त नहीं दूता कि

किन  
वाल  
रहे  
हिं  
।  
रहने  
करने  
परन  
हम  
बोन  
।  
हैं  
माँ  
ऐस  
आ  
।  
बहु  
आ  
कुछ  
कर  
जीज

तुम सब कुछ छोड़-छाड़ कर भगवान का भजन करो उससे ही सब कुछ हो जाएगा।

शंखराधार्य कहते हैं कि यों कुछ भी प्राप्त नहीं हो सकता। अब वृष्णि प्राप्त ही नहीं हुई तो जीवन का जर्ब क्या हुआ, जीवन का मर्म क्या हुआ जीवन का सार क्या हुआ। जीवन को आनंद क्या है फिर?

अगर तुम यह सोच रहे हो कि तुम जीवन का आनंद प्राप्त खल रहे हो, तो यह तुम्हारी सूक्ष्म वृष्णि है। यह तुम्हारी मूल है। इस सब अपने आप में एडजस्ट होने की कोशिश करते हैं कि इस बहुत सुखी है।

मगर सुखी आप इसलिए हैं कि उस सुख को आपने देखा नहीं तो आप इसकी सूख मान रहे हो। तुमने उस आनंद को देखा ही नहीं तो तुम कैसे कह सकते हो कि यह पूर्ण आनंद है। तुम्हारी जगह तुम्हारे मकान में जहाँ तुम रहते हो वहाँ किसी करोड़पति को रख देते हो तो वह कहाँ दो कमरों के मकान में कैसे रहेगे, यहाँ नहीं रह सकते, बहुत गडबड है, कोई सुख कोई सुविधा नहीं है।

वह कुछी अनुभव कर रहा है और आप सुखी अनुभव कर रहे हैं।

इसलिए कि आपने उस जीवन को नहीं देखा, भौतिक हृषि से। जिसने जीवन का आनंद प्राप्त किया ही नहीं, जिसने जीवन में परनवाल अवसरा को प्राप्त नहीं किया, जिसने अपने जीवन में साधना की नहीं, जो अपने जीवन में भ्रान्त में मेडिटेशन में गया ही नहीं वह कैसे समझेगा कि मेडिटेशन क्या है, ध्यान का आनंद क्या है?

जब तुमने कोई चीज खाई ही नहीं तो उप

जीवन है असाधन प्राप्ति नहीं हुई तो फिर जीवन व्यर्थ है। जिस जो कोडे मकोड़ों  
में से जीवन है। वह जो हरेक जी लेता है। तुम जीवन जो नहीं ले हो तुम धोग  
नहीं हो। लेते हो जल्द है। मैं जीवन जी रहा हूँ तुम भोग नहीं हो। यह  
किसीमें है।

जामने कीर जीने में जल्द यह है कि तुम ब्रह्म हालत में दुखों द्वारे  
नहीं हो। नीचों ने जार दिन नहीं गए तो घबराहट कि ज्ञा  
नका ज्ञान। जन्म और में बोली तो घबराहट, दो दिन  
जन्म नहीं कीजो लोटी भी घबराहट, कि क्या हो गया इसको।  
इन दूषों के बई तकलीफ क्या है तुझको, क्यों नहीं  
देन रही है, कड़े को गुप्त्या हो गई है।

जाने तो तकलीफ, न बोले तो तकलीफ। सत्तान  
हो तो तकलीफ, यतान नहीं हो तो तकलीफ। बूढ़े  
में आप चर में हो तो तकलीफ नहीं हो तो तकलीफ।  
ऐसा ज्यादा आए तो तकलीफ कि इन्कम टैक्स बले  
आ जाएं, चोर आ जाएं और नहीं हो तो तकलीफ।

और तुम उम्र तकलीफ में सास लेते रहते हो। और  
बहुत सुखी भहस्त्रम करते हो कि मैं बहुत सुखी हूँ।

वह कुत्ता जिसके गले में पट्टा बंधा होता है बहुत अपने  
आप गर्व से उँचा उठकर खलता है कि इस गली के कुत्ते में  
कुछ नहीं है मैं लहून कड़ा हूँ मेरे गले में पट्टा है। वह भी अकड़  
कर चलता है। यह नहीं सोचता कि तेरे गले में पट्टा बंधा हुआ है।  
जंजीर लिए हुए वह साथ में चल रहा है।

मगर वह अकड़ कर चलता है और ज्योंहि वह गली का उत्ता भौकता।  
है वह फट से उसके पाव में डाकर खड़ा हो जाता है। अगर पट्टा बंधे होनेसे  
हो जीवन में अनेक आता हो तो भी जन्मकी करता ही कहते हैं तेर नहीं कहते हैं। शर  
के गले में पट्टा नहीं होता।

जीवन में अगर तुम आपातक में उड़ दी नहीं तो आप आपातक का आनन्द भी नहीं ले सकते कि आपातक का  
आनन्द लेता है। तेर नहीं तो एकदा लड़ोता - आप गिरने में डाल दिया। अब ऐसा क्या तोहे में बह दर्द फि



उसको कोई तकलीफ नहीं है, तकलीफ इसलिए नहीं कि उसके पांवों में पैंजनिया पहना वो उस मालिक ने उसे हरी मिर्च खाने को मिलती है, आनार के दाने खाने को मिलते हैं और बिल्ली उस पर अमर्ता मार नहीं सकती क्योंकि पिंजरे में बंद है और वह बहुत सुख है कि पिंजरे में बंद है। अब उसका छ- महीने या साल भर पिंजरे में रहने दीजिए और फिर बाहर निकालिए जाप छोड़ दीजिए, वह उड़ ही नहीं सकता, उड़ना भूल गया था, वो दोढ़ा पंख फड़ फड़ा कर दोढ़ा उमर उड़ेगा और धम्म से नीचे जमीन पर गिर जाएगा और मालूम है कि बाहर बैठा रहने वे सो भी कहाँ जाएगा क्योंकि उड़ नहीं सकता।

तुम्हारी हालत भी बेसी ही हो गई है पिंजरे में बैठे हों और पिंजरे के सींखचे एक पत्ती है, बैठे हैं आपसपाल के लोग हैं, चाचा है, चाची है। चारों तरफ तालियां बांधी हुई हैं और तुम बहुत सुख हो, कभी अनार के दाने खाने को मिल जाते हैं, कभी हरी मिर्च खाने को मिल जाती है और तुम बड़े सुख हो, परे में पैंजनिया बांधी है, पैंजनिया बजाते रहते हो।

बाहर निकलते हो दोढ़ा पंख फड़फड़ने की कोशिश करते हों धम्म से बैठ जाते हों और बापस पिंजरे में घुस जाते हों। पिंजरे में बहुत सुख है, बहुत आनन्द है बढ़ा कोई डर नहीं है। वह सब तो सहने हैं। मगर उस आकाश में उड़ने वाले तोते से तुम तुलना नहीं कर सकते, वह आनन्द कुछ और है जो पंख कैला कर एक मील तक उड़ कर चला जाता है, उस आनन्द को तुम ले ही नहीं सकते उस आनन्द को तुमने देखा ही नहीं उस आनन्द को तुम्हें बताएगा और कि आकाश में उड़ने में यह आनन्द है।

और अगर उस आनन्द को पैसा नहीं तो उस पिंजड़े में पड़-पढ़ नम नर जाओगे। उसमें तो कुछ बहुत बहादुरी है नहीं क्योंकि तुम्हें उन्होंने पिंजड़े में आल दिया और पिंजरे में ढाला तुम्हारे बाप ने ना

... जो भी करो वे कहने हैं बेटा जाऊ कर ले, बेटा जाऊ कर ले। वह कहता है



भी आपने केखी नहीं।

इसलिए नहीं देखी कि आप हमस बने ही नहीं। हम नहीं बने तो मानसरोवर जा नहीं सकते। कौए बन सकते हों, बगुले बन सकते हों, और तुम बगुले हो।

हम के भी सफेद पंख होते हैं तुम्हारे भी सफेद पंख हैं और एक बार बगुले ने सोचा कि हम उड़ता है हम भी उड़ें। हममें कक्क क्या है उसके भी चोंच है मेरे भी चोंच है। इसके पकेद पंख हैं मेरे भी सफेद पंख हैं। वह पक्षी है, मैं भी पक्षी हूं। इसमें कौन सी बड़ी बहातुरी है।

हम उड़ा और बगुला भी उड़ा। आधा किलोमीटर जाते ही बगुला नीचे घक्कर गिर पड़ा और हम उड़ा चला गया। आकाश में 200 मील उड़कर बापस भी आ गया।

और हम ने दुष्की लगाई मानसरोवर में तो पांच किलोमीटर दूर बाहर बाहर निकला। जब तुमने मानसरोवर को देखा नहीं तो उस जानन का नहीं केख पाओगा। उस ताल तलैया के पानी में वो जाननद नहीं है जो मानसरोवर के पानी में है। जब तुमने देखा ही नहीं तो कौन दिखाएगा तुम्हें? और घर बाले तुम्हें दिखाने देंगे नहीं क्योंकि वे तो एक ही बान सोचेंगे कि यह जाना नहीं चाहिए कहीं भी और हमसे लिएसो बकर के नाटक होंगे। पली गोंगी, चीखेगी, चिल्लाएगी, पहुंचेगी कहाँ जाते हों, उन गुस्सों के पास कुछ नहीं है, तुम घर में क्यों नहीं रहते।

चाचा कहेगा तिमाह खराब है तुम्हारा कुछ नहीं है, वे तुम्हें ठग रहे हैं सूख बना रहे हैं, कमाओ धमाओ, हम नहीं गए तो हमारा क्या बिगड़ गया, हम कौन से मर गए, तुम भी नहीं मरेंगे तुम कहाँ जा रहे हो। तुम भी सोचते हो कि क्या करें और बेचारे मन मारकर छेठ जाते हो। और फिर भी जाने लग जाओ तो पली भूखी रह जाएगी। मरने लगेगी, बेहोश होने लगेगी, नाटक करेंगी।

और तुम मन मार रख रह जाओगे, तुम सोचेंगे इस बार नहीं अनली बार जाएगे।

जहाँ विनाशक नम सूखु है वह आपको देकर सुला देते।  
इस लिखने के लिए गुरु नहीं मिलेगा, इस लिए नहीं मिलेंगे कि तुम्हें वह ताकत नहीं, हौसला नहीं। जब डुबकी  
लगाने की ताकत लगाने आपनी नहीं तो बेख़ भी नहीं सकते तुम।

उन सूखों के लिये बेट जाइए तो लहर आएगी वह कुछ घोंथे लापनी, कुछ सीधी लापनी। उनसे शोली  
माला लो जाने चाहे। मोती नहीं ला सकते। तुमने मोती का आनंद लिया हो नहीं। एक धमकटार शुद्ध मेनी  
नहीं लियोगा वह सूख में छलांग लगाने की ताकत नहीं है। इस्तेलिए नहीं है कि तुम्हारे पंखों को भार दिया गया  
है, तुमने यह बालों ने तुम्हारी ताकत को खात्म कर दिया है।

और छोटी मैं उत्सुकित करता भी हूँ कि तुम चिंता मत करो, हम तोता बन कर देन्ह लिया अब हम बन कर  
करो, और जिस दोनों में से जो अच्छा लगे वह मानिए। यह अच्छा हूँ मैं। मगर तुम उड़ने की कोशिश करते हो तो  
जोन बार कहुँ-कहुँ करते हो और फिर जमीन पर टिक जाते हो।

मैं चुक्का हूँ कि क्या हुआ? तुम कहते हो कि गुरु जी चरवाली बहुत दुखी थी, निकला आपके पार आ रहा था,  
मगर वह बीमार हो गई गुरुजी और उसने खाना नहीं खाया देने लगी गुरुजी, आप बात मानिए।

मैं तो मान रहा हूँ। तुमने एक संसद्धारा और ज्यादा बढ़ाया हुआ है। दूसरों के 18 तीव्रियां हैं तुम्हारे 19  
तीव्रियां हैं।

तुम मानसरोवर नहीं जा सकते, तुम आकाश में उह भी नहीं सकते तुम उस आकाश का आनंद नहीं ले सकते,  
क्योंकि आकाश में उड़ने की ज्या क्षमता है, परहों को फैलाकर के ऊंचा उठने की ज्या क्षमता है,  
मानसरोवर में डुबकी लगाने का क्या आनंद है तुम अनुभव नहीं कर सकते।

और शक्तिशाली कह रहे हैं कौन समझाएगा तुम्हें कि यह आनंद और है, कौन तीन भी  
मील तक तुम्हें उड़ा कर ले जाएगा।

कौन ले जाएगा?

चाचा, चाची मां, बाप, भाई, बहन?

उनके खुद के पंख मेरे हुए हैं। वो तुम्हें कहाँ से उड़ाने  
जो मुर्दे हैं वे तुम्हें कहाँ से जीवन दान के। जिनमें खुब  
क्षमता नहीं वे तुम्हें ज्या समझाएँ।

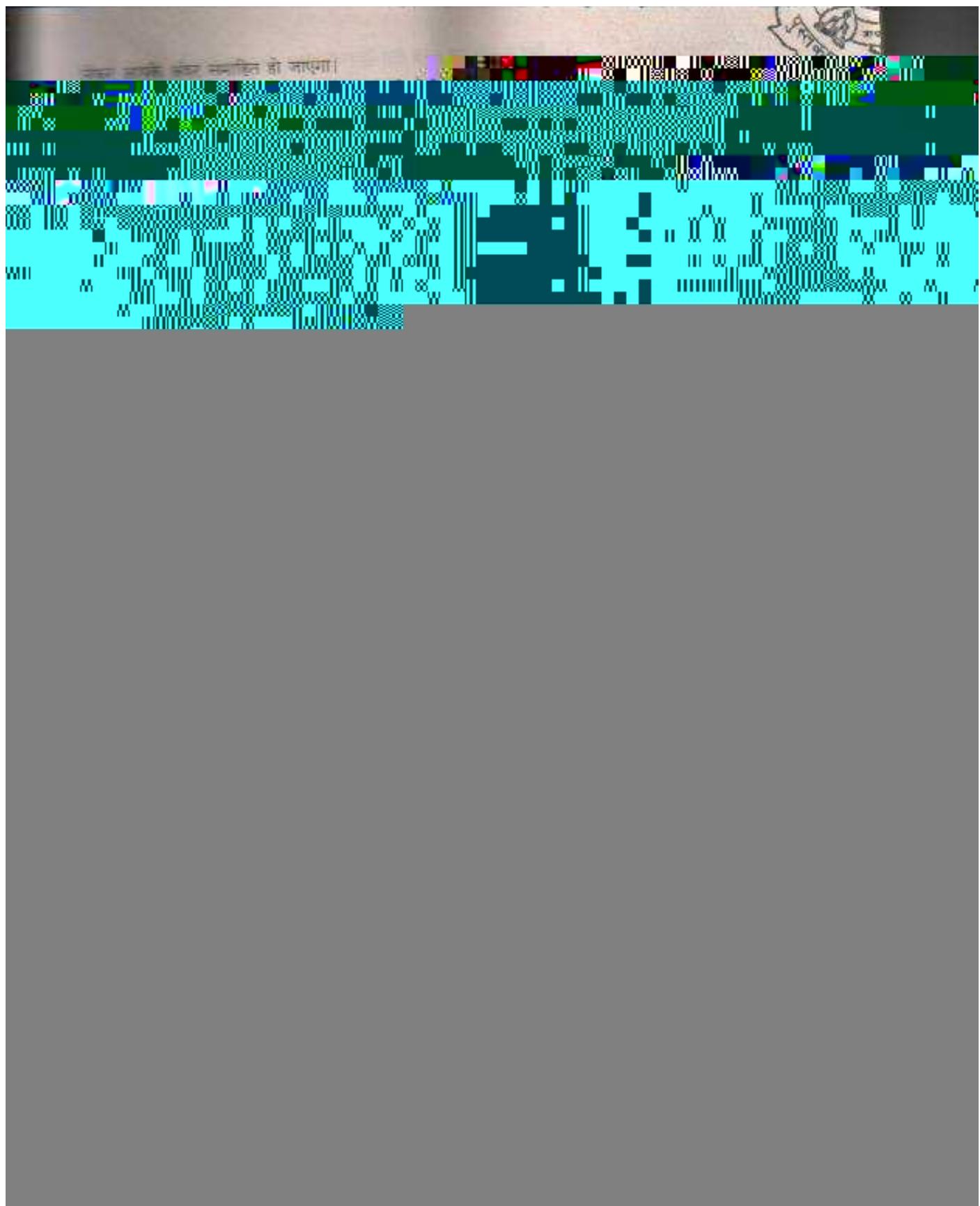
मैं ऐसा नहीं कह रहा हूँ कि तुम पत्नी को ढोड़दो, मैं  
ऐसा भी नहीं कह रहा हूँ तुम अपने बाचलों को छोड़  
दो मैं सही कहता अपने मात्र को छोड़ दो। मैं कह  
रहा हूँ कि उसके बाच रहाएँ मैं परन्तु पंखों को

फैलाकर आकाश में उड़ने की कला सीखिए। उनके बीच रहकर के।

आप पढ़ेंगे गुफजी लम्हा कैसे हो सकता है। तो उदाहरण अपना सुन का प्रबन्ध करता है कि मेरी भी पर्नी है, पुत्र हैं पाते पोलियो हैं, भावहैं, बहन है, सबधी रिश्वेतार हैं, और तुम से ज्ञाना बड़ा कुनबा है, पूरे विश्व में अम्मी लाख शिष्य हैं, इतना बड़ा कुनबा है, उन सबकी नकलीके सुनता है, उन सबकी प्रश्नानिया सुनता है, और फिर भी मुस्कराता रहता है। आकाश में उड़ना भी और डुबकी लगाता भी है। अगर मैं इतना सब कुछ होते भी उड़ सकता हूँ तो मैं उदाहरण देके समझा रहा हूँ कि आप भी कर सकते हैं।

मैं कोई मगवा करदूँ पहले संवादी या साथु नहीं हूँ। तुम्हारी तरह मारी जिम्मेदारियों को भी छोलते हुए उस आनन्द को प्राप्त कर सकता हूँ। इमलिए चिना मुझे व्याप होता नहीं तनाव होता नहीं। इमलिए रात को सोते ही मुझे नींव आ जाती है। इमलिए चेहरे पर एक ओज है एक भव्यता है और मैं तुम्हारे चेहरे पर भी बैसी ही चाहता हूँ।

शक्तिचार्य कह रहे हैं कि यह सब कुछ तुम्हें गुम ही समझा सकता है, तब नब तुम अपने आप को गुरु में पूरी तरह से स्थापित कर दो। गुरु का पूर्ण रूप से अपने आप में समाहित कर दो। और गुरु को पूर्ण रूप से समाहित करने का तात्पर्य क्या है? कैसे स्थापित कर दें, कैसे समाहित कर दें। समाहित का अर्थ है अपने आपमें मिला देना जैसे पानी से पानी मिलता है, दूध से दूध मिलता है और तुम्हारे अंदर गुरु समाहित हो सकता है, बहुत सरल कला है। और प्रत्यक्ष अमिहत होने से किनारा फायदा होगा? जो कुछ जान तुमने प्राप्त किया हो नहीं वह जान अपने आप मिल जाएगा आपको मिलेगा वयो नहीं वह जान को



जिंदगी दाव पर लगा देता है, पांच लाख भी लगा देता है। यो या तो इच्छा  
जाएगा या उस पार चला जाएगा।

शंकराचार्य कह रहे हैं कि ऐसा समर्पण जब मानस में आएगा,  
और जब मिर को उतारेगा तो गुरु तक पहुँचेगा।

मिर को उतारने के बो अर्थ द्वारा। सिर का अर्थ है घमण्ड, बुँदि।  
तुम्हारे पिला की बुँदि डे कि यह गुरुजी नया करने हैं, दे तो खुद घर  
में बैठे हैं, मेरा बेटा चिरह नाएगा, मेरे घर में भी जाएगा। उनकी  
धिता यह नहीं कि कुछ सीख लेगा। उनको धिता यह है कि पर से  
चला जाएगा। यह गुरु जो के घर में बैठा रहेगा। तीकरी नहीं करेगा  
चार दिन तो तनाखवाह बट जाएगी। उनका रोना, अपने खुद के स्वार्थ  
का है। तुम्हारे लिए रोना नहीं है। तुम्हारे लिए परेशान नहीं है, होते तो  
जैसे ही तुम मरते तुम्हारे पीछे वे भी मरते। तुम चित्त में जाते तो वो  
भी अज में जाकर कृत जाते। लेकिन एक भी ऐसे मर नहीं। पिछले  
इतिहास में तो मुझे मिला नहीं कि कोई मरा और उसकी पत्नी भी मर  
गई। रोती है, चीखती है, नहीं रोती तो लोग कहते हैं इसे दुख नहीं है  
क्या? तति मर मरा क्यों नहीं रोती। इसलिए वह रोती है, चीखती है  
जोर जो से। और! तुम चले गए, तुम्हारे बाद मेरा क्या होगा। मेरा  
क्या होगा और दूसरे जिन द्वाना खा लेती है। कहती है खाना गले से  
उतर नहीं रहा है पर क्या करें खाना पढ़ेगा।

और तुम अहंकार में इन्हे द्वारा ये कि मेरे बिना पत्नी का क्या होगा  
बच्चों का क्या होगा, गुजारा कैसे होगा। यह आह, इसको सिर कहते हैं  
घमण्ड को सिर कहते हैं कि मेरे बिना इसका क्या होगा। इसको उतारे  
पहले।

सीस उतारे भू धरे  
जो छोड दे उसको वह  
इस प्रेम के घर में पहुँच सकता है।  
यह समर्पण का भाव है।  
इसलिए शंकराचार्य ने कहा कि अपने आपमें शून्यता संन्यासी बन जाए।

नक्षत्र तक हुए थे संवादी बन जाए। कोई चिना नहीं करे। जल भर कर के देख ले, या तो यात्र भर में कुछ अदृष्टि, जिस सिवायी भर कर देगे कि कुछ नहीं गुरु के पास ने, नुह के पास जाने से कुछ फरक नहीं है। या तो वह चैलेज के साथ करें।

और नहीं तो इस बनकर घर आएंगे और बता देंगे कि इस बनने का यह आनंद है। ये सब जो बहुले हैं, मेरे घर

जाएंगे। जिस विश्वासी भर कर देंगे कि उस तरह गुरु के पास ने, नुह के पास जाने से कुछ फरक नहीं है। या तो वह

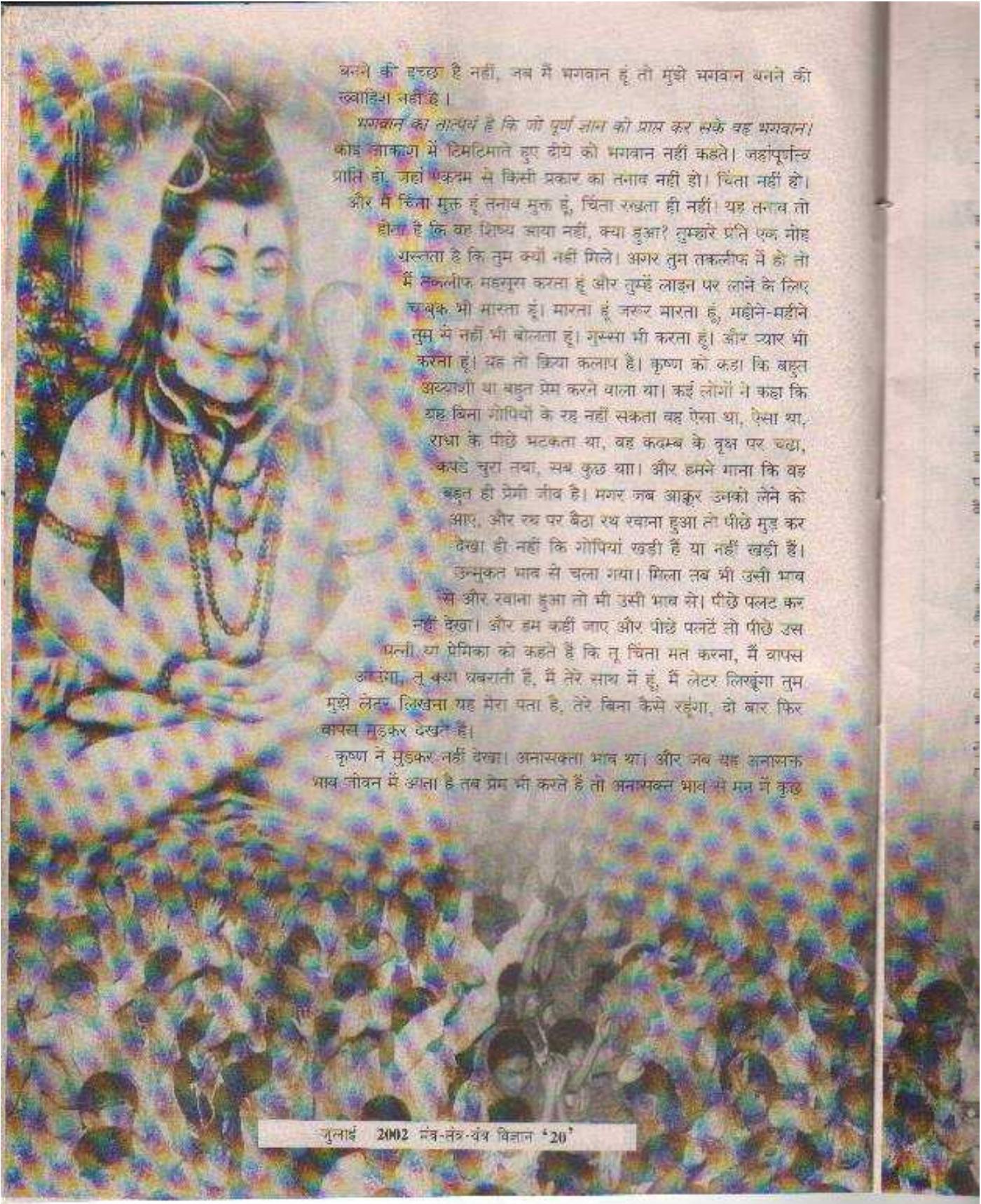
चैलेज के साथ करें।

डॉल, डूट, कपट, व्यापकार, बदमाशी इतनी  
विधिक दुस-दुस कर भरी है। मैं छड़ा होऊँ  
भी तो कहा होऊँ। जगह है ही नहीं। और  
किस तरफ पर बुखिं हितनी होती है। पहले उसको  
देंगा। साफ कर दीजिए।

पहले इतनी जगह बनाइए कि गुरु बैठ सके आकर  
के, और वह तब ही सकता है जब चैलेज के साथ  
आप गुरु के साथ हो जाएंगे। और गुरु के साथ डैले  
का तात्पर्य है कि जो गुरु के ऊनुकूल लार्द है वह अलै

मैं अपने स्वर्य के लिए नहीं कह रहा हूँ मैं गुरु हूँ  
इसलिए नहीं कह रहा हूँ। मैं तो उन शास्त्र की जात  
कर रहा हूँ, शंकराचार्य की बात लह रहा हूँ। तुम मेरे  
लिए कुछ कार्य करेंगे तब भी मुझे कुछ फैले पड़ेंगा  
नहीं करेंगे तब भी को पकड़ नहीं पड़ेंगा।

जब हनने साल नुमने सरा कोहं कार्य नहीं कियाते  
कौन सा दूष नया मरा करना? और तब कर लोग तो  
कौन सा ऐं चावल बन जाऊँगा और मुझे मणिल-



बलगे को दरछा है नहीं, जब मैं भगवान हूं तो मुझे भगवान बनने की लबाइना नहीं है।

भगवान का नात्पर्य है कि जो पूर्ण जान को प्राप्त कर सके वह भगवान। कोइ आकाश में दिमिटाने हुए दोये को भगवान नहीं कहते। जहाँपूर्वान्त्र गास ही जहाँ करम से किसी प्रकाश का तनाव नहीं हो। चिंता नहीं हो।

और मैं किना मुक्त हूं तनाव मुक्त हूं, चिंता रुक्ता ही नहीं। यह तनाव तो होता है कि वह शिष्य आदा नहीं, क्या हुआ? तुम्हारे प्रति एक नोह अस्तिता है कि तुम क्यों नहीं गिले। अगर तुम तकलीफ में हो तो

मैं तकलीफ महसूस करता हूं और तुम्हें लाडन पर लाने के लिए

चबूक भी मारता हूं। मारता हूं जरूर मारता हूं, महोने-मट्ठीने

तुम में नहीं भी बोलता हूं। गुम्फा भी करता हूं। और ज्यार भी

करता हूं। यह तो किया कलाप है। कृष्ण को कड़ा कि बहुत

अध्यात्मी या बहुत प्रेम करने वाला था। कई लोगों ने कहा कि

यह किना गोपियों के रह नहीं सकता वह ऐसा था, ऐसा था,

राधा के पीछे भटकता था, वह कदम्ब के वृक्ष पर चढ़ा,

कपड़े तुरा तथा, सब कुछ था। और हमने गाना कि वह

बहुत ही प्रेमी नीव है। मगर जब आकूर उनको लेने को

आए, और रद पर बैठा रथ रखाना हुआ तो पीछे मुड़ कर

देखा ही नहीं कि गोपियां छड़ी हैं या नहीं छड़ी हैं।

उन्मुक्त भाव से चला गया। मिला जब भी उसी भाव

से और रखाना हुआ तो भी उसी भाव से। पीछे पलट कर

नहीं देखा। और हम कहीं जाए और पीछे पलटे तो पीछे उस

प्रनी या ऐपिका को कहत है कि तु चिंता मत करना, मैं बापस

आऊंगा, तु बदा रखता है, मैं तेरे साथ मैं हूं, मैं लेटर लिखूंगा तुम

मुझे लेता लिखता। यह मेरा मत है, तेरे किसे रहेगा, दो बार किर

बापस नहीं कर देखा है।

कृष्ण ने मुड़कर नहीं देखा। अनास्फना भाव था। और जब यह अनास्फना

भाव जोवन में आजा है तब प्रेम भी करते हैं तो अनास्फन भाव से गले में कुछ

तुम नहाई जड़ो है। तुम्हारी ओखल गंदी हो सकती है, लेकिं उन्हें गंदी नहीं है।  
तुम मस्तिष्क को नहीं नहीं है। मेरे विद्यार भी गंदे नहीं हैं। तुम



गुरु पूर्णिमा के अवसर पर

जिसने गुरुमंत्र सिद्ध कर लिया उसने  
गुरुत्व को अपने भीतर स्थापित कर लिया



गुरु मंत्र को सावधिक तेजस्वी मंत्र माना गया है। जो शिष्य हैं उनके लिए तो जीवन का आधार ही गुरु मंत्र है। गुरु मंत्र का पुरश्चरण सवालाख मंत्र का होता है। वर्ष में कम से कम तीन बार संकल्प लेकर गुरु मंत्र का पुरश्चरण अवश्य ही सम्पन्न करें। सद्गुरु तो शिष्य के सहस्रार स्थित ब्रह्म घन्ध में विशज्जमान होकर शिष्य का सदेव कल्याण ही करते हैं। ऐसे गहन मंत्र की अहिंसा विलक्षण है। एक गहन विवेचन गुरु मंत्र के सम्बन्ध में

गुरु मंत्र सभी देवताओं के मंत्रों का मूल आत्म होता है। गुरु मंत्र का निरन्तर जप करते रहने से अन्य देवताओं के मंत्रों के जप करने की आवश्यकता ही नहीं होती है।

सही अर्थों में गुरु मंत्र मैं मूल रूप से सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड का तेज समाहित होता है, गुरु मंत्र अपने आप में छोटा होते हुए भी असीम क्षमताओं से ओत-प्रोत होता है, क्योंकि

ज्ञानोत्तम—एक गुरुद का अर्थ अपने आप  
में सून्दर्यम है, जो कर्व किसी अन्य देवी  
कर्व के समें भी हो सके एवं सुन्दरि गान  
में भी हो सकता है, उसे गुरुमंत्र तत्काल  
संवाद में अद्वितीय शब्द एवं विश्वास  
के साथ इसका बादे तो व्यक्ति को अन्य  
कर्व करने की अवश्यकता ही नहीं होती  
है। इन्हें साधक के लिए गुरु मंत्र जप  
आवश्यक ही नहीं अनिवार्य है, जो साधक  
निष्पक्षना से, जिस भाव से मंत्र जप  
करता है, उसके अनुसार ही उसे कल  
सूचिप्राप्त होती है। गुरु मंत्र जप के प्रभाव  
से साधक को निश्चित ही अपने पुरुषार्थ  
की विज्ञि प्राप्त होती है।



है अर्थात्  
का तरीका  
जाकर्षण  
का हो जा  
होकर उत्तर  
है। इसमें  
है; मृत्यु  
(७)

'नाद' उ  
गुञ्जरण  
है, उसमें  
गुञ्जरित  
बीज मात्र  
से व्यक्ति  
पारन्नात  
है,  
आवाज  
आप से  
सुरी मृ  
मुधरन  
आकृप  
होती है  
कोई सुनता  
अद्वितीय  
सरोबार  
एक अच  
करता है

(८)  
जिसका  
मरना,  
उस तर  
है, जिस  
सम्पन्न

शब्द से विमृष्टित किया है।

(३) गुरुमंत्र में तीसरा बीज 'म' है जोकि 'माधुर्य' को इनित करता है। माधुर्य का तात्पर्य है, शरीर के अन्दर छिपा हुआ सत चित आनन्द, अत्मिक शान्ति। इस बीज द्वारा साधलेने से व्यक्ति के जीवन में वह चाहे पारिवारिक हो या सामाजिक, दोनों में एक पूर्ण सामर्जस्य प्राप्त हो जाता है, उसके जीवन में सभी प्रकार की बाधायें एवं परेशानियां समाप्त हो जाती हैं। जिसके फलस्वरूप उसे अवर्णित आनन्द की प्राप्ति होती है, उसे पारिवारिक एवं सामाजिक, यथा प्राप्त होता है तथा वह व्यक्ति पक्के दृढ़ एवं पवित्र चरित्र का रूपाभी बन जाता है।

(४) गुरुमंत्र में चौथा बीज 'त' है जो 'तत्त्वमसि' का प्रतिनिधित्व है, जिसका अर्थ है वह दिव्य स्थिति जो कि उच्चनम योगी भी प्राप्त करने के लिए लालाचित रहते हैं। तत्त्वमसि का अर्थ है कि मैं तत्त्व हूं, या मैं ही वह हूं। जब साधक इस बीज मंत्र का जप करता है तो वह ब्रह्म में तथा अपने में लेश मात्र भी अन्तर नहीं समझता। उसकी अध्यात्म की उच्चतम स्थिति हो जाती है, उसको जो उपलब्धियां और सिद्धियां प्राप्त होती हैं, उसको शब्दों द्वारा ना अस्यमव हैं, उसको तो केवल ऐसी स्थिति प्राप्त करने पर ही समझा जा सकता है। सही अर्थों में इस बीज मंत्र के प्रभाव से व्यक्ति को असीमित शक्तियां प्राप्त हो जाती हैं।

(५) गुरुमंत्र में पांचवा बीज 'वा' है। यह बीज मानव शरीर में पांच प्रकार की प्राण तत्व 'प्राण, अपान, व्यान, समान और उडान' को दर्शाता है। इस बीज मंत्र के प्रभाव से बड़ह यह पांचों पर पूर्ण नियंत्रण प्राप्त कर लेता है और वह अपनी इच्छानुसार कितने ही दिनों तक की समाधि ले सकता है। इस बीज को साधलेने से व्यक्ति लोकानुलोक गमन की सिद्धि प्राप्त कर लेता है और पलक इपकते ही वह ब्रह्माण्ड के किसी भी लोक में जाकर वापिस आ सकता है। इस बीज मंत्र के प्रभाव से उसे दूसरी उपलब्धि यह होती है कि वह वरदान या श्राप दे सकता है।

(६) गुरुमंत्र में छठा बीज 'य' है जोकि 'यम' को दर्शाता

इस बीज मंत्र के प्रभाव से वह इन पांचों पर पूर्ण नियंत्रण प्राप्त कर लेता है और वह अपनी इच्छानुसार कितने ही दिनों तक की समाधि ले सकता है। इस बीज को साधलेने से व्यक्ति लोकानुलोक गमन की सिद्धि प्राप्त कर लेता है और पलक इपकते ही वह ब्रह्माण्ड के किसी भी लोक में जाकर वापिस आ सकता है। इस बीज मंत्र के प्रभाव से उसे दूसरी उपलब्धि यह होती है कि वह वरदान या श्राप दे सकता है।

इस बीज मंत्र के जपने मात्र से एक सामान्य से सामान्य व्यक्ति भी जीवन की उच्च सफलताओं को प्राप्त कर सकता है, वह चाहे भीतरीक हो या आव्यासिक। ऐसे व्यक्ति को स्वतः ही अटूट धन सम्पद, पश्वर्य, मान-सम्मान प्राप्त हो जाता है। इस बीज मंत्र को जपने वाला व्यक्ति भी इसे भी 'नायक' रहता है, वह मानव जाति का, मार्य दर्शक कहलाता है और आने वाली पीछिया उसे युग पुरुष से सम्बोधित करती है।

(२) गुरुमंत्र में दूसरा बीज 'रा' है। यह शरीर में स्थित अग्नि को दर्शाता है, जिसका कार्य व्यक्ति को रोग,

दुष्प्रभावों, आदि से बचाना है। इसके अलावा यह इच्छित व्यक्तियों को 'रति चुरुचु' (काम) प्रदान करता है, जो सानव जीवन की एक आवश्यकता है। यह सूक्ष्म अग्नि का भी प्रतिनिधित्व करता है, जो शरीर की अग्नि से भिन्न दूसरे प्रकार की अग्नि है, इसका कार्य व्यक्ति के चिन्ह में स्थित सारी कमियों और विकारों 'काम, क्रोध, लोभ, मोह और अंहकार' को जलाकर पवित्र करना है। विकारों के नष्ट होने से मानव चेतना का मस्तिष्क ब्रह्माण्ड के ज्ञान को समझने में सामर्थ्यवान हो जाता है। इस बीज मंत्र के जप के प्रभाव से व्यक्ति इच्छित अवधि तक जीवित रह सकता है, जिसे शास्त्रों में इच्छा मृत्यु

है अर्थात् जो देव को एक सही पवित्र एवं लय के साथ नीते  
कर लटीका। इसके द्वारा व्यक्ति को एक अद्वितीय,  
अवश्यक प्राप्त हो जाता है, उसका व्यक्तित्व इस प्रकार  
होता हो जाता है कि लोग उसकी ओर स्वतः ही आकर्षित  
होकर उसकी हरेक बात को मानने के लिए तैयार हो जाते  
हैं। इस बीज मंत्र को साध लेने से व्यक्ति, मृत्युंजय हो जाता  
है, मृत्यु कभी उसको स्पर्श नहीं कर सकती।

(५) गुरुमंत्र में सातवा बीज 'ना' है। इसका अर्थ है

वह से व्यक्ति सहज ही भाव समाधि में पहुँच जाता है। अर्थात् गुरुमंत्र द्वारा कर अपनी कृपणतिमी को पूर्णतः  
जलन कर परकाया प्रवेश, जलगमन, अदूष लक्ष्यी एवं  
अनोन्मित शक्ति का स्वामी बन जाता है।

(६) गुरु मंत्र में नवां बीज 'य' है, इसका तात्पर्य  
'यथाच' से है, अर्थात् वास्तविकता, सच्चाई, परमसत्य।  
इस बीज मंत्र के प्रभाव से व्यक्ति माया जाल को काटने में  
सफल हो जाता है, उसके समस्त पाप नष्ट हो जाते हैं।

या का दृष्टि अंतर्काचा बहुत ही विश्वासी है।

दी दृष्टि जिसका और मंत्र के रूप, छह बीज परिवर्तन को उमंत्र के साथ किसी पुरुष के पावन मंत्र के कानों



मुक्त हो जाता है, इस बीज मंत्र के प्रभाव से उसे प्राचीन विद्याओं का ज्ञान ही जाता है, धन एवं वैभव की लक्ष्मी उसकी गृह में निरन्तर स्थापित रहती है।

(१२) गुरुमंत्र में बारहवा बीज 'गु' अर्थात् गुणरण है। यह व्यक्ति के आनन्दरिक शरीरों जैसे के भू, भुव, स्व, मह, जन, तप, सत्यम् 'में उसके चिन्त के योग को दर्शाता है। 'गु' गुरु का बीज मंत्र है, उसको जपने से व्यक्ति स्वतः ही गुरुमय हो जाता है, गुरु का सारा ज्ञान शक्तियां, तेजस्विता उसके शरीर में उत्तर जाती है, जिससे वह अन्यन्त उच्च भव्य स्थिति को प्राप्त कर लेता है, ऐसा व्यक्ति देवता, ऋषियों, एवं विश्व में पूजनीय हो जाता है। और वह योगीराज की उपाधि से विभूषित हो जाता है, ऐसा व्यक्ति किसी भी

शिवकी शिवा (शक्ति) ब्रह्माण्ड का मुख्य स्वी तत्त्व, ऋणात्मक शक्ति। सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड इसी ऋणात्मक शक्ति के स्वस्त्रम भवित्वात् है, जो भी साधक इस बीज को सिद्ध कर लेता है, उसके शरीर में शक्ति चक्र जाग्रत होकर शक्ति उत्तर जाती है। इस बीज मंत्र के प्रभाव से व्यक्ति अपनी समस्त पाप राशि को नष्ट करने में सफल हो जाता है। ऐसा व्यक्ति अपने व्यक्तित्व को छिपाने के लिए दूसरे पर माया का आवरण ढालने में समर्थ हो जाता है।

(१३) गुरुमंत्र में पन्द्रहवां बीज 'न' है, अर्थात् 'नवीनता' जिसका अर्थ है, एक नयापन, एक नूतनता, एक अछितीय क्षमता। इस बीज मंत्र के प्रभाव से व्यक्ति दूसरों को अपनी इच्छानुसार अनुकूल बना सकता है, एवं स्वर्य-

लोक पर आ जा सकता है।

(१४) गुरुमंत्र में तेरहवा बीज 'र' है, अर्थात् 'रुद्र' जिसका अर्थ है ब्रह्माण्ड का मुख्य पुरुषतत्त्व है। इस बीज को सिद्ध करने से व्यक्ति कभी भी वृद्ध नहीं होता एवं वह न ही काल कवलित होता है, वह सर्वव्यापी, सर्वज्ञाता, एवं सर्वशक्तिशाली ही जाता है। ऐसा व्यक्ति विश्वामित्र की भाँति नवीन सुष्ठु रच सकता है, और शिव की तरह उसे नष्ट भी कर सकता है, सम्पूर्ण प्रकृति उसके इशारे पर नुत्य करती हुई प्रतीत होती है, उसके चारों और एक दिव्य चतुर्विंश आभा मण्डल बन जाता है, और जो भी ऐसे व्यक्ति के सम्पर्क में अन्य व्यक्ति आता है, उसका आध्यात्मिक उत्थान हो जाता है।

(१५) गुरुमंत्र में चौदहवा बीज 'यो' जिसका अर्थ है 'योनि' अर्थात्

यह सूक्ष्म अठिन का भी प्रतिशिखित है, जो शाकीय की अठिन से रिलेट दूसरे प्रकार की अठिन है, हल्का कार्यव्यक्ति के द्वित में विश्वत शाकी कमियों

जैविक।

समार में भौतिकता और आध्यात्मिकता दोनों का ही सम्म है, हमारे जीवन में भौतिकतत्व भी है जो इस समार में प्राप्त थोड़ा विलास को पूर्ण रूप से अपनाने को प्रेरित करता है। विषय बाजना बाज-बार हावी होती लोकेन गुरु

की अपेक्षा गुरु मंत्र जप पूर्ण निष्ठा के साथ कर लिया जाय तो समस्त विपत्तियों का नाश स्वतः ही होने लगता है। निम्न मंत्र का सबा लाख मंत्र जप 'अपवहन्ता माला' से करें—

### मंत्र

॥ ॐ सुं हुं परम तत्त्वाय  
नारायणाय गुरुभ्यो नमः ॥  
(साधना सामर्थी न्योदयवर न. १५५)

### (३) रोगनाश के लिए

गुरु मंत्र से कैसा भी रोग हो, नड़मूल से समाप्त किया जा सकता है, उससे श्रेष्ठ अन्य कोई उपचार नहीं है, जो कि मनुष्य को रोग मुक्त कर पूर्ण स्वास्थ्य प्रदान कर सके। निम्न मंत्र का 'सूद्र माला' से सबालाख जप करें—

### मंत्र

॥ ॐ रं परम तत्त्वाय  
नारायणाय गुरुभ्यो नमः ॥  
(साधना सामर्थी न्योदयवर न. १५०)

### (४) सौभाग्य प्राप्ति के लिए

यदि बार-बार प्रयत्न करने पर भी भाग्य साथ न दें, तो उस व्यक्ति से दुर्भाग्यशाली दृसरा कोई नहीं होता, किन्तु यदि व्यक्ति 'सौभाग्य माला' से निम्न मंत्र का सबालाख जप करते, तो उससे ज्यादा सौभाग्यशाली ही अन्य कोई नहीं होता, वयोंकि वह दुर्भाग्य की लकीरों को मिटाकर सौभाग्य के अक्षर अंकित कर देने वाला अत्यंत तेजस्वी मंत्र है—

### मंत्र

॥ ॐ वलीं परम तत्त्वाय  
नारायणाय गुरुभ्यो नमः ॥  
(साधना सामर्थी न्योदयवर न. १५५)

### (५) सुलक्षणा पत्नी प्राप्ति के लिए

इस मंत्र के माध्यम से अपनी इच्छानुकूल पत्नि को प्राप्त किया जा सकता है, जो सुलक्षणा हो, लौन्ध्यवती हो, साक्षात् लक्ष्मी हो, ग्रिया हो, वरना सम्पूर्ण जीवन ही तनाव ग्रस्त हो जाता है, निम्न मंत्र का 'स्त्रिया माला' से

सबालाख मंत्र जप करें—

### मंत्र

॥ ॐ सुं हुं परम तत्त्वाय  
नारायणाय गुरुभ्यो नमः ॥

(साधना सामर्थी न्योदयवर न. १५५)

### (६) दारिद्र्य, दुखादि के नाश के लिए

इस मंत्र के माध्यम से जीवन में व्याप्त दुख, दैन्यता, दरिद्रता जैसे शत्रुओं का नाश कर जीवन में सुख, समृद्धि, सम्पन्नता प्राप्त करते हुए जीवन को उल्लासित व प्रफुल्लित बनाया जा सकता है। ऐश्वर्यवद्धिनी माला से निम्न मंत्र का सबालाख जप करें—

### मंत्र

॥ ॐ क्रीं परम तत्त्वाय  
नारायणाय गुरुभ्यो नमः ॥

(साधना सामर्थी न्योदयवर न. १५०)

### (७) समस्त साधनाओं में

#### सफलता प्राप्ति के लिए

इससे बड़ा और सर्वश्रेष्ठ उपाय नहीं है, जो कि बड़ी-बड़ी उच्चकोटि की साधनाओं में सफलता प्रदान करने में सक्षम हो, क्योंकि गुरु ही मात्र ऐसे व्यक्ति है, जो शुभ और लाभ के प्रदाता है और समस्त न्यूनताओं को समाप्त करने वाले हैं।

कैसी भी साधना हो या जीवन का कोई भी क्षेत्र हो, सफलता निश्चित प्राप्त होती ही है। निम्न मंत्र का 'साफल्य माला' से सबालाख मंत्र जप करें—

### मंत्र

॥ ॐ हलीं परम तत्त्वाय  
नारायणाय गुरुभ्यो नमः ॥

(साधना सामर्थी न्योदयवर न. १५०)

इन बी जाक्षरों से संपूर्ण गुरु मंत्र के सबालाख जप से निश्चित ही उपरोक्त लाभ साधक को प्राप्त होते हैं, यह एक संन्यासी के द्वारा बताये गये तेजस्वी प्रयोग है, जो अचूक है, पूर्ण लक्ष्य भेदन में समर्थ है। मंत्र जप पूरा होने पर माला नदी, तालाब या मंदिर में विसर्जित कर दें।



# ધારણાનુચ્છે શ્રીકૃષ્ણ

૪૦

ज्ञा के नाम से आज समग्र विश्व परिचित है, शायद ही कोई ऐसा व्यक्तित्व होना जो कृष्ण से परिचित न हो। जन-मानस में जो कृष्ण की वृत्ति है, वह उन्हें ईश्वर के रूप में प्रतिष्ठित करती है, और उनके ईश्वर होने से अथवा उनमें 'ईश्वरत्व' के होने से उन्कार भी नहीं किया जा सकता, क्योंकि इन कलाओं का आरम्भ ही अपने—आप में ईश्वर होने की पहचान है, किरण तो सोलह कला पूर्ण देव पुरुष है। यहां पर 'हे' शब्द का प्रयोग इसलिए किया गया है, क्योंकि विन्यु एवं अवतारी पुरुष सदैव मृत्यु से पर होते हैं। वे आज भी जन-मानस में जीवित हैं ही।

भिन्न भिन्न स्थानों पर आज भी 'कृष्णलीला', 'महापुरुष' का अथवा 'देव पुरुष' का सही ढंग से का आधो-जन किया जाता है और इन कार्यक्रमों के आकलन ही नहीं कर पाया। जो समाज वर्तमान तक अन्तर्गत कृष्ण के जीवन पर तथा उनके कार्यों पर प्रकाश कृष्ण को नहीं समझ पाया, वह समाज उनकी उपस्थिति के समय उन्हें कितना जान पाया होगा, डाला जाता है।

किन्तु सत्य को न स्वीकार करने की तो जैसे परम्परा

इसकी तो कल्पना ही की जा सकती है।



पूर्णस्प से समाहित थे, और उन्होंने अपने जीवन कला पूर्ण होकर 'पुरुषोत्तम' कहलाय। जहाँ उन्होंने प्रेम, त्याग, और श्रद्धा जैसे दुर्लभ विषयों को समाज के सामने रखा, वहीं जब समाज में घूट, असत्य, व्यभिचार और पाखंड का बोलबाला बढ़ गया, तो उस समय वे एक दूर प्रकार से कृष्ण ने दुर्जनीति, रणनीति तथा कशलता का प्रदर्शन किया, वह अपने—आप में आशचर्यजनक ही था।

कृष्णव युद्ध के मैदान में जो जान कृष्ण ने अर्जुन को प्रदान किया, वह अत्यन्त ही विशिष्ट तथा समाज की कुरातियों पर कड़ा प्रहार करने वाला है। उन्होंने अर्जुन का मोह भेग करते हुए कहा—

सुदामा जीवन पर्यन्त नहीं समझ पाये कि जिन्हें वे केवल मित्र ही समझते थे, वे कृष्ण एक दिव्य विभूति हैं, और उनके माता—पिता भी हमेशा उन्हें अपने पुत्र की ही दृष्टि से देखते रहे, तथा दुर्योधन ने उन्हें हमेशा अपना शत्रु ही समझा। इसमें कृष्ण का दोष नहीं कहा जा सकता, क्योंकि कृष्ण ने तो अपना सम्पूर्ण जीवन पूर्णता के साथ ही जीया कहीं वे 'माखन चोर' के रूप में प्रसिद्ध हुए तो कहीं 'प्रेम' शब्द को सही रूप में प्रस्तुत करते हुए दिखाई दिए।

कृष्ण के जीवन में राजनीति, संगीत जैसे विषय भी

‘जुलाई’ 2002 मंत्र-तत्र-यत्र विडान ‘30’

अशोच्यानन्वशोचस्त्वं प्रज्ञावादांश्च भाषते।

गतासूनगतासूनश्च नानुशोधन्ति पण्डिताः॥

हि अर्जुन ! तू कभी न शोक करने वाले व्यक्तियों के लिए शोक करता है, और अपने—आप को विद्रोह भी कहता है, परन्तु जो विद्रोह होते हैं, वे जो जीवित हैं, उनके लिए और जो जीवित नहीं है, उनके लिए भी, शोक नहीं करते। इस प्रकार जो जान कृष्ण ने अर्जुन को दिया, वह अपने—आप में प्रहारात्मक है और आधर्म का नाश करने वाला है।

कृष्ण ने अपने जीवन काल में शुद्धता, पवित्रता एवं

सत्यता  
असत्य  
वध क  
सदस्य  
से पारि  
कृष्ण  
नाना व  
का राज  
कृष्ण ने  
दिया।

कृष्ण  
क्योंकि  
को बढ़  
समाज  
कृष्ण ने  
जिस म  
कंठकाव  
का साह  
अपने ज

ट्रावल की छूटी मर्यादाओं को रोकित करने का साहस गृहण के बाद जोड़ दूरता पुरुष नहीं कर पाया, व्याख्या कि जिस मार्ग पर गृहण ले पालना चिकाया, वह अत्यंत छंगाकीर्ण तथा पश्चिमी मार्ग है, और उस पर चलने का साहस वर्तमान तष्ठ भी जोड़ नहीं कर पाया। उन्होंने अपने जीवन में सभी दोषों को उपर्युक्त रूप से छोड़ दिया, कर्मठता की, सत्यता, जो विशिष्ट स्थान प्रदान किया। गृहण जानार्दुन हेतु सांबीधन क्रिया के आश्रम में पहुंचे, तब उन्होंने अपना सर्वटष्ठ समर्पण कर जानार्जित किया, गुरु सेवा की, साधनाएं की, और साधना की बारीकियों व अध्यात्म के नये आनंद को जन-सामान्य को, कर्मठता को, सत्यता, को विशिष्ट स्थान प्रदान किया।

सत्यता पर ही अधिक बल दिया, अधर्म, व्यामिचार, असत्य के मार्ग पर चलने वाले प्रत्येक जीव को उन्होंने वध करने वायर ठहराया, फिर वह चाहे परिवार का सदस्य ही वहीं न हो, और सम्पूर्ण महाभारत एक प्रकार से परिवारिक युद्ध ही तो था।

कृष्ण ने स्वयं अपने माझा कंस का वध कर, अपने नाना को कारागार से मुक्त करवा कर उन्हें पुनः मधुरा का राज्य प्रदान किया, और निलिम भाव से रहते हुए कृष्ण ने धर्म की स्थापना कर सदैव सुकर्म को ही बढ़ावा दिया।

कृष्ण का यह स्वरूप समाज स्वीकार नहीं कर पाया

कृष्ण जानार्दुन हेतु सांबीधन क्रिया के आश्रम में पहुंचे, तब उन्होंने अपना सर्वस्व समर्पण कर जानार्जित किया, गुरु सेवा की, साधनाएं की, और साधना की बारीकियों व अध्यात्म के नये आनंद को जन-सामान्य के समक्ष प्रस्तुत किया। यह तो समय की विद्युत और समाज की अपनी ही एक विद्युत है, जो कृष्ण की उपस्थिति का सही मूल्यांकन न कर पाया।

त्रीमद् भगवत् गीता में श्रीकृष्णने अनुन को जिस

की भावना से जग्यत किया, कृष्ण द्वारा दिया गया



दिवस है, और मनवान् श्रीकृष्ण को पोड़ाकला पूर्ण है।

व्यक्तित्व माना जाता है। जो व्यक्तित्व सोतह कला पूर्ण हो वह केवल एक व्यक्ति ही नहीं, एक समाज ही नहीं,

अपितु युग को परिवर्तीत करने की सामर्थ्य प्राप्त कर लेता है, और ऐसे व्यक्तित्व के चिन्तन, विचार, और

धारणा से पूरा जन समुदाय अपने आप में प्रभावित होने लगता है।

ये सोतह कलाएँ निम्न हैं—

१. वाक् सिद्धि—

जो भी वचन बोले जाए वे व्यवहार में पूर्ण हो, वह वचन कभी व्यर्थ न जाए, प्रत्येक शब्द का महत्वपूर्ण अर्थ हो, वाक्सिद्धि युक्त व्यक्ति में श्राप और वरदान

देने की समता होती है।

२. विद्यदृष्टि—

विद्यदृष्टि का तात्पर्य यह है कि जिस व्यक्ति के सम्बन्ध में भी वित्त किया जाय, उसका भूत, भविष्य और वर्तमान एक इम सामने आ जाय, आगे क्या कार्य करना है, कौन सी घटनाएँ घटित होने वाली है, इसका ज्ञान होने पर व्यक्ति विद्यदृष्टियुक्त महापुरुष बन जाता है।

३. प्रज्ञा सिद्धि— प्रज्ञा का तात्पर्य यह है कि मेधा अर्थात् स्मरणशक्ति, बुद्धि, ज्ञान इत्यादि। ज्ञान के सम्बन्धित सारे विषयों को जो अपनी बुद्धि में समेट लेता है वह प्रज्ञावान् कहलाता है। जीवन के प्रत्येक क्षेत्र से सम्बन्धित ज्ञान के साथ-साथ भीतर एक चेतनापूर्ज जाग्रत रहता

४. दूरश्रवण— इसका तात्पर्य यह है कि भूतकाल में घटित कोई भी घटना, वातलाप को पुनः सुनने की असम्भवता।

५. जलगमन— यह सिद्धि निश्चय ही महत्वपूर्ण है, इस सिद्धि को प्राप्त योगी जल, नदी, समुद्र पर इस तरह विचरण करता है भानों धरती पर गमन कर रहा हो।

६. वायुगमन— इसका तात्पर्य है अपने शरीर को सूक्ष्मरूप में परिवर्तित कर एक लोक से दूसरे लोक में गमन कर सकता है, एक स्थान से दूसरे स्थान पर सहज तत्काल जा सकता है।

७.	में परि
८.	जिससे
९.	जाता है
१०.	अपने
११.	अलग
१२.	पर वि
१३.	उन्हें पू
१४.	जा सक
१५.	परिवत
१६.	लेकिन
१७.	और ये
१८.	को अप
१९.	व्यक्ति
२०.	अनुकू
२१.	व्यक्ति-
२२.	देने की
२३.	समग्रान्
२४.	पराक्रम
२५.	गुण वा
२६.	उन्होंने
२७.	केम क
२८.	कर आ
२९.	गुण हो
३०.	जैसे—

७. अदृश्यकरण - अपने म्यूलशरीर को सूक्ष्मरूप इन्द्रिय। इन्हीं गुणों के कारण वह सारे विश्व में श्रेष्ठतम् बने परिवर्तित कर अपने आप को अदृश्य कर देना। व अद्वितीय माना जाता है, और इसी प्रकार वह विशिष्ट जिससे स्वयं की इच्छाबिना दूसरा उसे देख ही नहीं कार्य करके संसार में लोकहित एवं जनकल्याण करता पाता है।

८. विधोका - इसका तात्पर्य है कि अनेक सपों में अपने आपको परिवर्तित कर लेना। एक स्थान पर अलग रूप है, दूसरे स्थान पर अलग रूप है।

९. देवक्रियानुदर्शन - इस कला का पूर्ण ज्ञान होने पर विभिन्न देवताओं का साहचर्य प्राप्त कर सकता है। उन्हें पूर्ण सप से अनुकूल बना कर उचित सहयोग लिया जा सकता है।

१०. कायाकल्प - कायाकल्प का तात्पर्य है शरीर परिवर्तन। समय के प्रभाव से वह जर्जर हो जाती है, तेकिन कायाकल्प कला से युक्त व्यक्ति सदैव रोगमुक्त और यीवनवान ही बना रहता है।

११. सम्मोहन - सम्मोहन का तात्पर्य है कि सभी को अपने अनुकूल बनाने कि क्रिया। इस कला से पूर्ण व्यक्ति मनुष्य तो क्या, पशु-पक्षी, प्रकृति को भी अपने अनुकूल बना लेता है।

१२. गुरुत्व - गुरुत्व का तात्पर्य है गरिमावान। जिस व्यक्ति में गरिमा होती है, ज्ञान का भंडार होता है, और देने की क्षमता होती है, उसे गुरु कहा जाता है। और भगवान कृष्ण को तो जगतगुरु कहा गया है।

१३. पूर्ण पुरुषत्व - इसका तात्पर्य है अद्वितीय पराक्रम और निःउर, एवं बलवान होना। श्रीकृष्ण में यह गुण बाल्यकाल से ही विद्यमान था। जिस के कारण से उन्होंने ब्रह्मभूमि में राक्षसों का संहार किया। तदन्तर कंस का संशर करते हुए पूरे जीवन शत्रुओं का संहार कर आर्यभूमि में पुनः धर्म की स्थापना की।

१४. सर्वगुण सम्पन्न - जितने सभी संसार में उदात्त गुण होते हैं, सभी कुछ उस व्यक्ति में समाहित होते हैं, जैसे - दया, दृढ़ता, प्रखरता, ओज, बल, तेजस्विता

इन्हीं गुणों के कारण वह सारे विश्व में श्रेष्ठतम् बने अद्वितीय माना जाता है, और इसी प्रकार वह विशिष्ट जिससे स्वयं की इच्छाबिना दूसरा उसे देख ही नहीं कार्य करके संसार में लोकहित एवं जनकल्याण करता है।

१५. इच्छा मृत्यु - इन कलाओं से पूर्ण व्यक्ति कालजनी होता है, काल का उस पर किसी प्रकार का कोई बन्धन नहीं रहता, वह जब चाहे अपने शरीर का त्याग कर नया शरीर भारण कर सकता है।

१६. अनूर्ध्व - अनूर्ध्व का अर्थ है - जिस पर भूख-व्यास, सर्वी-गर्भी और भावना-दुर्भावना का कोई प्रभाव न हो।

यह समस्त संसार द्वन्द्व धर्मों ने आपूरित है, जितने भी यहां प्राणी हैं, वे सभी इन द्वन्द्व धर्मों के बर्दीभूत हैं, किन्तु इस कला से पूर्ण व्यक्ति प्रकृति के इन बन्धनों से उपर उठा हुआ होता है।

भगवान श्रीकृष्ण में यह सभी सोलह कलाएं पूर्णसप से विद्यमान थीं और भौतिकता एवं आध्यात्मिकता का पूर्ण संयोग उनके पूरे जीवन में रहा। इसी कारण वे जनमानस के आदर्श बन सके। और ऐसे ही भवानुरुषों की गाथा का गुणगान करके ही, उनके आदर्शों को जीवन में उतार कर, उनकी पूजा आराधना कर, जीवन धन्य बनाया जा सकता है।

जैसा कि मैंने उपर लिखा था कि श्रीकृष्ण को भगवान के साथ-साथ जगतगुरु भी कहा गया है, और गुरु का तात्पर्य है कि देने वाला। कृष्ण जन्माष्टमी के अवसर पर केवल यक्षि ही नहीं, पूर्ण विद्यि विद्यान सहित साधना सम्पन्न कर, कृष्ण के जीवनरचित और गुणों को भीतर उतार जाय, तो कोई कारण नहीं कि व्यक्ति जीवन में असफल हो, आवश्यकता है केवल दृढ़ निश्चय की, संकल्प की, विश्वास की, श्रद्धा की उन चारों के साथ साधना करने पर साधना सफल होती ही है।

मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान परिवेक आपके परिवार का अभिनन्दन है। इसके साथना नक्क सत्य को समाज के सभी सतरों में समाज लम्हे से ल्वोकल किया गया है, क्योंकि इसमें प्राचीक वर्गों की समाजगतों का हल सरल और सहज रूप में समाहित है।

# वार्षिक विज्ञापन

इस परिवा की वार्षिक सदस्यता को प्राप्त कर आप पार्वने अद्वितीय और विशिष्ट उपहार

## वार्षिक विज्ञापन

जिसे प्राप्त करना तरीका बहुमत है, जब जीवन के धूमध दक्ष लोकों पुंजीमुद्रा हो। इस माला को प्राप्त करना उत्तम की लकड़ी कोये भावय हो जीव ले जनाने जैवा है।

यह प्रायः देवता व्या है, कि बेहुद प्रयात के बाद भी व्यक्ति अपने किंवद्दि विनोष लक्ष्य को प्राप्त नहीं कर पाता है - वे लक्ष्य व्यापाक में विद्वि का हो सकता है, आद्यनार्दि में विद्वि का हो सकता है।

आपके प्रयातों के बाद भी लक्ष्यता यदि लाघुती रह जाती है, तो इसका काबण पूर्ण जन्म कृत वोषों में लिपा होता है।

वर्ष लकड़ी ही प्रधान है, परन्तु भावय को भी लकड़ा लहीं जा सकता है। भावय यदि जारी रहे, तो व्यक्ति उत्प्र प्रयातों में लापना अभीष्ट प्राप्त कर सकता है, दीपावली की बारि में लिख की नई कला माला का प्रभाव छलगा लीब होता है, कि व्यक्ति अपनी लाफलता पर मुश्य हृद लिजा नहीं रह पाता।

**यत्र स्थापन विधि -** किसी भी दिवस को प्रातः काला 5 ज्ञे 6 बजे के सद्या यंत्र को अपने पूजा कथान में चावल की ढेंबी लगाकर उस पर स्थापित करें तथा मंत्र ॐ ही भावयोदयं हों ॐ का 105 बार उच्चारण करें। पूरे भाव तक नित्य देश करें, तत्प्रदावात् यंत्र को किसी संदेश में चढ़ा दें।

जह पुरुष उपहार तो आप परिवा का वार्षिक सदस्य रूपने कियी पित्र, रिश्वारथा स्वजन को बनाकर ही प्राप्त कर सकते हैं। यदि आप परेका के सदस्य नहीं हैं, तो आप स्वयं भी सदस्य बनाकर चह उपहार प्राप्त कर सकते हैं। आप परिवा में प्रकाशित पेस्टकाठ न्पर्व जलने में शक्ति रुपार पाप मेज रे, गोप कर्य हम सदय करेंगे। *Fill up and send post card no. 4 to us at :*

**वार्षिक सदस्यता शुल्क - 195/- डाक खर्च अतिरिक्त 40/- Annual Subscription 195/-+40/-postage**

संस्कृतः

मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान, डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाईकोर्ट कलोनी, जोधपुर - 342001, (राजस्थान)

Mantra-Tantra-Yantra Vigyan, Dr. Shrimali Marg, High Court Colony, Jodhpur-342001, (Raj.), India

फोन (Phone) - 0291-432209, टेलीफैक्स (Teletax) - 0291-432010

यदि आप सदस्य करना चाहते हैं तो सचिवित समझी करी से प्राप्त कर सकते हैं अथवा आप जो पुरुष करता है 0291-432209 या टेलीफैक्स 0291-432010  
एवं उपना सामग्री आदेश लिखवा दे, तुम आपको ये पी. से सामग्री भेज देंगे, बनारस अधिक भेजने की जरूरत नहीं है।

दि. ३१-८-२००२

# कृष्ण ज्ञान मासिकी

## खुल्जोंना



जन्माष्टमी के निर्मित भगवान् कृष्ण के विशिष्ट पूजन की सभी सामग्री एकत्र कर लीं। रात्रि या प्रातः जब भी आप पूजन करना चाहें, स्नान करके पूजा कक्ष में पैदला या सफेद आसन बिछाकर उत्तर या पूर्व दिशा की ओर मुख करके बैठें। अपने सामने चौकों के ऊपर श्वेत वस्त्र बिछा दें, उस पर भगवान् कृष्ण का चित्र अथवा उनकी प्रतिमा स्थापित करें। आपसी बाई और धूप और दीप लला लें। इसके बाद हाथ जोड़कर भगवान् गणपति का स्मरण करें—

प्रार्थना—

सुमुखश्चैकदन्तश्च कपिलो गनकर्णकः ।  
लम्बोदरश्च विकटो विघ्ननाशो विनायकः ॥  
धूमकेतुर्गणाध्यक्षो भालचन्द्रो गजाननः ।  
द्वादशैतानि नामानि यः पठेच्छुणुयादपि ॥  
विद्यारम्भे विवाहे च प्रदेशे निर्गमे तथा ।  
संग्रामे यंकटे चैव विघ्नस्तस्य न जायते ॥

ॐ 'जुलाई' 2002 मंत्र-तत्र चत्र विडान '37'



जल को भूमि में छोड़ दे।

### कलश पूजा

पंचपात्र में जल भरकर अपनी दायीं और स्थापित करें, उसमें वरुण देवता का आवाहन करें—

सर्वे समुद्रः सरितस्तीथानि जलवा नवः ।  
आयान्तु देव पूजार्थ दुरितक्षयकारकाः ।  
इसके बाद 'वं वरुणाय नमः' मंत्र बोलते हुए गन्ध, अक्षत व पुष्प को कलश में डाल कर तीर्थों का आवाहन करें—

गंगे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति ।  
नमदि सिंधु कावेरि जलऽस्मिन्  
सत्रिधि कुरु ॥

प्रसन्नो भव । वरदो भव । अनया पूजया  
वरुणाद्यावाहिता देवता प्रीयन्ता नमः ॥

### पवित्रीकरण

इसके बाद पंचपात्र के जल को आचमनी से बाए हाथ में लेकर, वायें हाथ से अपने ऊपर छिड़कते हुए निम्न मंत्र का उच्चारण करें—

ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वास्थां  
गतोऽपि वा ।

यः स्मरेत् पुण्डरीकाक्षं सः

बाह्याभ्यन्तरः शुचिः ॥ गुरु पूजन

दोनों हाथ जोड़कर गुरुदेव का ध्यान करें—

गुरुबह्या गुरुविष्णुः गुरुर्वेदो महेश्वरः ।

गुरुः साक्षात् पर ब्रह्म तस्मै श्री गुरवे नमः ॥

इसके बाद गन्ध, अक्षत, पुष्प तथा धूप दीप से पंचोपचार पूजन करें। फिर सामने चौकी पर भगवान् कृष्ण का सुन्दर चित्र (प्रतिमा विघ्न) स्थापित करें तथा श्रोद्धरोदार पूजन करें—

### ध्यान

वंशी विभूषित करान्न व नील वाभात,  
पीताम्बरादरुण विम्ब फलाधरोषात् ।

### संकल्प

दाहिने हाथ में जल, अक्षत, पुष्प तथा कुमकुम लें—  
ॐ विष्णुविष्णुविष्णुः श्रीमद्भवतो महापुरुषस्य  
विष्णोराजया प्रवर्तमानस्य अद्य श्री ब्रह्मणो द्वितीय  
परार्थे श्वेतवाराह कल्पे वैवस्वतमन्वन्तरे  
अष्टाविंशतितमे कलियुगे कलिप्रथमचरणे जम्बूद्वीपे  
भारतवर्षे अमुक मासे (महीने का नाम) अमुक  
वासरे (दिन का नाम) अमुक तिथी (तिथि बोलें)  
अमुक गोत्रीयः (गोत्र बोलें) अमुक शर्माऽहं (अपना  
नाम बोलें) अद्य भगवतो कृष्णस्य प्रात्यर्थं यथा  
मिलितोपचारैः पूजनं करिष्ये ।

पूर्णेन्दु सुन्दर मुखादर विम्ब नेत्रान्,  
कृष्णात् परं किमपि तत्त्वमहं न जाने ॥  
श्रीकृष्णाय नमः ध्यानं समर्पयामि ।

### आसन

पुष्प लेकर किसी आली में आसन के सप में  
स्थापित कर लें और उस पर श्रीकृष्ण विग्रह स्थापित कर  
निम्न मंत्र का उच्चारण करें—

रथ्यं सुशोभनं दिव्यं सर्वं समन्वितं,  
आसनं च मया दत्तं गृहणं परमेश्वर।  
श्रीकृष्णाय नमः आसनं समर्पयामि ।

### पाद

दो आचमनी जल श्रीकृष्ण विग्रह पर चढ़ा दें—  
गंगोदकं निर्मलं च सर्वं सौगन्ध्यं संयुतम्,  
पाद प्रक्षालनार्थाय दत्तं ते प्रतिगृह्यताम्।  
श्रीकृष्णाय नमः पादं समर्पयामि ।

### अर्ध

किसी पात्र में जल लेकर, उसमें कुमकुम तथा  
अक्षत मिला कर अर्ध प्रवान करें—  
अर्धं गृहणं देवेश गन्धं पुष्पाक्षतैः सह,  
करुणाकर मे देव गृहणाऽर्धं नमोऽस्तुते ।  
श्रीकृष्णाय नमः अर्धं समर्पयामि ।

### आपमनीय

आचमनी से तीन बार जल विग्रह पर चढ़ाते हुए निम्न मंत्र  
का उच्चारण करें—

सर्वं तीर्थं समानीतं सुगन्धिं निर्मलं जलं,  
आचम्यता मया दत्तं गृहीत्वा परमेश्वरं।  
श्रीकृष्णाय नमः आचमनीयं  
समर्पयामि ।

### मधुपर्क

कांसे, चांदी अथवा तांबे के पात्र में मधु, धूत, दधि मिलाकर  
विग्रह पर चढ़ावे—

इदं मधुपर्कं श्रीकृष्णाय निवेदयामि नमः ।

### स्नान

आचमनी से जल चढ़ाते हुए निम्न मंत्र उच्चरित करें—  
वृन्दावन विद्वारण श्रान्ते विश्रान्ति कारकं।  
चन्द्रपुष्करं पानीयं गृहणं पुरुषोत्तम ॥  
श्रीकृष्णाय नमः स्नानं समर्पयामि ।

### दुध स्नान

ॐ पृथिव्यमप्यज्ञोषधीषु पर्योदिव्यन्तरिक्षे  
पर्योधा: पर्यस्वतीः प्रदिशः सन्तुमहय्यम्।  
श्रीकृष्णाय नमः दुधं स्नानं समर्पयामि ।

### दधि स्नान

ॐ वधिक्रावणो अकारिषं निष्ठोरश्वस्य वाजिनः।  
सुरभि नो मुखाकरत् प्रण आयू(ग) पितारिषत्  
श्रीकृष्णाय नमः दधि स्नानं समर्पयामि ।

### धूत स्नान

ॐ धूतं मिमिक्षे धूतमस्य योनिधृति शितो धूतमस्य धाम।  
अनुष्यधमावह माडयस्व इवाह कृतं वृषभवक्षि हव्यम् ॥  
श्रीकृष्णाय नमः धूतं स्नानं समर्पयामि ।

### मधुरस्त्राव

ॐ मधुदाता व्रतायते मधुक्षरन्ति सिन्धवः।  
माधवीनः सन्त्वोषधीः। मधुनक्तमुतोषसो  
मधुमत्पाथिव(ग) रजः। मधु-द्योरस्तुनः पिता।  
मधुमातो वनस्पतिर्मधुमां अस्तु सूर्यो माधवीगणी भक्तु नमः।  
श्रीकृष्णाय नमः मधु स्नानं समर्पयामि ।

### शर्करा स्नान

ॐ अपा(ग) रसमुद्रयस (ग) सर्वसन्त(ग)  
समाहितम्। अपा(ग) रसस्य यो रसस्तं वो  
गृह्णाम्यनमसुपवामगृहीतोसीन्द्राय त्वा जुष्टं  
गृह्णाम्येषते योनिरिन्द्राय त्वा जुष्टतमम्।  
श्रीकृष्णाय नमः शर्करा स्नानं समर्पयामि ।

### पंचामृत स्नान

ॐ पंच नधः सरस्वतीभिर्यन्ति सस्त्रोतसः।  
सरस्वती तु पंचधा सो देशोऽभवत्सरित्।  
श्रीकृष्णाय नमः पंचामृत स्नानं समर्पयामि ।

इसके बाद भगवान् कृष्ण के विघ्रह तस्वीर को शुद्ध जल से स्नान कराकर, पौछलें। निम्न उपकरणों को अब विघ्रह पर चढ़ावें।

### परम्परा

निम्न मंत्र का उच्चारण करते हुए उत्तम कोटि का पीला वस्त्र तथा उत्तरीय वस्त्र भगवान् को पहना दें तथा उनके स्थापन निमित्त जो आसन है, उस पर स्थापित करें—

इदं परिधेय वस्त्रं उत्तरीय वस्त्रं च  
श्रीकृष्णाय निवेदयामि नमः।

### आभूषण

डार, मुकुट-मणि, कड़े आदि गहने भगवान् को पहनाते हुए इस मंत्र को बोलें—

इमानि भूषणानि श्रीकृष्णाय निवेदयामि नमः।

### ब्रह्म

केशर, कपूर मिश्रित चन्दन लेकर भगवान् कृष्ण के मस्तक पर लगावें—

इमं गन्धं श्रीकृष्णाय निवेदयामि नमः।

### अश्रात

हल्दी या कुमकुम से रंगे चावल विघ्रह पर चढ़ाएं—

अक्षताश्च सूरश्वेष कुंकुमाक्तः सुशोभिता:

मया निवेदिता भक्तत्या गृहाण परमेश्वर।

श्रीकृष्णाय नमः अक्षतान् समर्पयामि।

### पुष्पहार

सुगन्धित नाना प्रकार के पुष्प तथा पुष्प माला विघ्रह पर चढ़ावें और निम्न मंत्र का उच्चारण करें—

इमानि पुष्पाति श्रीकृष्णाय निवेदयामि नमः।

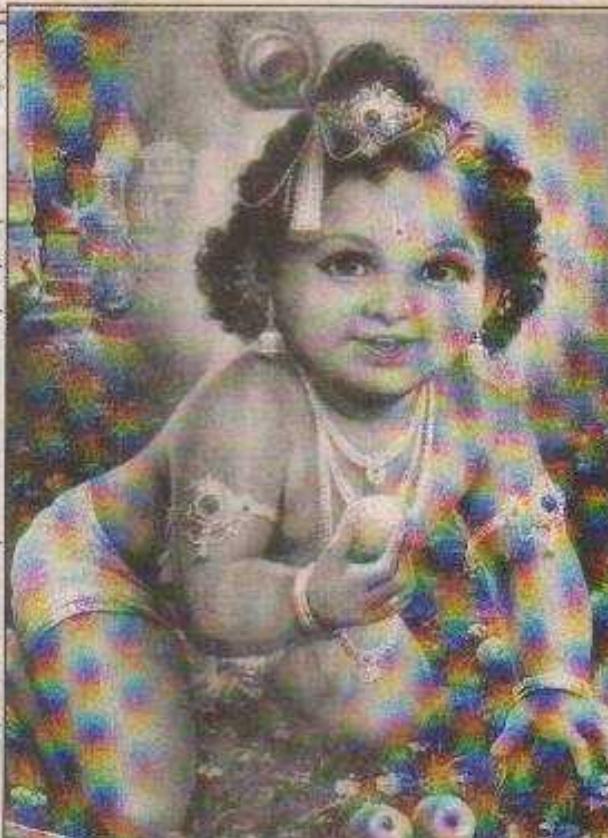
### तुलसी दल

तुलसी दल पर चन्दन लगाकर निम्न मंत्र का उच्चारण करते हुए चढ़ाएं—

इदं सचन्दनं तुलसीदलं

श्रीकृष्णाय निवेदयामि नमः।

### धूप



निम्न मंत्र बोलते हुए धूप अर्पण करें—

इमं धूपं श्रीकृष्णाय निवेदयामि नमः।

### दीप

श्रीकृष्ण को दीप दिखाएं—

इमं दीपं श्रीकृष्णाय निवेदयामि नमः।

### नैवेद्य

स्वच्छ धाती में भोज्य पदार्थ सजाकर भगवान् के सामने रखें, साथ में एक गिलास पानी भी रखें और निम्न मंत्र भी बोलें—

ॐ कर्णी कृष्णाय गोविन्दाय

गोपीजन वल्लभाय स्वाहा।

इस मंत्र का उच्चारण करके निम्न मंत्र बोलें—

इदं नैवेद्यं श्रीकृष्णाय निवेदयामि नमः।

इसके बाद इन मंत्रों से पांच बार आचमन करायें—

ॐ प्राणाय स्वाहा। ॐ अपानाय स्वाहा।

ॐ व्यानाय स्वाहा । ॐ उदानाय स्वाहा ।

ॐ समानाय स्वाहा ।

कल

अनेक प्रकार के ताजे और मीठे फल याली में सजाकर  
भगवान को अपितृत करें—

छहं फलं मया देव स्थापितं पुरस्तस्तवं  
तेन मे सफला वापि भवजन्मनि जन्मनि ।

ताम्बूल

मुख शुद्धि के लिए ताम्बूल भगवान को अपितृत करें—  
एतत ताम्बूलं श्रीकृष्णाय निवेदयामि नमः ।

पुष्पांजलि

आरती के बाद फिर दोनों हाथ में पुष्प लेकर भगवान  
कृष्ण को अपितृत करें—

नाना सुगन्धं पुष्पाणि वथा कालोदभवानि च,  
पुष्पांजलि मया दत्ता गृहाण परमेश्वर ।

श्रीकृष्णाय पुष्पांजलि समर्पयामि नमः ।

नमस्कार

दोनों हाथ जोड़ें—

कृष्णाय वासुदेवाय हरये परमात्मने ।

प्रणतक्षेशनाशाय गोविन्दाय नमो नमः ॥

श्रीकृष्णाय नमः नमस्कारोमि ।

इसके बाद निम्न मंत्र का तीन माला किसी श्री माला  
से मंत्र नप करें—

॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

विशेषार्थ

आचमनी में अक्षत, पुष्प एवं कुमकुम लेकर निम्न  
सन्दर्भ को बोलते हुए भगवान को अपितृत करें—

अनया पूजया श्रीकृष्णं परमात्मा प्रीयन्ताम् ।

ॐ तत्सद् ब्रह्माणपणमस्तु ।

इसके पश्चात भगवान श्रीकृष्ण की आरती सम्पन्न  
करे। इसके बाद अपने समस्त स्वजनों के साथ प्रसाद  
ग्रहण करें।

आरती कुंज विहारी की ।

श्री गिरधर कृष्ण मुखारि की ।

आरती कुंज विहारी की ।

श्री गिरधर कृष्ण मुखारि की ।

गले में बैजनन्ती माला ।

बजावे मुखलि मधुर बाला ।

श्रवन में कुण्डल छोकला ।

नद के आनन्द नन्दलाला ।

उणन स्यम अंग कर्ति वाला ।

राधिक बन्दूमदल आली ।

लतन में ठोढ़ बनमाली ।

आमर सो अतका ।

करन्त्री तिलक चढ़ सी घलक ।

ललित छवि श्यामा प्यारी की ।

श्री गिरधर ।

कनकगय मोर मुखूट बिलखे ।

देवता दरसन को तरसे ।

गङ्गासो सुमन रासि बरसउ ।

बजे मुर्चंग ।

मधुर मिरदंग ज्वालनी संग ।

अतुल रति गोप कुमारी की ॥

श्री गिरधर ।

जहां ते प्रकट भई गंगा ।

स्वकूल मल हारिणी श्रीगंगा ।

समर्ण ते होत मोहगंगा ।

बसी रिव शीस जट केबीचा ।

हरे अध कीच । दरन छवि श्री बनवारी की ।

श्री गिरधर ।

चमकती उज्जवल तटरेणु ।

बज रही बृन्दावन बेन ।

चबूत्रिसि गोपि ज्वाल धेनु ।

हंसत मृदु मव चाँदनी चंद ।

कटल भव फलत । सुन दीन दुखारी की ।

श्री गिरधर ।

आरती कुंज विहारी की ।

श्री गिरधर कृष्ण मुखारि की ।



॥ ॐ हर्षी एं कली भाग्योदयं ॐ नमः ॥  
जप समाप्त होने पर भद्रबाहु को रात्रि में ही किसी बुक  
की जड़ में डाल दें। (न्यौछावर = 100/-)

\* दिनांक 11-8-2002 रविवार, तृतीया को रवि योग एवं  
सिद्ध योग बन रहा है इस दिन आप कामना पूर्ति के लिए  
किसी पात्र में अष्टग्रन्थ से अष्टकमल बनाएं उस पर  
निखिलेश्वरानन्द गुटिका को स्थापित कर पूष्प, कुकुम,  
अक्षत ये पूजन कर धी का दीपक लगाकर अपनी कामना  
बोलाकर निम्न मंत्र का जप प्रातः 7.10 से 8.15 तक करें -  
- ॥ॐ ही मनोवाचितं सिद्धये ॐ॥

जप समाप्त होने पर निखिलेश्वरानन्द गुटिका को जल में  
प्रवाहित कर दें। (न्यौछावर = 100/-)

\*\*\*\*\*

\* दिनांक 14-8-2002 बुधवार, धी को विपुलकर योग बन  
रहा है इस दिन आप कार्य सिद्धि के लिए निम्न प्रयोग  
सम्पन्न करें लाल बस्त्र में हल्दी से विक्रोण का निर्माण कर  
उसमें मनोभव की नाल रखकर निम्न मंत्र का जप । घटे  
तक करें -

ॐ हूली कार्य सिद्धि ॐ फट

ॐ ३४

प्रयोग समाप्त होने पर मनोभव को वक्षिण दिशा में फेंक  
दें। (न्यौछावर = 80/-)

\* दिनांक 15-8-2002 गुरुवार, अष्टमी को रवियोग बन  
रहा है इस दिन आप समस्त शत्रुओं के सर्वनाश के लिए  
निम्न प्रयोग सम्पन्न करें लाल बस्त्र में कुकुम ये शत्रुओं का  
नाम लिखकर उस पर लगलामरुर्वी गुटिका को स्थापित  
पीले पुष्प छढ़ाकर एक हल्दी की गाढ़ उस गुटिका पर  
रखकर पीली सरसों उस पर निम्न मंत्र बोलते हुए एक घटे  
तक करें -

॥ ॐ हूली बगलामुखी सर्वशत्रुनाशय हूली ॐ फट ॥  
प्रयोग समाप्त होने पर समस्त सामग्री को लाल कपड़े रहित  
आपने सिर पर से तीन बार उतारते हुए नदी में विसर्जित कर  
दें। (न्यौछावर = 100/-)

\*\*\*\*\*

\* दिनांक 18-8-2002 रविवार, पवित्रा एकादशी को सर्वार्थ  
सिद्ध योग बन रहा है इस दिन आप ब्राधा निवारण के लिए  
यह प्रयोग अवश्य ही करें। किसी पात्र में काजल से तीन

विनियोग लगाकर त्रिनेत्रा गुटिका को स्थापित कर निम्न  
मंत्र का जप प्रातः 7.10 से 8.15 तक करें -  
॥ॐ कली कली ब्राधा निवारणय कली कली ॐ फट॥  
प्रयोग समाप्त होने पर त्रिनेत्रा को चौराहे पर डाल कर आ  
जाए। (न्यौछावर = 75/-)

\*\*\*\*\*

\* दिनांक 24-8-2002 शनिवार, छिनीस को विपुलकर योग  
बन रहा है इस दिन आप यह ब्राध शांति के लिए यह प्रयोग  
अवश्य ही सम्पन्न करें। शनि मुद्रिका को स्थापित कर उसका  
पूजन कर तेल को पात्र दीपक जलाकर उसके समझ निम्न  
मंत्र का जप । घटे तक करें -

॥ॐ श शनैश्वराय नमो नमः ॥

प्रयोग समाप्त होने पर शनि मुद्रिका को किसी मंदिर में  
चढ़ा दें। (न्यौछावर = 120/-)

\*\*\*\*\*

\* दिनांक 27-8-2002 मंगलवार, चतुर्वी को अमृत सिद्ध  
योग एवं सर्वार्थ सिद्ध योग बन रहा है इस दिन आप रोग  
निवारण साधना सम्पन्न कर सकते हैं। किसी पात्र में रोग  
निवारण गुटिका को स्थापित कर उसके समझ तोन तेल के  
दीपक जलाकर निम्न मंत्र का जप । घटे तक करें -

॥ॐ सद्रायै रोगनाशय फट॥

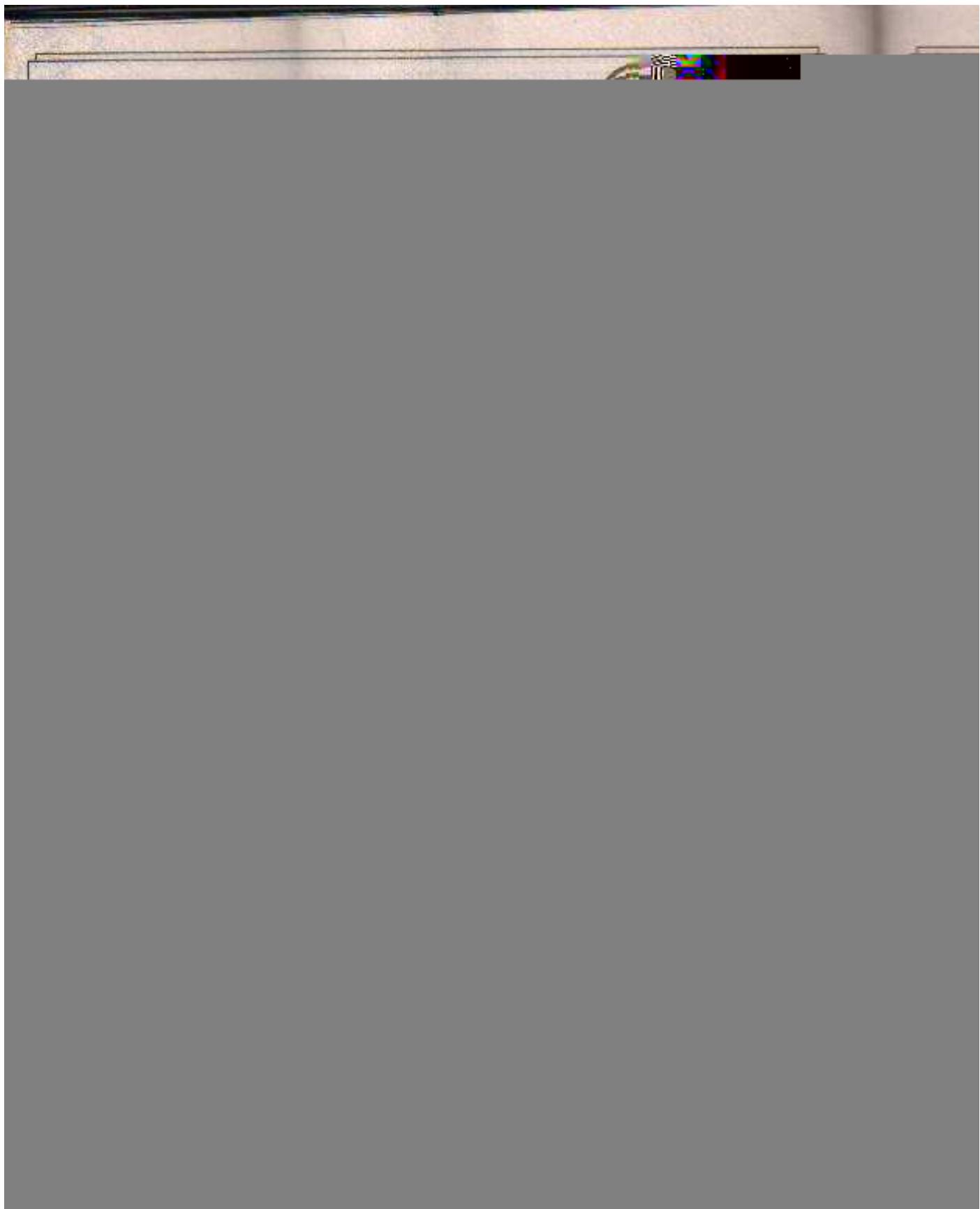
प्रयोग समाप्त होने पर रोग निवारण गुटिका को अपने  
ऊपर से सात बार उतारकर वक्षिण दिशा में फेंक दें।  
(न्यौछावर = 80/-)

\*\*\*\*\*

\* दिनांक 31-8-2002 शनिवार, अष्टमी को अमृत सिद्ध  
योग एवं सर्वार्थ सिद्ध योग बन रहा है इस दिन आप अपने  
परिवार को सुख शांति एवं धन प्राप्ति के लिए यह प्रयोग  
अवश्य ही सम्पन्न करें। अपने पूजा स्थान में पीला आसन  
बिछाकर उस पर विशकि लक्ष्मी गुटिका को स्थापित कर  
उसका पूजन कुकुम, अक्षत एवं लाल पुष्प छढ़ाकर करें तथा  
धी का दीपक जलाकर उसके समझ निम्न मंत्र का जप प्रातः  
7.15 से 8.10 मिनट तक करें -

॥ॐ श्रीं लक्ष्मी सर्व मनोकामना सिद्धि नमो नमः ॥

प्रयोग समाप्त होने पर विशकि लक्ष्मी गुटिका को  
मंदिर में चढ़ाकर कर जाए। (न्यौछावर = 120/-)



कजा ने वचित रह जाते हों। एक बार शरीर के अन्दर उत्तर कल देखो, तब बार अपने आप को मुला कर ले देखो, अपने हृदय में स्थित और स्वल्प को देखो। वहीं तो तुम्हें आनन्द का अमृत स्रोत मिलेगा, वही जप्तुव आनन्द की प्राप्ति हो जाकरी।

\* और जिस दिन तुम ब्राह्मी किया कलाप करते हुए भी न करने की कला जान जाओगे, सब कुछ देखते हुए भी न देखने की किया जान जाओगे और जिस दिन तुम सब सुनते हुए भी न सुनने की किया सीख जाओगे, उस दिन से तुम ध्यान की गहराई में उत्तर भक्तोंगे, आत्मलीन हो सकोगे, नमाधिकृत हो सकोगे; और जब ब्राह्मर के विषय, कोष, भोग, लोभ, काम, मक के वेग पर नियंत्रण पा लोगे, और जिष में रहते हुए भी समान रहने का भेद जान लोगे, तब तुम सही माध्यन में मेरे शिष्य हो।

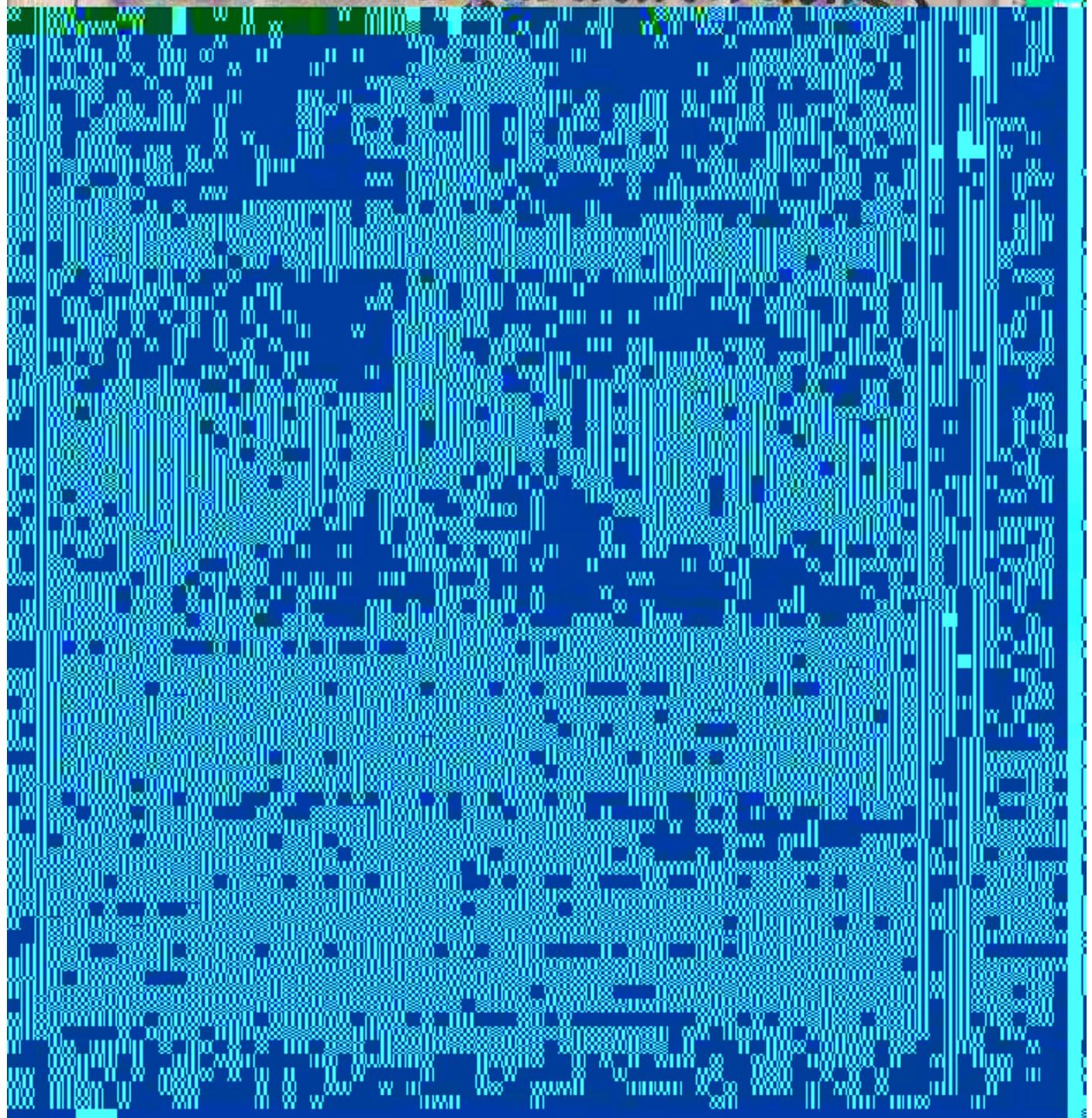
\* हो सकता है नुफान आया हो, हो सकता है तेज आंशी में तुम्हारे लो बुझने लगी हो, जिसे कभी मैंने उपने ग्राणी से तेल से सीध कर जाया है। तुम्हें इस लो को बुझने नहीं देना है, इस आग को शात नहीं होने देना है, इस झांडावाल में उत्तम नहीं जाना है। उपने वृत के वृतियों पर विजय ग्राम करना है चाहे कभी भी परिस्थितियों आए, सभी में शांत बने रहना है और येरी उपस्थिति का तुम्हें हर वक्तभान हो सकेगा क्योंकि मैं तो हर वक्त तुम्हारे पास हूँ तो हूँ।

\* और जिस दिन तुम शुद्ध धाव से सप्तरण धाव से निर्मल चित विशुद्ध प्रेम में भीगते हुए मुह के चश्मां में अपने को सीप दोगे, उसी दिन आनन्द के सामर में इब जाओगे, उस स्थिति को ग्राम हो जाओगे, उस परमानन्द का रमास्वादन कर सकोगे जिसके बारे में योगी जन नेति नेति कहते हैं।

गायत्री सिद्धि दिवस

दि. २२-८-२००२

# जीवन को तेजयक तेजरिप बनाईए



ब्रह्माजी ने स्वयं इस कठिन गायत्री साधना को सम्पन्न कर, उससे शक्ति उपासित की और वे सृष्टि-निर्माण में समर्थ हुए।

गायत्री देवी का वर्ण शुक्ल, मुख, अग्नि तथा ऋषि विश्वामित्र हैं, इसी साधना के बल पर विश्वामित्र ने इन्द्र को परास्त कर एक नई सृष्टि का निर्माण किया था।

वज्ञानिक दृष्टि से यह गायत्री साधना अत्यन्त ही कल्याणकारी सिद्ध हुई है। गायत्री मंत्र में जिन चौबीस अक्षरों का समावेश है, उन्हें दिव्य शक्तियों का समूह माना गया है, तथा इन्हें दिव्य

पाया जाता है, अतः इसे 'वेदमाता' की संज्ञा भी दी गई है।

गायत्री मन्त्र मन को सबल बनाने का अमोद्ध अस्त्र कहा गया है, इस मन्त्र शक्ति के द्वारा ही बड़े-बड़े महात्मा, ऋषि, महारथ से लेकर गृहस्थ साधक भी अपने जीवन को ऊंचा उठाने में समर्थ हुए हैं। उराणों में उल्लेख है कि 'यह मन्त्र किसी के द्वारा रचित नहीं है, अपितु स्व निर्मित है।'

ब्रह्माजी को यह स्पष्ट निर्देश हुआ था, कि गायत्री साधना से ही सृष्टि-निर्माण की क्षमता प्राप्त होगी, इसके पश्चात्

शक्तियों का स्थान-स्थान भी कहा गया है। गायत्री के चौबीस अक्षरों में पांच कर्मेन्द्रियों, पांच जानेन्द्रियों, पांच प्राण, पांच विषय (शब्द, स्वर्ण, रूप, रस, गंध) तथा मन, बुद्धि, चित एवं अहंकार ये चौबीस तत्व भी इन्हीं में समाहित हैं। इन चौबीस शक्तियों उत्पन्न मानी गई हैं। गायत्री के चौबीस अक्षरों में क्रमशः निम्न चौबीस देवताओं का निवास माना गया है-

१. तत्-अग्नि, २. स-वायु, ३. वि-सूर्य, ४. तुर



मुर्व को अर्ध्य देने के पश्चात् उपरोक्त मंत्र से ही, दाहिने हाथ में जल लेकर अभिमंत्रित करें और अपने शरीर पर छिड़क लें, तत्पश्चात् साधना कक्ष में आकर पूर्व की ओर नुह करके, एक पीले आसन पर, पीली धोती पहनकर बैठ जाय, तथा सामने एक चौकी पर पीला कपड़ा बिछा दें, फिर मध्य में लाल रंग से रंगे चावलों की एक ढेरी बनाकर प्राण-प्रतिष्ठित 'गायत्री यंत्र' को चावल की ढेरी पर स्थापित कर दें, तत्पश्चात् उसकी, धूप, दीप, अक्षत आदि से पूजा करके 'स्फुटिक माला' से निम्न मंत्र का तीन माला नप करें—

#### मंत्र

ॐ भूर्भुवः स्वं तत्सवितुर्वरेण्यम्  
भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः  
प्रचोदयात्

श्रीं हौं नमः ।

हर बालक को या साधक को इस साधना से लाभ उठाना ही चाहिए, साधना समाप्ति के पश्चात् यंत्र को किसी बहते हुए जल में प्रवाहित कर दें, तथा माला को पहिन लें अथवा पूजा कक्ष में रख दें।

साधना सामग्री = ३००/-

#### 2. मनोकामना पूर्ति प्रयोग

**सामग्री** — गायत्री मंत्र से संस्कारित दिव्य शंख एवं चैतन्य माला।

**समय** — किसी भी रविवार अथवा शुक्रवार को प्रातः ३ से ८ बजे के मध्य

**प्राप्त:** स्नानादि के बाद साधक को चाहिए कि वह पूर्व की ओर मुख करके पीले आसन पर, पीली धोती पहिन कर बैठ जाए, तथा सामने चौकी पर पीला कपड़ा बिछा

ले, फिर पीले चावलों की एक ढेरी बनाकर उस पर एक पानी बाला नारियल स्थापित कर दें तथा मीली (कलावा)बाध कर उस पर रक्तचंदन या कुमकुम लगा दें, और उसके दाहिनी ओर लाल फूल की पखुड़ीयों के ऊपर 'दिव्य शंख' को स्थापित कर, उसका भी अक्षत, पुष्प व धूप से पूजन करें, फिर दाहिने हाथ में जल लेकर संकल्प करें, कि मैं अमुक व्यक्ति (नाम, गाव) इस मनोकामना पूर्ति हेतु यह साधना सम्पन्न कर रहा हूँ, ऐसा बोलकर जल को भूमि पर छोड़ दें, फिर आसन पर खड़े होकर निम्न गायत्री मंत्र का 'चैतन्य माला' से एक



आर्यों के गायत्री

व्यक्ति / नाम व गोत्र : इस रोग की विवरणी है तथा प्रयोग

# जीवन सारा



यों तो किसी भी रोग के शब्द हेतु आज विकित्सा विज्ञान के पास अचूक इलाज है, परन्तु मंत्रों के माध्यम से विकित्सा के पीछे धारणा यह है, कि सभी दोगों का उद्भव मनुष्य के मन से ही होता है। मन पर पड़े दुष्प्रभावों को चाहि मंत्र द्वारा नियंत्रित कर लिया जाए, तो रोग स्थानी रूप से शान्त हो जाते हैं।

1. आप स्वस्थ हो सकते हैं इस प्रकार से।

बीमारी, रोग, जरा, व्याधि इसमें आज के बातावरण में केलकर सभी को जकड़ रखता है अपने शिक्षने में। कोई भी व्यक्ति ओ, विशु यो, दृढ़ हो, स्त्री हो वा किशोर हो सभी इसकी चपेट में हैं और इससे निकलने के लिए कभी तो विटामिन्स खाते हैं, कभी आश्रय तो कभी कोई अन्य दवा। जरा सोचिए। आज के नवयुवकों का यह हाल है, तो आने वाली पीढ़ी तो रोगबाजन बनी रहेगी ही वह तो रोगमुक्त ही हो नहीं सकेगी?

आखिर इसका निदान कुछ न कुछ तो करना हो होगा और यह निदान प्राप्त दोगा अध्यात्म से, मंत्रों के माध्यम से, व्यक्तिकि पूर्वकाल में जब प्रत्येक घर में डवन पूजन होते रहते थे तथा बातावरण सात्त्विक था, तो दोगों की आशु भी अधिक थी, वे स्वस्थ जीवन व्यतीत करते थे। जैसे-जैसे व्यक्ति सुख और देश्वर्य के लिए भन्नलोलुप दोता गया थे से ही वह बीमार होता गया। आज स्वस्थ व्यक्ति को दृढ़ना देसा ही है जैसा भीड़ में तिनका खोजना।

इन्होंने आप स्वस्थ व्यक्ति में से पक नहीं बनना चाहेंगे? यदि चाहते हैं, तो यह प्रयोग सम्पन्न करें।

किसी पाव ने नागार्जुन प्रथापित कर उसका संक्षिप्त पूजन करें, पूजन के पश्चात उस पर अपनी दृष्टि प्रकाश करने हुए निम्न मंत्र का नप 2। बार करें—

॥ ॐ नमो शारदे आरेय देहे ३० नम ॥

यह प्रयोग सात दिन तक करें। सात दिन के बाद नागार्जुन को नवी में प्रवाहित कर दें और लिन्य प्रात उठकर स्वस्थ

साधना सामग्री ४०/-

\* \* \* \* \*

2. कई दोगों की रामबाण औषधि — ध्यान ध्यान सिक्क आंच्छ बंद करके बैठने की क्रिया नहीं है। यह स्वयं को पूर्ण रूप से ऊर्जावान बनाने के लिए है, बशरों ध्यान में गहनता हो। ध्यान के लिए उपयुक्त समय है प्रातःकाल, जब बातावरण भी पूर्ण चितन्य रहता है और प्रकृति भी नुतनता एवं असृति का अहसास करती है। मन को पूर्ण रूप से शांत करने की प्रक्रिया एवं बहरी विचारों से स्वप्नस्त करने की क्रिया से उनके रोग ठीक होते हैं, शरीर स्वस्थ एवं मन प्रफुल्लित रहता है।

आप भी जब शुरू मंत्र या इष्ट मंत्र का जप करते हुए ध्यान प्रक्रिया में संलग्न होंगे, तो निश्चय हो आप स्वयं को अनेक विमारियों से मुक्त कर पायेंगे। आप ध्यान करते समय गुरु रहन्या लिखि माला धारण करके बैठें।

न्योडावर ३००

\* \* \* \* \*

3. क्या आप जोड़ों के दर्द से रीडित हैं?

खाल प्रदायों में विशेष अवयवों के अभाव से शरीर में कई प्रकार की व्याधियाँ व्याप्त हो जाती हैं, जिनके लक्षण रोग के रूप में प्रकट होते हैं। जोड़ों में दर्द रहना या आम तौर से बाई या गठिया का दर्द होना यह उम्र ढलने के साथ प्रारम्भ हो जाता है। इसी प्रकार आर्थिराइटिस भी ऐसा ही रोग है, जिसमें पैर की हड्डियाँ, पैरे आदि दुरी तरह से दर्द करते हैं। इन सभी का औषधीय उपचार तो है, परन्तु लम्बा और

दुस्याध्य है। ये ऐसे रोग हैं, जो न तो गम्भीर कहे जा सकते हैं, परन्तु चैन से जीने भी नहीं देते, शत रात भर जोड़ों के दर्द से नींद उड़ जाती है। जब दवा काम न करे, तो दुआ काम करती है। आप यह प्रयोग सम्पन्न कर इस व्याधि से मुक्त हो सकते हैं। अपने सामने कायाकल्प दंत को रुक्षपिण्ठ कर निष्ठ मंत्र का आरोग्य वर्धनि माला से 4 माला 3। दिन तक जप करें—

ॐ ही राग्नाशाय जारोग्यं देहि ॐ कट्

प्रयोग समाप्ति के बाद यंत्र व माला को जल में प्रवाहित कर दें। प्रयोग के साथ औषधि मेवन पूर्ववत करें।

साधना सामग्री 250/-

\*\*\*\*\*

4. कथा आप मानसिक रूप से गृहस्थ जीवन में इनबन अथवा विभेद के कारण तनावग्रस्त हैं।

आरतीज्ञ संस्कृति में नारी को अत्यंत ही सम्मान की दृष्टि से देखा जाता था। परन्तु नारी ही परिवार में संस्कारों की जन्मदात्री होती है और यदि किसी का मानसिक संतुलन ढीक न हो, तो इसका परिवार बच्चों पर अर्थात् देश की भावी पीढ़ी पर भी इसका प्रभाव पड़ता है परन्तु यह सब कुछ जानने हुए भी कहु एसे परिवार हैं जहाँ स्त्री को उचित सम्मान प्राप्त नहीं है, उसे नीजरों की तरह समझा जाता है। यह एक दुर्घट विधि है जिसका प्रभाव यह होता है, कि घर की सम्पन्नता, घर की उत्तरि, घर का विकास सब कुछ अवरुद्ध हो जाता है, क्योंकि घर की स्त्री को घर की लक्ष्यों कहा गया है। जिस घर में स्त्री का सम्मान नहीं होता है, उस घर में देवताओं का वाय कभी नहीं होता और न ही उस घर में देवताओं को कृपा ही बरसाती है। उस घर में सौंदर्य कलेश, अशांति बनी रहती है।

आज भी ऐसे कई परिवार हैं, जहाँ वहि या तो कार्य में बहुत उचिक व्यरुत रहता है या किसी अन्य कारणों द्वारा परिवार का ध्यान नहीं दे पाता या फिर पति पत्नी की आपस में बनती नड़ी आए दिन कलह होती है इससे विपरीत प्रभाव से पति पत्नी के स्वास्थ्य पर असर पड़ता है। और मानसिक तनाव पैदा होता है। जिससे रात की नींद नहीं आती है वही लाते जापस में गुजती रहती है हमेशा गुरुस्ता होना चिड़चिड़ाना आदि स्वभाव में परिवर्तन आ जाता है।

जब ब्रात बाते से न बन पाए तो आपको चाहिए कि आप

यह विव्य प्रयोग सम्पन्न करें। इस प्रयोग के प्रभाव से आपके पति सही विश्वा में आ जाएंगे और घर का कलेश मिठ सकेना तथा आपको अपने घर परिवार में मान सम्मान प्राप्त हो सकेगा। यह गृह कलेश निवारण समाप्त कर आपके नीबन को पूर्ण मानसिक तनाव से मुक्त कर देगा।

इसके लिए घर की स्त्री को चाहिए कि वह किसी सोमवार को एक नाम पात्र में 3 कलेश निवारिका को स्थापित कर लें। फिर इनका पूजन कुंकुम, अक्षत, पूष्प, धूप, दीप से कर निष्ठ मंत्र का गृहस्थ सुख सौभाग्य माला से 5 माला जप 2। दिन तक नित्य करें—

ॐ ही श्री गृहस्थ गुरु रिक्षये ॐ नमः

इस मंत्र के जप के बाद युक्त मंत्र की भी एक माला जप करें तथा गुरुनेत्र से अपनी स्वास्थ्य में सकलता की प्रार्थना करें। 2। दिन के बाद माला एवं तीनों कलेश निवारिका वो जल में विसर्जित कर दें।

साधना सामग्री 200/-

5. कथा आप पेट की बढ़ती चर्बी से परेशान हैं?

पेट की चर्बी का बढ़ना स्वास्थ्य के निष्ठ हानिकारण होता है और फिर चर्बी बढ़ने से दूसरे रोग भी जाते हैं। इससे निजात पाने के लिए लोग या तो दवा का सहाया लेते हैं, या तो शारीरिक व्यायाम का, या फिर डायटिंग (उपवास) का, लेकिन इससे कोई विशेष अन्तर नहीं पड़ता।

स्त्री ही या पुरुष बेडील पेट उसके सौन्दर्य को समाप्त करता ही है, ऐसे व्यक्ति हीन भावना से यस्ते रहते हैं और स्वास्थ्य का पात्र बन जाते हैं। कई कार्यों को करने में तकलीफ होती है, बढ़े पेट के कारण रोग शीघ्रता से उनके शरीर में घर कर लेते हैं। लेकिन आप इस पेट की चर्बी को घटा सकते हैं, इस प्रयोग को अपना करें।

आपके पेट की चर्बी किसी भी उपाय से नहीं घट रही है, लगातार बढ़ती ही जा रही है, तो इसके लिए आप भारोत्तक को बायें हाथ की मुट्ठी में बंद करें तथा पूर्णिमुख खड़े होकर नित्य ।। दिन तक निष्ठ मंत्र का 20 मिनट जप करें—

ॐ ही दु दु ही ॐ कट्

प्रयोग सामग्री के पश्चात् भारोत्तक को नवी अथवा तालाब में प्रवाहित कर दें।

साधना सामग्री 80/-

प्राप्ति प्राप्ति  
प्राप्ति प्राप्ति

डाक व्यव  
पत्र प्राप्त करने  
आले द्वारा  
दिया जायेगा

व्यापारी जवाबी पोस्टकार्ड

परमिट नं. J.D. 8  
जोधपुर प्रधान डाकघर  
342001 (राज.)



सेवा में,

व्यवस्थापक : मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान  
डॉ० श्रीमाली मार्ग, हाईकोर्ट कॉलोनी,  
जोधपुर - 342001 (राजस्थान)

डाक व्यव  
पत्र प्राप्त करने  
आले द्वारा  
दिया जायेगा

व्यापारी जवाबी पोस्टकार्ड

परमिट नं. J.D. 8  
जोधपुर प्रधान डाकघर  
342001 (राज.)



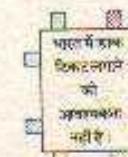
सेवा में,

व्यवस्थापक : मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान  
डॉ० श्रीमाली मार्ग, हाईकोर्ट कॉलोनी,  
जोधपुर - 342001 (राजस्थान)

डाक व्यव  
पत्र प्राप्त करने  
आले द्वारा  
दिया जायेगा

व्यापारी जवाबी पोस्टकार्ड

परमिट नं. J.D. 8  
जोधपुर प्रधान डाकघर  
342001 (राज.)



सेवा में,

व्यवस्थापक : मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान  
डॉ० श्रीमाली मार्ग, हाईकोर्ट कॉलोनी



# कृष्ण कलायों को जीवन में आरप्ति चार अनूठी साधनाएँ



कृष्ण का अवतरण इस प्रशंसन, चान, कर्म और योग का विशेष संदेश  
है। इन चार अनूठी साधनों को जीवन में आरप्ति करने का उपयोग करना बहुत फाल है।



वामोध्वं  
 विद्या  
 पुरुष  
 अक्ष मात्र  
 स्फुटिका  
 शब्द ब्रह्म  
 पाणि  
 गायत्रं  
 श्यामलं  
 वहिवर्ह  
 सर्व  
 उपासित  
 तिष्ठे द्विधि  
 अथ—  
 बौद्ध ऊपर  
 सर्वस्व  
 हाथ में मात्र  
 स्फुटिका  
 नीचे के दो  
 ब्रह्म मध्यी  
 पीताम्बर  
 और कोम  
 पर मोर प  
 सभी वेदों  
 जाता मुनि  
 उपासना  
 नमन करता  
 इसके  
 न्यारह मा  
 अवश्य का  
**मंत्र**  
 ॥  
 ग  
 इस प्रव  
 को जानता  
 है। ऐसे स

### अस्त्राय फट् ।

मन्त्र न्यास

मृद्धिं हीं नमः । ललाटे श्रीं नमः । भू मध्ये कलीं  
 नमः । नेत्रयोः कृनमः । कण्ठे षाणां नमः । न सोऽय नमः ।  
 वदने गो नमः । चिबुके वि नमः । कण्ठे नदा नमः ।  
 दोम् ले यं नमः । हृदि गो नमः । उदरे पीं नमः ।  
 नाभीं जं नमः । लिङे नं नमः । आधारे रं नमः ।  
 कटयां ल्लं नमः । जान्वोः भां नमः ।  
 जङ्घयोः यं नमः । गुल्फयोः स्वां नमः । पादयोः हां नमः ।  
 हृदि हीं नमः । उदरे श्रीं नमः । नाभीं कलीं नमः ।  
 लिङ्गे कृ नमः । आधारे षाणां नमः । कटयां यं नमः ।  
 जान्वोः गो नमः । जन्द्ययोः विं नमः । गुल्फयोः न्द्यां नमः ।  
 पादयोः यं नमः । मृद्धिं गो नमः । कपाले पीं नमः ।  
 भू—मध्ये जं नमः । नेत्रयोः नं नमः । कण्ठयोः वं नमः ।  
 नसोः ल्लं नमः । वदने भा नमः । चिबुके यं नमः ।  
 कण्ठे स्वां नमः । दोम् ले हां नमः ।  
 संहारव्यास

पादयोः हीं नमः । गुल्फयोः श्रीं नमः । जङ्घयोः कलीं नमः ।  
 जान्वोः कृ नमः । कटयां षाणां नमः । आधारे यं नमः ।  
 लिङ्गे गो नमः । नाभीं वि नमः । उदरे न्द्यां नमः ।  
 हृदि यं नमः । दोम् ले गो नमः । कण्ठे पीं नमः ।  
 चिबुके जं नमः । वदने नं नमः । नसोः वं नमः ।  
 कण्ठयोः ल्लं नमः । नेत्रयोः भां नमः । भू—मध्ये यं नमः ।  
 ललाटे स्वां नमः । मस्तके हां नमः ।

इस प्रकार मंत्र न्यास सम्पन्न करने के पश्चात विभिन्न कार्यों के लिए विभिन्न प्रकार की साधनाएँ सम्पन्न की जा सकती हैं।

### १. वाक् सिद्धि एवं गैत्यासिद्धि साधना

यह साधना प्रातः काल ब्रह्म सुडूर्त मे ही सम्पन्न की जाती है, स्नान इत्यादि कर उपर दिये गये न्यास विधि से न्यास सम्पन्न करे। पूर्व दिग्ग की ओर मुंह कर अपने सामने 'कृष्ण विद्यासिद्धि यंत्र' स्थापित कर दें। अक्षत कुमकुम, गुलाल इत्यादि से षोडशोषचार पूजन करें। तदन्तर निम्न ध्यान मंत्र 'कृष्ण का विग्रह अथवा चित्र' अपने सामने रख कर करें।

ध्यान

वामोधर्व—हस्ते दधतं,  
विद्या—सर्वस्व—  
पूर्णतकम्।  
अक्षमालां च दक्षोधर्वं,  
स्फटिकी मातुका सर्याम्॥



लय

य  
 ऋषिभ्या  
 शिरसि  
 हृदि प्रीकृत  
 करन्यात्  
 कला  
 स्वाह  
 अनामि  
 कलः  
 द्यात् मं  
 अ  
 सु  
 बा  
 तप  
 दो  
 वि  
 गो  
 वि  
 अथात्  
 के समान,  
 देष मे क  
 गजायमा  
 ओर दूसरे  
 ज्वलो औ  
 आमूषण  
 विराजमा  
 यंत्रं एवं  
 पूजन कर  
 की एक म  
 बंत्र  
 ॥

शंखं चक्रं लसदं बाहुं, वेणुं हस्तं द्रव्येऽस्तम् ।

अर्थ—कलाये पुष्प जैसे रुन्दर ध्याम वर्ण, बुद्धावन ध्याम में विराजमान, गोप—गोपीयों और गी इत्यादि से वेदित पीताम्बरधारी भगवान श्रीकृष्ण जो विभिन्न जाभूषणों से उपभोग्यमान है, जिनका वक्षस्त्वयल कोस्तुम मणि से प्रकाशित है। नमकाविषेन मुनि उनकी स्तुति कर रहे हैं, श्रीकृष्ण के एक हाथ में शङ्ख और दूसरे में चक्र हैं और अन्य दो हाथों से बर्णी बादन कर रहे हैं, ऐसे मनोहरस्प भगवान श्रीकृष्ण का मैं नमन करता हूँ।

उसके पश्चात् 'मणिमाला' से निम्न दो मंत्रों का जप करें। दोनों मंत्रों की पांच—पांच माला मंत्र जप आवश्यक हैं—

### मंत्र

प्रथम मंत्र—॥ कलीं हृषीकेशाय नमः ॥

द्वितीय मंत्र—॥ श्रीं हीं कलीं कृष्णाय स्वाहा ॥

इस साधना के प्रारम्भ में अपनी तीन मनोकामनाएं मन ही मन बोल दें अथवा कागज पर लिख कर 'मनोकामना पूति कृष्ण यंत्र' के नीचे रख दें और ज्यारह दिन तक रोज दोनों मंत्रों की एक एक माला का जप अवश्य करें। चार्नीस दिन बीतते बीतते एक मनोकामना अवश्य ही पूर्ण हो जाती है।

(साधना सामग्री न्योछावर रु. ३००)

### ३. गृहस्थ सुख प्राप्ति कृष्ण साधना

यदि प्रेम में नफलता प्राप्त नहीं हो रही हो, विवाह में विलम्ब हो रहा हो, गृहस्थ जीवन में तनाव रहता हो तो इन सभी स्थितियों में यह साधना अवश्य सम्पन्न करनी चाहिए।

यह आवश्यक नहीं है कि यह साधना जन्माष्टमी के दिन ही प्रारंभ की जाय। विसी भी शुक्रवार को यह साधना प्रारंभ की जा सकती है। अपने सामने 'श्रीकृष्ण वशीकरण यंत्र' स्थापित करें, यदि कृष्ण और रुक्मणी का चित्र प्राप्त हो सके तो उसे भी स्थापित करें। और उपर लिख गये न्यास इत्यादि को सम्पन्न कर निम्न ध्यान मंत्र बोलें—

### ध्यान मंत्र

वरदाभय हस्ताभ्यां, शिलघ्यन्तं स्वाङ्गो प्रिये ।

पद्मोत्पल करे ताभ्यां, शिलां चक्रं गदांज्वलम् ॥

वर और अभय मुद्रा युक्त और अपने हाथों में चक्र गदाधारी भगवान श्रीकृष्ण प्रिया रुक्मणी के साथ विराजमान है,

उन भगवान श्रीकृष्ण और रुक्मणी का ध्यान करते हुए मैं प्रार्थना करता हूँ की मेरे जीवन में भी ऐसी ही प्रेम वर्षा हो।

फिर 'आकर्षण माला' से निम्न मंत्र का जप सम्पन्न करें। यह मंत्र न्यारह माला चार शुक्रवार तक करना अनिवार्य है।

### मंत्र

॥ श्रीं हीं कलीं गोपी—जन—वल्लभाय स्वाहा  
कलीं हीं श्रीं ॥

इस प्रकार चार शुक्रवार को यह साधना सम्पन्न कर यत्र को अपने पास ही रखे और माला स्वयं धारण करते, विवाह सम्बन्धित बाधाये तो यह साधना से दूर होती है उसके अलावा समोहन एवं आकर्षण भी प्राप्त अवश्य होना है।

(साधना सामग्री न्योछावर रु. ३६०)

### ४. बालगोपाल कृष्ण साधना

संतान प्राप्ति के लिए कृष्ण की साधना सभी व्यक्ति करते हैं। लेकिन इसके साथ ही साथ यह तथ्य भी ध्यान में रखना चाहिए की केवल संतान प्राप्ति होना ही जीवन का सौभाग्य नहीं है अपितु संतान चाहे वह पुत्र हो या पुत्री हो, योग्य हो और उसमें कृष्ण के समान गुणों का विकास भी हो, उस प्रकार यह साधना वे व्यक्ति भी कर सकते हैं जिन्हें कोई संतान नहीं है और वे व्यक्ति भी कर सकते हैं जो अपनी संतान की पूर्ण उन्नति चाहते हैं।

इस साधना में 'बाल गोपाल संतान यंत्र' स्थापित करें, और यदि अपनी संतान की उन्नति के लिए यह साधना करनी हो तो उसका नाम कुमकुम से यंत्र के आगे कागज, भोजपत्र अथवा कपड़े पर भी लिख लक्ते हैं।

यदि पति—पत्नी दोनों सम्मिलित हैं तो सम्पन्न करे तो ज्यादा उचित रहेगा।

यह साधना में ध्यान एवं न्यास अलग है।

#### ऋषिन्यास

शिरसि नारद - ऋष्ये नमः, मुखे गायत्रीछन्दसे नमः,  
हृषि श्रीकृष्णाय देवतायै नमः।

#### कलन्यास

कलां अंगुष्ठाभ्यां नमः। कलों तर्जनीभ्यां  
स्वाहा। कलं पठ्यमाभ्यां वषट्। कलै

भगवान् श्रीकृष्ण का जीर्ण अलौकिक  
भीमार्गी के परिपूर्ण उत्तर्वर्ष जीवत के स्थान ही  
श्रीकृष्ण में महावता के सभी घरम जीर्ण परम  
ब्रह्मणों का पूर्ण विकास हो। वे गोगत्रैषा और  
दृत्यकला के लिपण ताता ही न थे, यस्तु अपने  
काल के शोषण उत्तर्वर्ष ब्रह्मणों की ही थी। उत्तर्वर्ष

શ્રાવણ માસ સંવત 2059

# કથોઓ કી વાપી

મેષ (ચુ, ચે, ચો, લી, ટ્રુ, લો, જા)

યહ માસ આપનો બહુન કુછ પ્રાપન કર જાએના, લેખિન યહ ધ્યાન રહ્યે, કि હવા મેં ઉદ્દેશે પર કર્મી-કર્મી ઘરની પર જાન જાડતા હૈ, અને ધરની પર હો રહે, ઉચ્ચ અવસર મિલને પર આપનો પહેચાન ન રહ્યો હૈ, કર્મીની આપની પહેચાન કે કારણ આપનો અવસર મિલા હૈ। જોણ ઔર દોષ દોનો કો બનાકર રહ્યે, તો આપ બહુન કુછ કર બકને મેં સમય જોને। વ્યાપાર, નોકરી પેશા ઓર ભુક્ખને મેં ફસે લોગોને કે લિપ કાપોની રાહતપૂર્ણ વ્યતીત ઢોશા રહ્યે નાહા। આપનો આપને શરૂઆતોની તાવાદ નહીં બઢતી હૈ ઓર નિયમ અપને ડાંડ ક્યાન કર આપ કાંઠાયની સાથના સાધન કરે। અનુકૂળ નિયમો હોય હે 3, 11, 16, 21, 25।

શૃષ્ટ (ડ્રુ, ડ્રુ, વા, વી, ફ્રુ, વે, લી)

અવસર નો બહુન સંપદરે પ્રાપું હોણ સાચ હૈ આપ સ્વયં કો ભો દુઢાયા હૈ, કિ બન અવસરો કો ચુક નહીં આપનો આનન્દિક ઊજોની આપનો સહી સરળ પર જાનેને કે લિપ નિતિશીલ કરેં। જાનુનાઓની કો બાંધ નહીં અપિત ઉત્તરમે વિચરણ કર અનુકૂળ લે, લેખિન કિસો પેસે માગ મેં ન નિતિશીલ હો જિસસે પલિછા મેં દુર્ખો કા સામના કરના પણ, આપની વ્યાપારિક ગતિ યા આપ નોકરી કર ગઈ હો રહ્યું કો ઔર આપનો સહયોગ પ્રાપ હોય। કિસી આત્મીય સે ખેટ હોણી, પ્રલ્યેક સ્થિરત પર એણ વિશ્વય પ્રાપ કરેને કે લિપ ગુરુ રહેણું માલ્યા માલ્યા ધારણ કરે। ઇન માસ કો શુદ્ધ નિયમો હોય હે 5, 12, 14, 18, 21, 28।

મિથુન (કો, કી, ફુ, ઘ, થ, લો, હા)

પરિણતન હી જોવન કા ગતિ હૈ ઓર ઇસે સફળ સ્વીકાર કરને બાલા વ્યાસ હો સફળ હોતા હૈ। જોણ હૈ, આપ ભો ઇસે સહનતા સે સ્વીકૃતિ પ્રદાન કરેં, ધન કે જાન ઔર જાને દોનોની કો માર્ગ ખૂલા રહેણા। સહાય કો ન ધારણ કરે અન્યાન્ય અહ શરૂ વન આપ એર હી ઝાંચા કરણા, શીંગ ઇસેથે નિયાન હેતુ નિયમ ગુરુ પ્રાપ સમજુનું કરો થા નિખિલાંક્રમનું સનનું કો કેસેટ કો ચર મેં નિયમ

કુલ (હી, દુ, હો, ડા, ડી, ડે, ડા)

આપ ભોમાયાલી હૈ, લેખિન દુખોન્યું કી કાલી પણ્ઠાંધી ભો જોંલનો પઢણો। મહત્વપૂર્ણ અવસર કો આપ આપની અન્યાન્ય સતત્કર્તા સે હી પદકંડ પાણો સંસ્કૃતા ને આપનો અંગુઠા વિશ્વા રોગે। ઇથનિય પહુલ સે હી અપને કો ચિંતા બનાએ ઔર તીવ્રતા કો ધારણ કરે, અપની સાધનાન્મક ઝડ્ઝાં કો બઢાતે પ્રાણીક અવસર કો ચુકે નહીં, ઇસી મેં આપની સાપલના નિહિત હૈ અપને કોષ પર નિયંત્રણ રહ્યે નહીં નો આપનો હાનિ કા સાધના કરના વહેં ડસ મહીને આપ સુર્ય સાધના (અપેન 2000), કરે તો અલંકત લાભ હોયા। અનુકૂળ નિયમો હોય હે 1, 7, 11, 15, 18, 22, 25 તથા 29।

શિંહ (મા, મી, મુ, મે, મે, ટ્ર, લી, ટ્ર)

જ્યોતિશીલ કુછ સે તો હાનિ આપને પ્રભાવ સે બહુન કુછ કરેણા હૈ, યહ આપ એ નિર્ભર હૈ, કિ આપ કિસ થીર્ય સે ઉસીની સામના કરેં, થીર્ય રહ્યે, આનસ્યા કો પશ્ચય ન હૈ અન્યાન્ય નહિંવર્ણાં સ્વસરોની સે હી વચ્ચન હોયે। ધન કા વયદ કરના ચાહિએ, લેખિન અથ ધ્યાન રહ્યે, કિ આપની અન્ય કર્તાની હી હૈ વ્યાપાર, મુક્કદમો કે કારણ તનાવયસ્ત ન હો જાપ્યા બન આપનો દૂઢાં હૈ, પિલ્લાંમ રહ્યે। સૂર્ય કે અવસર ભો જાપની પ્રતોકા કરેં, નિયમ જાનિ સ્તોત્ર કા પાઠ કરો। ગુરુ હદ્વદ્યસ્ય ધારણ સાધના (જુનાઈ 2001) સાધન કરો। અનુકૂળ નિયમો હોય હે 2, 8, 11, 16, 21, 25।

કાળ્યા (લો, પા, વી, ફ્રુ, થ, થ, ફિ, ફિ)

ઇન માસ આપ મેં કુછ તીવ્રતા હોણી જાને કાયોને પ્રાપની। પ્રસ્ત્રના કે સાચ હન ભો ધ્યાન રહ્યે, કિ સ્વભાવ મેં રોજી આને વે ઔર અપને વિચારોનો સનસુલિત રહ્યે ઔર ઉનીકો ક્રમચલ્લ રૂપ ને સસ્તુન કરો, કહ ના, મિય બેનેને ઓર આપનો સહયોગ પ્રદાન કરોણે। આપનો ભો ઉનેકે સહયોગ સે સાફળતા પ્રાપ હોણી, સ્વયં કો ભો ધ્યાન રહેવના જાવશ્યક હૈ। પ્રેમ ઔર સૌન્દર્ય સે ગાડુઓની ભો સ્ત્રી નિયમ બનાયા જા સકાન હૈ। ચર પારિવર મેં પ્રાગલિખ કાર્ય હોને કે યોગ હૈ। ઇન સમય આપ વાસ્તુ દેવ સાધના (માર્ચ 1998) સામનું કરો શુદ્ધ નિયમો હોય હે 1, 8, 11, 13, 16, 21, 25 તથા 29।

જોવન ગતિ હોતા હૈ, લાંબાના ના બનાએ રહ્યે, કા ફલ તો શીંગ હી પ્રિશનિક સ 21, 26, શુદ્ધિલા

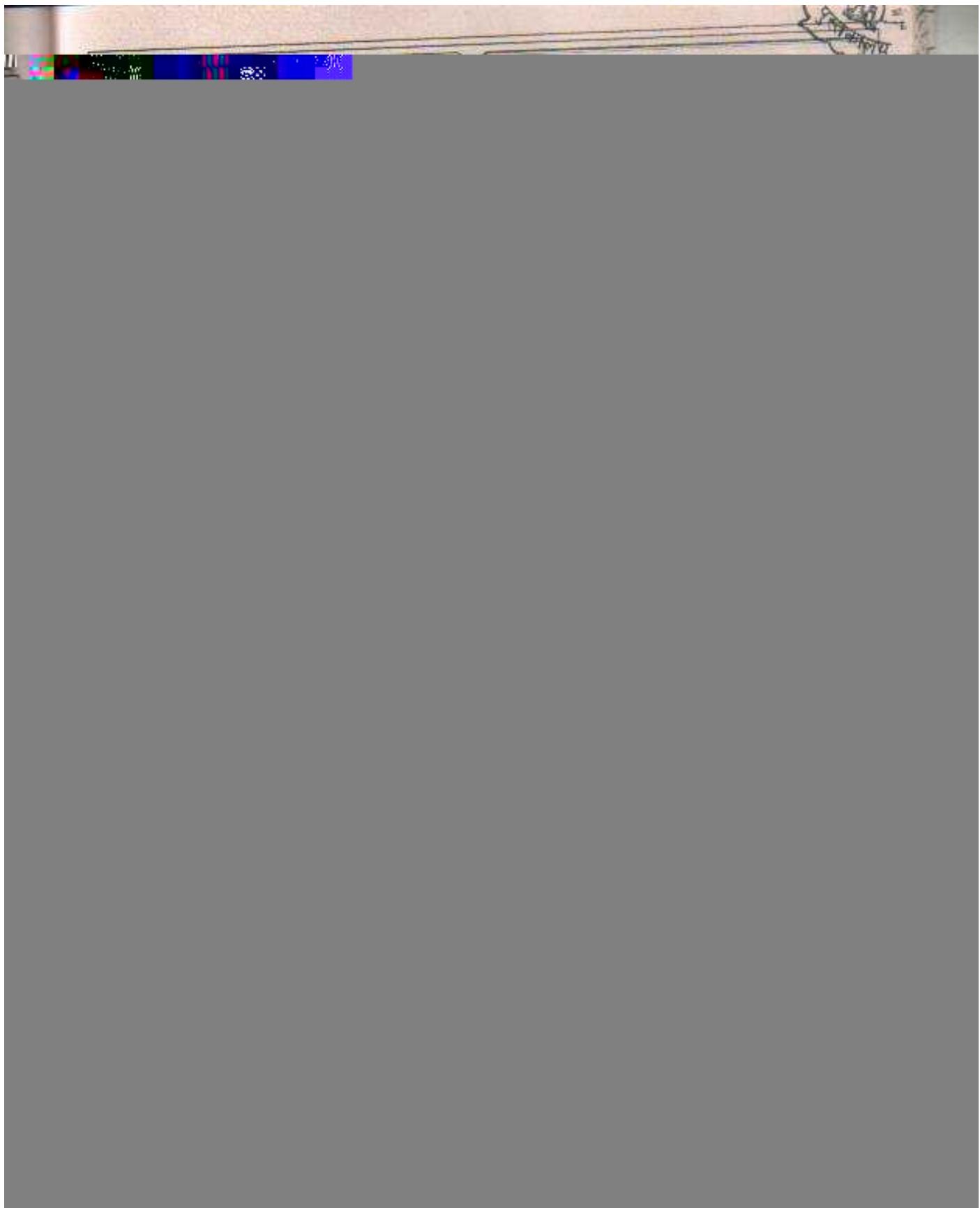
નાંદો, ન્યોંની આપને નિયમ હૈ, કિસી ને માછ વિશિષ્ટ આપ ઇસમાં કો હોય રોક ન ચલાય એ કે પ્રતી જા આપ મહાય 3, 15, 1

શરૂ (વે

સહાયક ન કર દેતા હૈ કે નિયમ શીર્ષ અને અગ્ન રંધ્ણા। સિદ્ધે મેં સાફ કોઈ હી પરાજય 22, 25,

મહાર (

પ્રાપ કરને રહ્યું હૈ કે નુકસાન વ 2, 6,



# कौं सामाया हूं

साध्यक, पाठक तथा सर्वेजन सामान्य के लिए समय का वह स्वप्न यहां प्रस्तुत है, जो किसी भी व्यक्ति के जीवन में उभारि का कारण होता है तथा जिन्हें जान कर आप इस अपने लिए उभारि का मार्ग प्रशस्त कर सकते हैं।

जीवे की शक्ति सारणी में समय को श्रेष्ठ स्वप्न प्रस्तुत किया गया है - जीवन के लिए आवश्यक किसी भी कार्य के लिये, चाहे वह व्यापार से सम्बन्धित हो, जैकरी से सम्बन्धित हो, घर में शुभ उत्सव से सम्बन्धित हो इत्यका अन्य किसी भी कार्य से सम्बन्धित हो, आप इस श्रेष्ठतम समय का उपयोग कर सकते हैं और अफलता का प्रतिक्षेप 99.9% आपके आड़वे में अंकित हो जावेगा।

**बहु मुहूर्त का समय प्रातः ४.२४ से ६.०० बजे तक ही रहता है।**

वार्ष/दिनांक	श्रेष्ठ समय
रविवार ( जुलाई 28, अगस्त 4 11 18 )	दिन ०६.०० से १०.०० तक रात्रि ०६.४८ से ०७.३५ तक ०८.२४ से १०.०० तक ०३.३६ से ०६.०० तक
नोमवार ( जुलाई 29, अगस्त 5 12 19 )	दिन ०६.०० से ०७.३० तक १०.४८ से ०१.१२ तक ०३.३६ से ०५.१२ तक रात्रि ०७.३६ से १०.०० तक ०१.१२ से ०२.४८ तक
त्रियंगलवार ( जुलाई 30, अगस्त 6 13 20 )	दिन ०६.०० से ०८.२४ तक १०.०० से १२.२४ तक ०४.३० से ०५.१२ तक रात्रि ०७.३६ से १०.०० १२.२४ से ०२.०० ०३.३६ से ०६.०० तक
चूधवार ( जुलाई 31, अगस्त 7 14 21 )	दिन ०७.३६ से ०९.१२ तक ११.३६ से १२.०० तक ०३.३६ से ०६.०० तक रात्रि ०६.४८ से १०.४८ तक ०२.०० से ०६.०० तक
गुरुवार ( जुलाई 25, अगस्त 1 8 15 22 )	दिन ०६.०० से ०८.२४ तक १०.४८ से ०१.१२ तक ०४.२४ से ०६.०० तक रात्रि ०७.३६ से १०.०० तक ०१.१२ से ०२.४८ तक
शुक्रवार ( जुलाई 26, अगस्त 2 9 16 23 )	दिन ०६.४८ से १०.३० तक ०४.२४ से ०६.१२ तक ०८.२४ से १०.४८ तक ०१.१२ से ०३.३६ तक ०४.२४ से ०६.०० तक
शनिवार ( जुलाई 27, अगस्त 3 10 17 24 )	दिन १०.३० से १२.२४ तक ०३.३६ से ०५.१२ तक ०८.२४ से १०.४८ तक ०२.३० से ०३.३६ तक



किसी  
सफल ह  
किस प्र  
अन्य  
एवं आ  
प्रकाशित  
जिन्हें स  
**अगस्त**

1. इस  
महीने  
विवे  
त्वाव  
मवेट
2. यीका  
हो जाए
3. प्रातः  
चढ़ा का
4. प्रातः व  
कर जा
5. प्रातः व  
सहस्र
6. आज व  
पूरे वि
7. प्राप्ति  
पर एव  
बोलक
8. आज ह  
बार उच्चारण
9. प्रातः व  
पुस्तक से ।
10. ॐ क  
कार्य पर जा
11. ३०

# गुरु ग्रन्थ साहित्य का विषय

किसी भी कार्य को प्राप्त करने से पूर्व प्रत्येक व्यक्ति के नन में सज्जा-अस्त्रय की भवना रहती है कि यह कार्य सफल होना या नहीं सफलता प्राप्त होगी या नहीं बखाएं तो उपरित्य नहीं हो जायेगी। या नहीं दिन का प्राप्त किस प्रकार से होगा, विन की समाप्ति पर वह लब्ध को तनावरहित कर पायेगा या नहीं।

प्रत्येक व्यक्ति को ऐसे उपाय अपने जीवन में अपनाना चाहता है, जिनसे उसका प्रत्येक दिन उसके अनुकूल एवं आनन्द दुक्ष बन जाय। कुछ ऐसे ही उपाय आपके समझ प्रस्तुत हैं, जो उचाहमिहिर के विदिध प्रकाशित-अप्रकाशित ग्रंथों से सकलित हैं, जिन्हें यहां प्रत्येक दिवस के अनुसार प्रस्तुत किया गया है तथा जिन्हें सम्पूर्ण करने पर आपका दूसरा दिन दूर्ज सफलतादायक बन सकेगा।

## अग्रस्त

1. इस इलोक को ५ बार पढ़कर जाएं महोत्कांच रूप विवशति भवद् भू प्रतिश्वति विवेति चिन्त्यं चिन्त्यं विवशति महोत्स्पर्श क्षियते। तवोन्मेषं रूपं पदम् पदं नंदं क्षुद्रयति भवेत्पूर्णं पुण्यं पुरुषमपवीत भव लिति ॥
2. घी का दोपक जलाकर शांत चित्त उस पर जितना संभव हो छाटक करें, इसके बाद ही बाहर जाएं।
3. प्रातः काल मणवती लक्ष्मी जी को ५ गुलाब के फुल चढ़ा कर ही काम कर जाएं।
4. प्रातः काल निखिल मुटिका का पूजन कर उभको धारण कर जाएं, आपके सभी कार्य बनेंगे। (न्यौद्धावर ८०)
5. प्रातः काल निखिल सुरक्षा कवच (डेव्हे पुस्तक निखिल सहस्रनाम) का पांच बार पाठ करें।
6. आज के दिन गुरु गुटिका का पूजन कर (न्यौद्धावर ६०) पूरे दिन अपने लाल रखें। मनवाड़ी सफलता मिलेगी।
7. पीपल के पते पर कुंकुम ये नवालिक का निर्माण कर अक्षत पर एक सुपारी रखकर पांच बार ॐ गं गणपतये नमः बोलकर उस पते को किसी मंदिर में चढ़ा दें।
8. आज हरयाली अमावस्या के दिन आप ॐ ही ही के का ५ बार उच्चारण करें।
9. प्रातः काल श्री लक्ष्मी सूक्त का पाठ करें। (विपुर सुन्दरी पुस्तक से)
10. ॐ कली कली कट मंत्र का ११ बार उच्चारण कर ही कार्य पर जाएं।
11. प्रातः काल विस्तर से उठने से पहले बाया पांच पहले जमीन पर रखें।
12. गुरु पूजन करके ही कार्य हेतु जाएं।
13. लद्वाक माला को धारण करें। (न्यौद्धावर ३००)
14. गुरु लित्र के समझ पांच बड़ी का दोपक जलाकर रख दें, विद्युत समाप्त होगी।
15. दूर्वा को मणवान गणपति पर चढ़ाकर कार्य हेतु जाएं।
16. तुलसी के वृक्ष में जल डालकर प्रदक्षिणा करें, कार्य में सफलता की सम्भावना बढ़ेगी।
17. ॐ ही सूक्ष्मिये नमो नमः का ११ बार उच्चारण कर कार्य प्रारम्भ करें।
18. आज पवित्र पकावली है मणवान विष्णु का ध्यान कर ॐ बायुदेवाये नमः का ११ बार उच्चारण करें।
19. प्रातः काल पीली सरसों को पांच बार अपने स्त्रिये पर से धुमाकर बाहर फेक दें।
20. प्रातः काल पांच पीले फूल द्वन्द्वान जी को अपित करें।
21. गुरु जन्म विक्रम के रूप में निखिलेश्वरानन्द स्त्रदम का पाठ करें। पूरे दिन गुरु स्मरण करें तथा नुरु सेवा का मंकल्प करें।
22. आज नद्दा बंधन के ध्रुभ अवरार पर पांच गुलाब के पुष्य गुरु चित्र पर अपित कर घी का दीपक लगाएं।
23. उड़व की दाल दान हेतु निकाल कर ही कार्य पर जाएं।
24. मीठी वस्तु का मीठ मंविर में चढ़ाएं।
25. एक पात्र में जल लेकर उसमें पुष्य कुंकुम अक्षत डालकर किसी भी वृक्ष की जड़ में डाल दें।
26. प्रातः काल शक्ति विनायक मंत्र ॐ ही ही ही का ५१ बार जप करें। अनेष्ट हेता।
27. चूटकी भर नमक दरवाज पर डालकर कार्य हेतु जाएं।
28. किसी मंदिर में अनाज देने से कार्य में सफलता मिलेगी।
29. आज गुरु मंत्र का निरन्तर जप करते रहें।
30. सौभाग्य गुटिका (न्यौद्धावर ६०) को धारण करें।
31. मणवान श्री कृष्ण का पंचामृत से अभिषेक कर ही वर से बाहर नाएं।

दि. २२-८-२००२

जीवन रक्षा क्रवच का समय आप के हाथ में है  
पूर्ण रूप से जानिए  
और क्रिए

# आरक्षा समाप्ति

बर्मान युग में हर व्यक्ति सदैव भयभीत और सशक्ति लड़ता है, उसे हर समय एक आशंका बनी रहती है कि जे जाने आने वाले धर्म में क्या होगा? जब तक ग्रीष्मन में निश्चन्द्रता का भाव नहीं आ जाता, तब तक व्यक्ति अपने कार्यों को पूर्ण बढ़ा कर सकता है, जही वह अपनी शक्ति का पूर्ण उपयोग कर सकता है, क्योंकि उसकी आधी शक्ति तो अपनी रक्षा करने में ही व्यक्ति हो जाती है, क्या हम साधना के द्वारा अपने चारों ओर एक सुरक्षा चक्र नहीं बना सकते हैं? प्रमाण स्वरूप प्रस्तुत है— ‘आरक्ष साधन’ इस के सम्बन्ध करने से आपके चारों ओर एक सुरक्षा क्षेत्र स्थापित हो जाता है—

सदियों से चली आ रही परम्परा... बहिन द्वारा भाई के को सम्पन्न की जा सकती है।  
हाथ में बांधा जाने वाला एक डोरा... ‘रक्षा नूत्र’ जो प्रतीक रक्षाबन्धन एक पवित्र त्यौहार है, भाई-बहिन के बीच है सम्पूर्ण जीवन भाई अपने लहित की रक्षा करेगा ही।

है, और  
भाई के  
प्रखरता  
होने लग  
बलवान  
वह उस  
उसकी ज  
लोग जा  
‘रक्षा बन  
मुगल  
राज्य की  
अकबर  
भेजा ओ  
उसके बा  
के सुप में  
जब वि  
का बन्ध  
चाह वह  
बांधा जा  
सके, औ  
स्त्री ही बा  
पुरुष भी  
सकता है।  
यह मान  
बदहर से  
में सुख श  
महसूस हो  
इस मान  
की गावा

है, और साथ ही चेतना नाड़ी के स्पन्दित होने पर उस भाई के अंतर्मन में आत्मविश्वास, दृढ़ता, सजगता, बल, प्रखरता और तेजस्विता जैसे गुणों का स्वरूप ही समावेश होने लगता है, जिसके कारण वह अपने आप को अधिक बलवान महसूस करने लगता है, और यही कारण है कि वह उस दिन बहिन को यह वचन दे डालता है, कि वह उसकी जीवन पर्याप्त रक्षा करेगा। यह बात बहुत कम लोग जानते हैं, किन्तु यही सत्य है तभी तो इस दिन को 'रक्षाबन्धन' के नाम से जाना जाता है।

मुगलकाल में जब गर्नी पदमावती ने अपनी तथा अपने राज्य की सुरक्षा भावना को ध्यान में रखकर मुगल सम्राट् अकबर के पास भारतीय प्रम्परा के अनुसार रक्षा सूत्र भेजा और समाट को 'भाई' शब्द से सम्बोधित किया, उसके बाव से ही रक्षाबन्धन का पर्व भाई-बहिन के त्वौद्वार के रूप में स्थापित हुआ।

जबकि ऐसा नहीं है, यह तो एक पवित्र बन्धन है, रक्षा का बन्धन है, जो भाई के अलावा अन्य किसी को भी चाहे वह पिता हो, पुत्र हो या प्रेमी हो अपनी सुरक्षा हेतु बांधा जा सकता है, जो कि उसकी जीवन भर रक्षा कर सके, और न ही यह जरूरी है कि यह सूत्र एक बहिन या स्त्री ही बाधे, ऐसा कहीं नहीं लिखा है, यह बन्धन तो एक पुरुष भी अन्य किसी पुरुष को अपनी रक्षा हेतु बांध सकता है।

यह मानव जीवन हर क्षण चिंताओं और परेशानियों के बबड़र से छिर रहता है, जिसके लिए हर किसी को जीवन में सुख शांति हेतु किसी ऐसी सुरक्षा की आवश्यकता महसूस होती है, जो इस बबड़र से उसको निकाल सके।

इस मानव जीवन में व्यक्ति को तीन प्रकार के परिताप ही प्रमुख रूप से दृष्टिगोचर होते हैं, जो उसके जीवन को कष्टप्रद बना देते हैं—

१. दैविक, २. दैहिक, ३. भौतिक।

१. दैविक

दैविक का अर्थ है, देवताओं से सम्बन्धी कष्ट, जैसे भूकम्प का आ जाना, अकाल पड़ जाना, अकस्मात् आग

लग जाना तथा इसके अतिरिक्त भूल-प्रेत का प्रभाव व्यक्ति को भोगने पड़ जाते हैं, और ऐसी महामारी या छुआछुन की बीमारी, जिससे गांव के गांव समाप्त हो जाये, यह सब भी 'दैवी प्रकोप' ही कहा जाता है।

२. दैहिक

दैहिक का अर्थ है—देह से स्पष्ट-चिन्तन, अर्थात् देहगत। किसी भी प्रकार के रोग से होने वाले शारीरिक दुःख को 'दैहिक' कहा जाता है, जैसे पेट बर्द, लिंग बर्द आदि।

३. भौतिक

भौतिक कष्ट अर्थात् ऐसे कष्ट, जो भावनात्मक रूप से मानसिक सूप से व्यक्ति को कष्ट देते हैं, जिनका प्रभाव उसके निजी जीवन में, उसके पारिवारिक जीवन में पड़ता ही है, जैसे—मुकदमेबाजी, बेरोजगारी, धन का अभाव, रोगमरी की छोटी-बड़ी समस्याएं, लडाई-अग्निहत्यादि, जिससे व्यक्ति पीड़ित व दुखी हो जाता है।

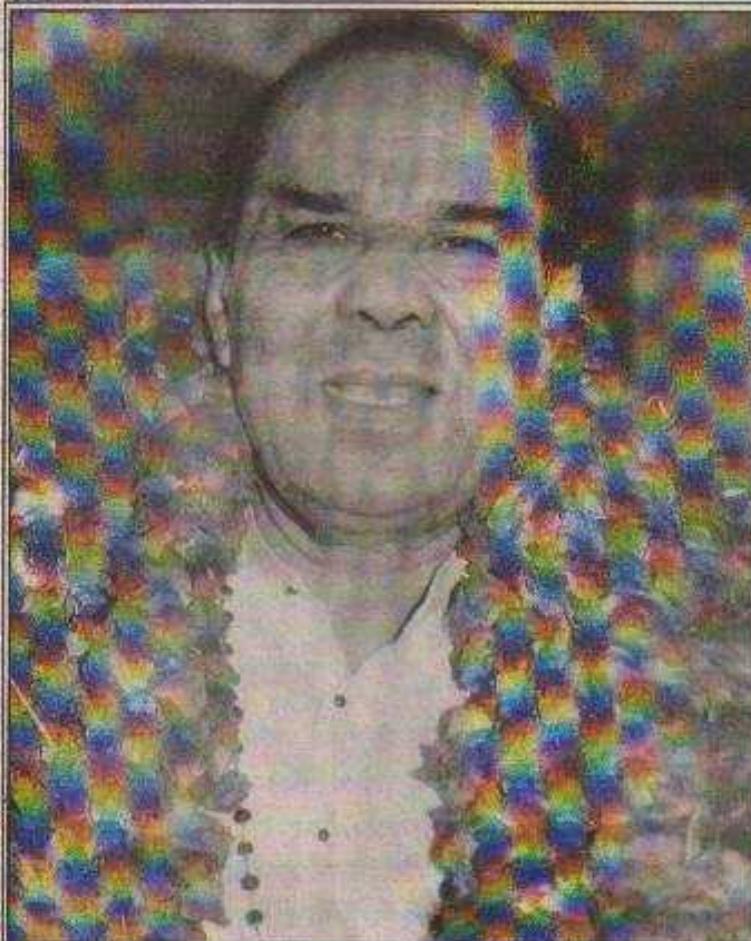
इस प्रकार व्यक्ति का धूरा जीवन ही इन तीन प्रकार के परितापों से शक्ति रहता है, जिसके कारण उसका जीवन कष्टप्रद एवं निराशाजनक बन जाता है, और वह अपने आप को हर पल असुरक्षित सा महसूस करने लग जाता है, फिर उसके जहन में यही प्रश्न उठते हैं कि—

— क्या इन दुखों से छुटकारा पाया जा सकता है?

— क्या अपने जीवन को सुखी व समृद्ध बनाया जा सकता है?

— और इसके लिए व्यक्तिको आवश्यकता पड़ती है एक ऐसे द्वाल की, जो उसके जीवन को सुखमय बना सके और उसके दुखों का नाश कर सके।

यह तीव्र प्रतिस्पर्धा का युग है। आप चाहें या न चाहें, विघटनकारी तत्व आप के जीवन की लद, क्रमबद्धता, शांति, सौहार्द मंग करने का प्रदास करते ही रहते हैं। शत्रुओं के रहते व्यक्ति हमेशा चिंतित बना रहता है, वह हर क्षण यहीं चिन्ता में खोया रहता है कि शत्रुओं से कैसे मुकाबला



संतापो से मुक्ति प्राप्त कर लेता है।

कलियुग में तो इस यंत्र का प्रभाव पर्याप्त देखा जा सकता है, शत्रुओं से, चाहे वे शत्रु दैविक हों, दैहिक हों अथवा भौतिक हों, पूर्णतया बचा जा सकता है, क्योंकि शत्रुओं पर छावी छोने, बलवान् शत्रुओं का मान-मर्दन करने, भूत-प्रेत आदि को दूर करने एवं समस्त प्रकार की उन्नति करने में वह यंत्र श्रेष्ठतम् माना गया है।

भारत के लगभग सभी तांत्रिकों एवं मात्रिकों ने एक स्वर में यह स्वीकार किया है, कि इस यंत्र के समान अन्य कोई यंत्र या विधान ऐसा नहीं है, जो कि इतने बेग से और तुरन्त प्रभावशाली हो सके, अतः विशेष अनुष्ठान या मंत्र जप के द्वारा जो 'आरक्ष यंत्र' सिल्ल किया जाता है, वह तुरत कार्य सिद्धि में सहायता प्रदान करता ही है।

'आरक्ष साधना' इस दृष्टि से प्रत्येक किया जाय... और वह अपना सर्वस्व नंदा देता है। शत्रुओं व्यक्ति के लिए महत्वपूर्ण है, और रक्षाबन्धन के दिन इस के रहने सुखपूर्वक जीवन व्यतीत करना उसके लिए साधना को

हो जाता सुरक्षा प्र इस बेसब्री स उठाकर रक्षाबन्ध दिन सारे रोज—शी उन्नति है। सामर विवस समय १२.०० विधि साधन होकर, य को समझ आशानि अन्य कि को छोड़ जायें।

हो जाता है, जो कि एक ढाल बनकर उसके जीवन को सुरक्षा प्रदान करता है।

इस दिन की योगीजन, संन्दासी व ऋषि-मुनि बड़ी बेसब्री से प्रतीक्षा करते हैं, जिसमें कि वे इस दिन का लाभ उठाकर शीघ्र सिद्धि व सफलता प्राप्त कर सकें, क्योंकि रक्षाबन्धन में ही पूर्ण रक्षा का रहस्य छिपा है, और इस दिन साधना करने पर अपने जीवन में समस्त प्रकार के रोग-शोक, दुःख-दैन्य आदि से मुक्ति प्राप्त कर जीवन में उन्नति प्राप्त करते हुए उसे पूर्ण सुरक्षित बनाया जा सकता है।

**सामग्री—** आरक्ष यंत्र, सुरक्षा माला, तीन अभ्यगुटिका

**विवर—** रक्षाबन्धन () या किसी भी गुरुवार को

**समय—** प्रातः पांच से आठ बजे था रात्रि ६. ४५ से १२.०० बजे के लगभग।

**विधि—**

साधक सर्व प्रथम स्नानादि एवं नित्यकर्म से निवृत होकर, शांत एवं प्रसन्न मन से इस विशेष दिन के महत्व को समझकर व साधना से होने वाले लाभ के प्रति आशान्वित होकर अपने पूजागृह में काले रंग के अतिरिक्त अन्य किसी भी रंग के आसन पर बैठ जाय, तथा दक्षिण को छोड़कर किसी भी दिशा में अपनी इच्छानुसार बैठ जायें।

फिर अपने सामने गुरु चित्र स्थापित कर, उसके सामने किसी भ्लेट पर कुमकुम से चिकोण बनाकर उस पर 'तीनों अभ्यगुटिकाओं' को और ये तीनों गुटिकाएं तीनों परितायों की निवारक हैं, जो हमें सतत सुरक्षा प्रदान करती हैं, तथा पुनः हमारे जीवन में इन ब्राह्मणों का प्रवेश नहीं होने देती, एक-एक कोण पर रख दें, तथा मध्यमें 'आरक्ष यंत्र' को स्थापित कर दें, इसके बाद चित्र, यंत्र एवं गुटिकाओं पर कुमकुम, अक्षत चढ़ा दें, और तीनों कोणों में तीन तेल के दीपक प्रज्वलित करें, जिसका आशय है, तीनों प्रकार के ताप से परिमुक्त होकर साधक के जीवन में सौभाग्य रूप प्रकाश का विस्तारित होना। इसके पश्चात् साधक अपने इष्ट या गुरु का मन ही मन ध्यान करें तथा '०

माला गुक मंत्र जप करें। आरक्ष यंत्र और तीनों अभ्यगुटिकाओं का धूप, दीप, पुष्प आदि से वथाविधि पूजन करके शुद्ध धी का हलवा बनाकर भोग लगायें। इसके बाद साधक 'सुरक्षा माला' से लिम्न मंत्र का ११ माला जप करें।

**मंत्र**

॥ ॐ ह्रीं आरक्ष आरक्ष ह्रीं फट ॥

मंत्र जप की समाप्ति के पश्चात् वह जल अपने दाढ़े-बाढ़े थोड़ा-थोड़ा गिरा दें, और आरक्ष यंत्र की लाल धाने में पिरोकर तथा सुरक्षा माला को गले में धारण कर लै, परन्तु तीनों गुटिकाओं को घर से बाहर किसी भी एकान्त जंगल या सुनसान जगह पर नाड़ आये, लौटने समय पीछे मुड़कर न देखें। हलवे के भोग को स्वयं ग्रहण करें तथा परिवार में वितरित कर दें। माला तथा यंत्र को पन्द्रह दिन तक धारण करने के पश्चात् उन्हें नदीया तालाब में विसर्जित कर दें।

इस प्रकार यह साधना अपने—आप में अद्वितीय एवं प्रभावकारी है, जो शीघ्र ही लाभ देकर साधक को समस्त पापों—तापों से मुक्त कर सुख, सौभाग्य, और अभ्यग्रदान करती है। प्रत्येक साधक को समय विशेष का महत्व समझते हुए, उसका लाभ उठाकर इस एक दिसीय साधना को अवश्य ही सम्पन्न करना चाहिए।

साधना में स्थापित यंत्र प्राण—प्रातिष्ठित एवं मंत्र सिद्ध होना चाहिए। ध्यान रखें कि साधना काल में वे तीनों दीपक बराबर जलते रहें।

**आप अपने ह्रीं मित्रों को प्रतिका लक्ष्य बनाए तथा कार्ड के ८ पर अपने होड़ों मित्र का पता लिखकर भेजो कार्ड लिलने पर रूपये ४००/- की दी. पी. फ्लार आपको इस साधना की भंज मिह प्राण प्रतिष्ठा युक्त सामग्री भेज देंगे ताकि होड़ों मित्रों को एक वर्ष तक नियमित रूप से प्रतिका भेजी जायेगी।**

**जीवन जीना है तो आनंद के साथ जीएं  
यह समझवा है केवल साधक के लिए**

तथा शा  
जिनमें सि  
की रचन  
आधार  
शक्ति औ  
और इन  
रहा, वह  
“आ  
क्षणिक ज  
जल तत्त्व  
अरा प्रग  
प्रगति

तथा शक्ति के संयोग से कुछ विशेष शक्तियां उत्पन्न हुईं, जिनमें शिव भाव भी था, शक्ति मात्र भी था, और इन शक्तियों की रचना एक महान मिलान के कारण हुई थी, जिसका आधार आनन्द तथा दिव्य भाव था, इसीलिए इन विशेष शक्तियों में रूप और सौन्दर्य के तीव्रतम स्वरूप प्रगट हुए, और इनके गुणों में, इनके प्रभाव में जहां शिव भाव नाप्रत रहा, वहीं शक्ति भाव नो साक्षात् स्पष्ट में था ही।

‘आनन्द भैरवी’ का स्वरूप अल्लड़नदी की भाँति है, क्योंकि इसमें शिवत्व है, निश्चन्नता है, प्रभन्नता का मीठा जल तत्व है, दूसरी ओर इसमें देवी के सौन्दर्य का प्रत्येक अंश पूर्ण सूप से विद्यमान है, शारीरिक वृष्टि से यह सर्वांग सम्पूर्ण है, ‘नद्रयामल तन्त्र’ में लिखा है, कि कलियुग में साधक तो अपने स्वार्थ स्वरूप, अपनी इच्छा स्वरूप, अपनी सांसारिक कामनाओं की पूर्ति हेतु साधना करता है, उसे शिव तक आने की क्या आवश्यकता है, उसे तो मेरे स्वरूप ‘आनन्द भैरवी’ में ही सभी सांसारिक सुख प्राप्त हो जाते हैं, और वहीं उनके लिए सरलतम रूप से साध्य है।

आदिशक्ति देवी की साधना करते समय साधक एक मन्त्र भाव, समर्पणभाव, निवेदन भाव, दिव्य भाव रखता है, वहीं आनन्द भैरवी की साधना प्रेम भाव साधना है, जिसमें उसे अपनी प्रिया, अपनी मित्र, रूपमें सिद्ध किया जा सकता है, जब प्रिया रूप से कोई किसी को अपनाता है तो वह उसमें भेद नहीं रखता, अपनी सारी कमियों को खोल कर सख्त नहीं है, अपनी इच्छाओं के द्वारा खोल देता है, और आनन्द भैरवी सहयोगी बनती है, हर क्षण उन सभी क्रियाओं को पूर्ण रूप से सम्पन्न कराने में, क्योंकि इसमें शिद्धि प्राप्त साधक प्रियतम बन जाता है, और प्रिया का तो कर्तव्य है, कि उसका प्रियतम हर वृष्टि से पूर्ण हो, उसके जीवन में आनन्द ही आनन्द हो, वह व्रेष्ठतम बन सके।

‘परमानन्द तंत्र’ में आनन्द भैरवी के स्वरूप, व्याख्या एवं विधान के सम्बन्ध में विस्तार से लिखा गया है, आनन्द भैरवी शिव का अच्छानारी शब्द स्वरूप है, अतः जो

साधक इसे सिद्ध कर लेता है, उसके साथ आनन्द भैरवी पूर्णरूप से जुड़ जाती है।

खुले लघुराते लम्बे केश, गोल चक्र समान, स्वर्ण के गोसमान दीपि देता हुआ चेहरा, जिसमें अलसाये से आनन्द तुषि भाव लिये बड़े नेत्र, वृष्टि में काम भाव, घोड़े मोटे अधम्बुले होंठ, शरीर में बल, ठोस संरचना, केवल एक अद्वितीय धारण किये हुए, आनन्द भैरवी का स्वरूप केलास कन्दा का स्वरूप है, जिसमें शुद्धता, निश्चलत्व और प्रेम रस से सरोबार व्यक्तित्व है।

### आनन्द भैरवी साधना

■ जिब साधक शक्ति को प्राप्त करने में समर्थ हो जाता है, तभी तो उसके जीवन में आनन्द का सामान्य लघुरा सकता है, और आनन्द भैरवी की साधना शक्ति और आनन्द दोनों का संयुक्त स्वरूप है।

■ पीड़ा चाहे मन की ही अथवा तन की, पीड़ा का प्रभाव पूरे व्यक्तित्व पर, उन्नति पर, कार्यों पर पड़ता है, आनन्द भैरवी साधना जिस प्रिया स्पष्ट में सिद्ध हो जाती है, उस साधक के मन तथा तन दोनों की पीड़ाओं का पूर्ण रूप से नाश करती है।

■ आर्थिक दृष्टि से दुखी व्यक्ति अपने जीवन में आनन्द के उपभोग की केवल कल्पना ही कर सकता है, लेकिन आनन्द भैरवी साधना ये उसके जीवन में आर्थिक वृष्टि से विशेष स्थिति प्राप्त होती है, जिससे वह जीवन के हर रूप का आनन्द ले सके।

■ जो ज्यादा जानकार है, जो अपने को महापंडित समझते हैं, तर्क के स्थान पर कुनर्क करते हैं, उन्हें यह साधना सिद्ध नहीं हो सकता, क्योंकि आनन्द भैरवी तो सरल, निश्चल, समर्पित, व्यग्र, इच्छावान साधक की ही स्वीकार करती है।

■ आनन्द भैरवी साधना पूर्ण रूप से सिद्ध हो जाने के पश्चात् किसी भी संकट के समय, किसी भी कार्यके समय साधक ध्यान करता है, तो तत्काल उपस्थित होती है, और साधक को उस समस्या का समाधान प्रदान करती है।

आवश्यक भैरवी की साधना प्रेम भाव साथवा  
है, जिसमें उसे अपनी प्रिया, अपनी मित्र,  
कपमें लिहूँ किया जा सकता है, जब प्रिया  
कप से कोई किटी को अपनाता है तो वह  
उसके भेद नहीं रखता, अपनी आरी  
कमियों को खोल कर रख देता है, अपनी  
इच्छाओं के द्वारा खोल देता है, और आवश्यक  
भैरवी नहीं बनती है, हर क्षण उक वाभी  
कियाओं को पूर्ण क्षय से अम्बजन कराने में,  
वर्षों के इसमें लिहिए प्राप्त साधक प्रियता

करते हुए

बहु जाती है, और प्रिया का तो कहतव्य है,  
कि उसका प्रियतम हर दृष्टि से पर्याप्त ही  
प्राप्ति करनी चाही

भैरवी चक्र साधना में साधक को एक दृढ़ संकल्प बनाना पड़ता है, कि मैं हर हालत में, हर स्थिति में आनन्द भैरवी स्थिर प्राप्त कर के ही रहूँगा, इस साधना में दीन-हीन भावना, याचना उचित नहीं है।

मैरी साधना की सिद्धि 'शिव और शक्ति' दोनों  
को ही सिद्धि है।

## आगाव्य मैरवी साथला दिंयान

धैरयी साधना शान्त मन से, इदय में सुन्दर भावों को स्थिर कर प्रसन्न मन से, एकान्त स्थान में सापन्न करनी चाहिए। जहाँ साधना के समय किसी प्रकार का

प्रेरणा साधना में मूल रूप से चाइ पत्र विशेष कम

प्राप्ति देखने की विषय बन जाएगी। अब यह आपका लिंग नहीं है, इसका लिंग आपकी विश्वासीता है। आपकी विश्वासीता वह है कि आप अपनी विश्वासीता को अपनी विश्वासीता के साथ रख सकते हैं। आपकी विश्वासीता का अपना लिंग है। आपकी विश्वासीता का अपना लिंग है। आपकी विश्वासीता का अपना लिंग है। आपकी विश्वासीता का अपना लिंग है।

तो यहाँ की जाति नहीं है।  
वहाँ वह बड़ा देखा जाएगा।  
लेकिं अपने जाति के लोगों  
में से आपका उद्धरण नहीं है।  
तो तुम के बारे में क्या कहा जाएगा?  
जब तक तुम अपनी जाति के लोगों  
में से नहीं बढ़ा जाएँगे।  
यद्यपि तुम अपनी जाति के लोगों  
में से नहीं बढ़ा जाएँगे।  
तो तुम के बारे में क्या कहा जाएगा?

## १४१ अनन्द

आनन्द भैरवी देवी वराभयलसत्कराम ।  
मोरक्षपां वरारोहा त्रिनेत्रां रत्नवाससम् ॥  
रत्नवर्णा महरीद्रौ सहस्रभैरवान्विताम् ।  
ब्रह्माविष्णुमहेशायै स्तूपमानां शिवां भजे ॥

ये चार पात्र आनन्द, रूप, रस और काम के स्वरूप हैं, सर्वप्रथम प्रथम पात्र का पूजन कर अनन्द चढ़ा कर इसके शहद में 'आनन्द भैरवी यन्त्र' डाल दें, अब पृष्ठ चढ़ाए तथा धूप और दीप अर्पित करें, तथा अपने पास रखे हुए १०८ भैरव बीजों को हाथ में लेकर, निम्न मन्त्र का जप करते हुए एक-एक बीज पात्र के सामने अर्पित करें, आगे सभी पात्र पूजन में इन्हीं भैरव बीजों का प्रयोग और नियमों का पालन करें।

मन्त्र

॥ॐ सुधावेदी विद्वहे सुधा देवी  
धीमहि तत्रो देवी प्रचोदयात् ॥

अब दूसरे पात्र जिसमें दूध का भिष्मान रखा हुआ है, उसमें 'आनन्द भैरवी यन्त्र' डालें, फिर उसका पूजन कर निम्न मन्त्र का जप करें और १०८ भैरव बीज चढ़ाए।

मन्त्र

॥ॐ हौं क्षो मांसं शोधय शोधय  
ओ हौं क्षो स्वाहा ॥

अब साधना का तीसरा क्रम रसपात्र साधना है, इसमें धी विधान उपर लिखे विधानों की तरह ही है इस पात्र में 'आनन्द भैरवी यन्त्र' डालें फिर भैरव बीजों को पात्र के सामने निम्न मन्त्र जप करते हुए अर्पित करें—

मन्त्र

॥ऐ हौं ब्लूं ऐ सौं ब्लूं सः सः सः  
इमें मीनं शोधय शोधय स्वाहा ॥

अब काम पात्र का पूजन कर उसमें 'इच्छामति मुक्रिका' डाल दें, फिर भैरव बीजों को अर्पित करते हुए निम्न मन्त्र का जप करें—

मन्त्र

॥ब्लूं न्तुं स्तुं ग्लुं ग्लुं स्वाहा अमृते

ऋग्वेद 'जुलाई' 2002 संब्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान '71'

अमृतोदभवे अमृत व विष्णि

महत्प्रकाशयुक्ते अमृत स्वावय स्वावय स्वाहा ॥

अब यह क्रम पूरा हो जाय तो आनन्द भैरवी का ध्यान करते हुए, अपनी इच्छाओं को स्पष्ट रूप से प्रगट करते हुए, क्रम बद्ध रूप से पात्र में रखा हुआ द्रव्य स्वयं प्रसाद के रूपमें ग्रहण कर लें, इसलिए प्रत्येक पात्र में उतना ही द्रव्य रखें, जितना ग्रहण करने की क्षमता हो।

अब साधक उसी स्थान पर नेत्र बन्द कर निश्छल हो कर आनन्द भाव से थोड़ी देर बैठा रहे, इस समय कुछ विशेष अस्पष्ट दश्य दिखाई देते हैं, एक मार्ग दिखाई पड़ने लगता है, किसी साधक को बन-उपवन दिखाई देता है, किसी को कोई सौन्दर्य स्वरूप दिखाई देता है, इससे यह निश्चित हो जाता है कि साधना सही दिशाकी और अद्वासर है।

साधना का यह क्रम चार शुक्रवार तक करें, प्रत्येक शुक्रवार को सामर्थ्य वही रखनी है, पात्र वही रखने हैं, भैरव बीज वही रखना है।

तीसरे शुक्रवार तक स्थिति ऐसी बनने लगती है, कि साधक यह अनुभव करता है, कि वह साधना में अकेला नहीं बैठा है, कोई उसके पीछे खड़ा है, कुछ ध्वनियां सुनाई देने लगती हैं, एक सुगन्धित, आनन्दमय वातावरण बनने लगता है।

चौथे शुक्रवार को साधना पूर्ण होते होते साक्षात आनन्द भैरवी अपने लमस्त सौन्दर्य भाव के साथ प्रगट होती है, उस समय साधक अपनी प्रिया सप में बनाने हेतु बचन बोले, भैरवी साधक का प्रसन्नाव स्वीकार करती हैं, और इच्छित वर देती हैं।

इसके बाद जब भी साधक अपने किसी कार्य से, अपनी इच्छा हेतु आनन्द भैरवी का ध्यान करता है, तो भैरवी तत्काल उपस्थित होती है, यह साधना वास्तव में तन्त्र साधना की ऐसी विशिष्ट साधना है, जो हर साधक अपने जीवन को पूर्ण स्वरूप से सुखी भावमय बनाने के लिए सम्पन्न कर सफलता प्राप्त कर सकता है।

साधना सामग्री = ३००/-

नाम की

नाम की कोई चीज़ न आए।

— रामदुलार पठेल, कुसमुण्डा,  
कोरबा, छत्तीसगढ़

### गुरु कृपा से पत्नी स्वस्थ हुई

गुरुदेव के चरणों में कोटी कोटी नमन मेरी पत्नी रामदुलारी राधा को साधक श्री कुंवर सिंह ने गुरुकृपा की चर्चा सुनाई तो मेरी पत्नी राधा ने मुझे गुरुदीक्षा लेने के लिए कहा। फिर मेरे ऊपर गुरुकृपा हुई और लखनऊ शिविर १३.४.२००२ को गोमती नदी के किनारे शनिवार नवदुर्गा शिविर में भाग लिया गुरु जी ने मुझे गुरुदीक्षा प्रदान की मेरी पत्नी राधा के सिर में दर्द कई मछों से चल रहा था बढ़ा करने पर भी ठीक नहीं हुआ। दीक्षा के बाद २५ दिन पश्चात मैंने गुरु मंत्र की ११ माला पांच दिन करने का निष्ठुर किया। गुरु मंत्र का यह कार्य पूरा होने होते मेरी पत्नी का सिर वर्व पूर्ण रूप से समाप्त हो गया।

— मर्वन सिंह मोहन,  
ललितपुर, (उ. प्र.)

### गुरु कृपा से बीमारी से मुक्ति पाई

हे गुरुदेव मैं वह क्षण नहीं भूल सकता जब आपने मुझे बीमारी से मुक्ति दीलाई पिछले तीन साल से मुझे खांसी और कफ की आता था मैंने कई बार डाक्टर से इलाज भी करवाया थोड़ा आराम आता और जब कहीं बाहर चला जाता तो खांसी और अधिक बढ़ जाती मैं दुबला पतला और कमज़ोर हो जाया था, मेरे हालत से घर के सब लोग परेशान थे, मैंने पत्रिका में घढ़कर हेरम्ब गणपति यंत्र और हेरम्ब माला मंगवाई यह साधना ३१ दिन की थी उसमें रोज एक माला गुरु मंत्र और पांच माला हेरम्ब गणपति मंत्र करना था मैंने २६.२.२००२ को साधना प्रारम्भ की १४.३.२००२ को रात्रि में गुरुदेव का वर्षन हुआ गुरुदेव ने मुझे कुंकुम से रगे हुए चावल दिये और मैंने वह चावल अपने पाल रखे, गुरुदेव ने मुझे ठीक होने का आशीर्वाद दिया और अन्तर्ध्यान हो गये फिर नींद से जाग गया उस समय सुबह के ५.३० हुए थे और उठने के बाद मेरे गरीब से

कई तरह की तरों हो रही थी मेरी खांसी कफ एकदम से बढ़ हो गया मैं गुरुदेव को बार बार प्रणाम करता रहा मेरी खुशी का तो कोई उम्माना ही नहीं रहा उस दिन से मैं आज तक स्वस्थ हूं। मैंने बिना गुरुदेव से दीक्षा लिये ही रोग से मुक्ति मिल नहीं। फिर मैंने २० अप्रैल २००२ को जिला सायुर शिविर में जाकर गुरुदेव से दीक्षा ली और उस दिन से मेरे जीवन में आनंद खुशी और स्वस्थता है। हे गुरुदेव ऐसी ही कृपा बनाए रखना।

— छन्दू राम धुब्र मेनपुर  
जिला रायपुर

### मंत्र साधना से कार्य सिद्धि

मैंने आपसे निवेदन किया था कि मुझे अपनी मासिक पत्रिका की स्वस्थता दें। आपने मेरा निवेदन स्वीकार कर मुझ पर बढ़ी कृपा की। मुझे १३.४.२००२ को गणपति यंत्र प्राप्त हुआ जिसको मैंने आपके निर्देश अनुसार बुधवार के दिन स्थापित किया और ५ से ६ के बीच गणपति मंत्र का जप भी किया।

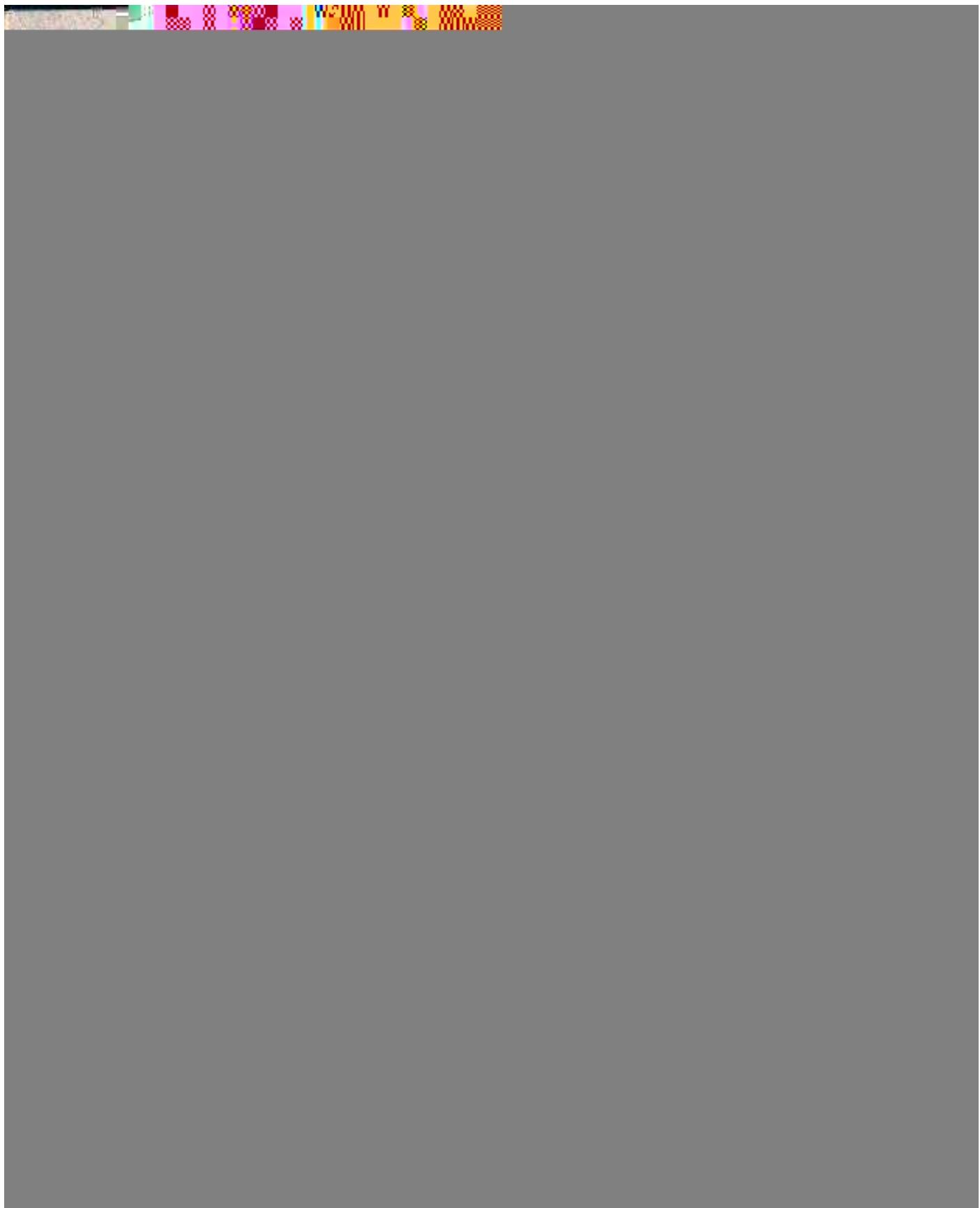
इस यंत्र को पूजा स्थान में स्थापित कर दिया जिस दिन से मेरे पास वह यंत्र पहुंचा है उस दिन से मेरे काम में वृद्धि हुई है। मैं कपड़े का काम करता हूं अब बिक्री भी बढ़ गई है। साधना में और यंत्र में शक्ति होती है अब वह मुझे पूरा विश्वास हो गया है।

— बलवीर सिंह, सरकारी अधिकारी, मंडी हिमाचल प्रदेश

### गुरु कृपा से जात बची

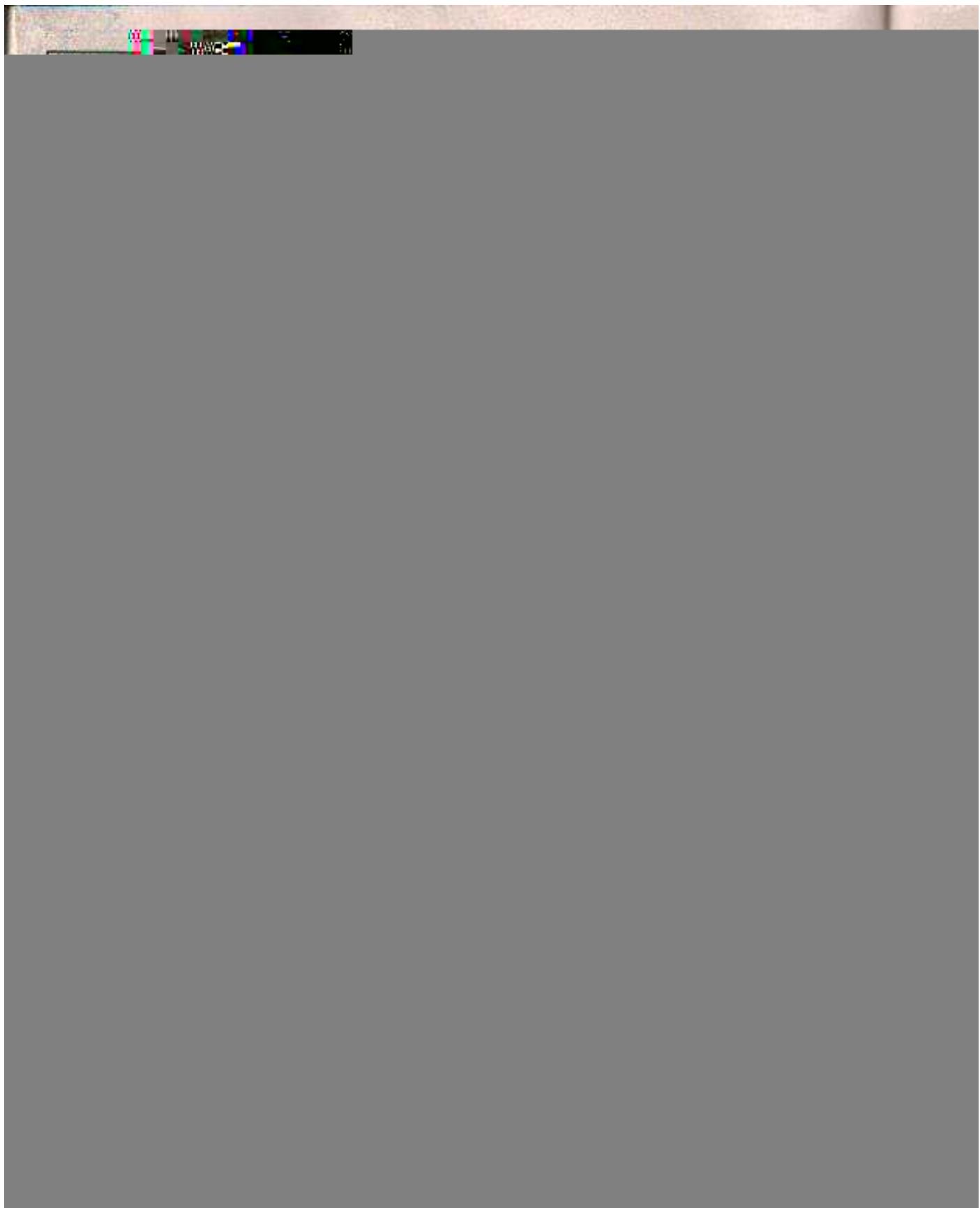
मैं न्यायलय नायब तहसीलदार उमरीया पान जिला कट्टनी म. प्र. में लिपिक पद पर कार्यरत हूं। दिनांक १४.२.२००२ समय दोपहर के दो बजकर बस या पन्द्रह मिनट पर मेरा अपने आफिस के सामने एक मारुती बाहन से एकसीडेन्ट हो गया। मैं मारुती बाहन से टक्कर लगने पर करीब साल फूट तक आगे उछल गया, फिर भी सद्गुरुदेव की कृपा से मेरे खरोच भी नहीं आई और मैं मृत्यु से बच गया। सद्गुरुदेव के चरणों में शत शत नमन स्वीकृत हो।

— सतेन्द्र सिंह लिपिक उमरीया पान जिला कट्टनी म. प्र.



बक वहित संस्थं त्रि मूर्त्यां प्रजुषं,  
 शशाङ्केन युक्तं तवाद्यं स्व- बीजम् ।  
 सुवर्णं प्रभं ये जपन्ति त्रि शक्ते,  
 श्रियं सीभगत्वं लभन्ते नरास्ते ॥२  
 नभो वायु मित्रं ततो वाम नेत्रं,  
 सुधा- धाम विम्बं नियोज्यैक वक्त्रम् ।  
 द्वितीयं स्व बीजं सुर श्रेणि वन्द्यं,  
 त्वदीयं विभाव्य श्रियं प्राप्नुवन्ति ॥३  
 विशिष्टं क्षितिस्त्वं ततो वाम-नेत्रं,  
 विधुं नाव युक्तं दिने शाभ बीजम् ।  
 विभाव्यैव सम्मोहयन्ति त्रिलोकीं,  
 जपादीश्वरत्वं लभन्ते नरेन्द्राः ॥४  
 त्रयं सत्त्वियोज्य स्मरारि प्रिये ये,  
 त्रि सन्दृशं जपन्ति त्वदङ्गं विभाव्य ।  
 न तेषां रिपुवाकं प्रयोगं करोति,  
 स्मरास्तेऽङ्गनानां गृहे श्रीस्तु तेषाम् ॥५  
 मुखे भारती गद्य- पद्य प्रबन्धा,  
 न हिंसन्ति हिंसा: सुरास्तात्रमन्ति ॥  
 तदंशि द्रव्यं भूषणं मूळिन राजाम् ,  
 करे सिद्धयो दुर्घटास्तास्त्वयजन्ति ॥६  
 वने पारिजात दृमाणां पृथिव्याम् ,  
 सुवर्णं प्रभायां मणि व्यूहं गेहे ।  
 स्मरेद वेदिकाया लसद रत्नं सिंहासने,  
 पदममष्टारम् संविचिन्त्य ॥७  
 स्फुरत् कणिकायां पर योनि युग्मम् ,  
 तदन्तर्गतामुष्णं हेमं प्रभां याम् ।  
 लसत कुण्डलामिन्दु वक्त्रां त्रिनेत्राम् ,  
 स्फुरत् कम्बु कण्ठां सु वक्षोज नप्राम् ॥८  
 महा रत्नं वज्रोल्लसद् बाहु वृन्दैः  
 सु पदम द्रव्यं पाशकं कार्मुकं च ।  
 सुवर्णाकुशं पुष्प बाणान् वधानाम् ,

बृहद रत्नं भूषां सु मध्यां सुकाञ्चीम् ॥९  
 तुला कोटि रस्य स्फुरत् पाव पदमाम् ,  
 किरीटाधलङ्कारं युक्तां प्रसन्नाम् ।  
 सिते चामरे वर्णं तत् करण्डम् ,  
 समुद्रं सु कर्पूर पूर्णं धृताभिः ॥१०  
 त्रिलोकी विधात्रीं जगत् ताप हर्तीम् ,  
 जगत् क्षोभ कर्त्रीं जगल्लोक धात्रीम् ।  
 सदानन्दं पूर्णं हकारार्द्धं वर्णाम् ,  
 त्रि विन्दु स्वरूपां त्रि शक्तिं भजामि ॥११  
 चिरं चिन्तयित्वा तदेतत् स्वरूपाम् ,  
 पुरो यन्त्र मध्ये समावाद्य भवत्या ।  
 स्वयम्भं प्रसूनादिभिः पूजयित्वा ,  
 चतुर्बर्णं सिद्धिं लभेत् पामरोऽपि ॥१२  
 श्रियं च पति पार्वतीमीश्वरं च ,  
 रति काम देवं षडङ्गेन सार्वम् ।  
 स्व योनी तथा मन्त्रमुक्त्वा भवानीम् ,  
 क्रमात् पूजयित्वा नरेन्द्रो भवेत् सः ॥१३  
 निधी द्वी च पाश्वं द्वये संविभाव्य ,  
 प्रपूज्या महिष्यस्ततो लोक पालाः ।  
 तदस्त्राणि तत्तद् दलाये प्रपूज्य ,  
 भवस्याट सिद्धिं लभेन मानवोऽपि ॥१४  
 क्षितिस्त्वं विधात्रीं जगत्सुष्ठि कर्त्रीं ,  
 त्वमापोऽपि विष्णुर्जगत्पालिका च ।  
 त्वमनिस्तु रुद्रौ जगत् क्षोभ कर्त्रीं ,  
 त्वमेश्वर्यं युक्ता जगद् वायु रूपा ॥१५  
 त्वमाद्या शिवे ! शम्भु कान्ते ! शरण्ये ,  
 जगद् ब्रह्म रन्धे सदारं भ्रमीषि ।  
 निराधार गम्या भवस्यैकं पुण्या ,  
 त्वमाकाश कल्पा भवानि ! प्रसीद ॥१६  
 भवाम्भोधि मध्ये निपातयैव सर्वम् ,  
 मुनीनां च गर्वं सु खर्वं करोषि ।





वाणी निकलने लगती है। हिंसक प्राणी भी उनके प्रति हिंसा भाव नहीं रखते, देव गण सहयोगी होते हैं, यज्ञ का सौभाग्य प्राप्त होता है, अष्टमिष्ठियाँ हाथ में रहती हैं, तुष्ट्यह त्रृट ही रहते हैं। मैं आपके इस शक्तिशाली मंत्र जप करते हुए नमन करता हूँ। ६।

पारिमात्र वृक्षों के बन में स्वर्णमय भूमि के कुपर पक विविध मणीमणित गृह में गोभागमान रत्नसिंहासन पर आपका स्थान अष्टवल कमल है। आपको मैं बारम्बार नमन करता हूँ। ७।

इस अष्टवल कमल की कणिका में दो चिकोणीं के मध्य में तस्सरणी जैसी कान्तिवाली देवी मूर्ति विराजमान हैं। आपके कानों में कुण्डल हैं। मुखमंडल चन्द्रमा के समान सुन्दर है। आप विपुटा विशक्ति को मैं नमन करता हूँ। ८।

आपकी नदी भुजाए रत्न-हीरों अलंकारों से विभूषित हैं। हाथों में दो उच्चम कमल, पाण, धनुष, स्वर्णमय अंकुश और पुष्पबाण भारण किये हुए हैं। आपके उस स्वरूप का मैं नमन करता हूँ। आप मेरे जीवन में विराजमान रहें। ९।

आपके चरण कमलों में दो नूपुर ओमायमान हैं। मूर्तक पर मुकुटधारण किये हुए हैं। आप के बन्दना के लिए विभिन्न देवियों विद्यमान हैं। हे ! प्रमान्नमुखा विपुटा शक्ति देवी आप मेरे जीवन में विराजमान हो। ३०।

आप ही संसार के तीनों भुवनों की सृष्टि करती हैं। उनका संहार करती हैं। तीनों भुवनों को क्षुब्ध करती हैं, और तीनों भुवनों के लोगों का पोषण करती है तथा नाव वर्ण जैसा आप का स्वरूप है। आप त्रि-विन्दु-स्वरूपिणी हैं। आप त्रि-शक्ति-मत्ती विपुरा देवी की मैं आराधना करता हूँ। ११।

आप के प्राण प्रतिष्ठा युक्त 'यंत्र' की आपके इसी रूप मूर्ति की भावना पकाध्यचिन से रखकर मनिपूर्वक आहान और पुष्पों से आपकी पूजा करता हूँ। आपकी पूजा द्वारा अधम व्यक्ति भी धर्म, अर्थ, काम और सोक फल प्राप्त करता है। मैं आपकी पूजा करने हुए वंदना करता हूँ। १२।

इस धोनि में आकर आपके इस मूल मंत्र का उच्चारण करते हुए जो व्यक्ति जो छ वेवताओं के साथ क्रमशः श्री, श्रीपति, पार्वती, इन्द्र, रति, कामदेव और भवानी की अर्चना

करता है, वह नर से नरेन्द्र हो जाता है। मैं भी ऐसे ही कामना करते हुए आपकी पूजा अर्चना करता हूँ। १३।

आपके 'यंत्र' के दोनों पाइर्ड में स्थित दो निधियों अर्थात् 'शंख निधि' एवं 'पद्मनिधि' की पूजा करता हूँ। 'यंत्र' में स्थित लोकपालों का पूजन करता हूँ। पद्म के अग्रभाग में आप के अस्त्रों की पूजा करता हूँ। ऋषि मुनि कहते हैं कि आपकी पूजा से मनुष्य भी अष्टमित्रियों को प्राप्त कर लेता है। मैं ऐसी ही इच्छा रखते हुए आप की पूजा करता हूँ। १४।

हे जननि! आप शक्ति—मयी ब्रह्मा मनि द्वारा जगत की हो। २७।—

(पुष्टि करता है, नल नैया।) वृथु मूर्ति द्वारा जगत की रक्षा करती है, अन्नि मयी सद्गमूर्ति द्वारा जगत का संहार करती है। आप ऐश्वर्य रूपिणी हैं और ब्रह्माण्ड की वायु रूपिणी हैं। १५

हे शिव! हे शम्भु—महिषि! आप सबकी रक्षा करनेवाली आधाराक्षि हैं। आप जगत के सभी प्राणियों के ब्रह्म रन्ध्र में सदा भ्रमण करती रहती हैं। आप निराधार तेजोमयी मूर्ति में अधिष्ठान करती हैं। हे भवानि! आप गगन रूपिणी होकर भी एकमात्र शिव के पुण्य फल से स्वरूप धारण करती हैं। आप मुझ पर सदैव प्रसन्न हों। १६।

हे देवि! हे भवानि! आप सभी को हस्त भव सागर में निमग्न कर बड़े से बड़े व्यक्ति का अहंकार भी चूर कर देती हैं। आप चिदानन्द—रूपिणी, प्रकाश—मयी हैं। मैं अपनी सामान्य बुद्धि से आपको पहचानने में समर्थ नहीं हूँ। आप सदैव मुझ पर प्रसन्न हो। १७।

हे भवानि! ऐसा कहते हैं कि मंदबुद्धि वाला व्यक्ति भी आपके मंत्र का एक लाख नप कर कवित्व शक्ति प्राप्त कर लेता है। इस त्रिलोक में जो आपके स्वरूप को जान लेता है, वह दुर्लभ को भी प्राप्त कर लेता है। आप मुझ पर प्रसन्न हो। १८।

हे भवानि! यद्यपि आप आधार शक्ति रूपिणी हैं तथापि आधेय—रूपिणी भी आप ही हैं। आप जगद व्यापिनी होकर

भी जगत की व्याप्ति—रूपिणी भी हैं। आप अभाव—रूपिणी होकर भी भाव रूपिणी हैं। आप त्रिगुणातीताहैं। आप मुझ पर प्रसन्न हों। १९।

हे देवि! आप सूक्ष्म—रूपिणी हैं, फिर आप ही स्थूल—रूपिणी विभु—मूर्ति भी हैं। अधिक क्या, आप ही समस्त विश्व हैं। हे भवानि! इस विश्व में आपकी स्तुति करने की शक्ति किसमें है? केवल आपकी गुण राशि मुझे लेता है। मैं ऐसी ही इच्छा रखते हुए आप की पूजा करता हूँ। आपका स्तब्धन करने की प्रेरणा देती है। मैं अक्षम होने पर भी आपकी स्तुति करता हूँ। आप मुझ पर सदैव प्रसन्न

## ॥कलश्वति॥

हे भवानि! जो तीनों सन्ध्या काल में जप के अन्त में आपके इस अति गोप्य स्तव का पाठ करता है, उसके लिए इस विभुवन में कोई भी कर्म असाध्य नहीं रहता। वह सभी कार्य करने में समर्थ होता है। आपका वास्तविक स्वरूप उसे जात हो जाता है। आप मुझ पर सदैव प्रसन्न हों। २१।

वास्तव में यह त्रिशक्ति त्रिपुटा स्तोत्र साधक के जीवन समस्त चक्रों को जाग्रत कर उसे परमानन्द प्रदान करता है, केवल इस स्तवन स्तोत्र का पाठ ही विशेष कल्याणकारी है, और यदि अपने घर में यंत्र सिद्ध प्राण प्रतिष्ठा युक्त 'त्रिशक्ति यंत्र' का नित्य पूजन कर इस स्तोत्र का संस्कृत अथवा हिन्दी ही पाठ कर लिया जाए तो अन्तत शुभकारी रहता है। त्रिशक्ति यंत्र के त्रिकोण में बिन्दुरूपेण देवी विद्यमान है और साथ में—'श्री, श्रीपति, पार्वती, ईश्वर, रति-कामदेव और भवानि' विराजमान हैं। वो पाइवों में 'शंख निधि' और 'पद्मनिधि' विराजमान हैं, यंत्र में आठ दिशाओं में आठ लोकपाल आपके द्वारपाल स्वरूप हैं, ऐसा महान यंत्र जिसके घर में स्थापित होता है उस घर के दुख दारिद्र्य, रोग-शोक सदैव के लिये चलते ही जाते हैं, नित्य गुरु पूजन के साथ त्रिशक्ति 'श्री हीं कली' का पूजन भी अवश्य करें।

# संस्कृती चिदिंदि माता

जीवन में बंताज हो, पक्षपत्र योग्य न हो, संस्कारों से युक्त न हो, चैत्रय न हो, मेघावी न हो, कुबाल न हो, तो माता-पिता का शिर वर्व के अंच्छा लहीं उठे रखता। बंताज का योग्य होना, विद्वान होना भी जिन दैवी कृपा के बंधन नहीं हैं।

प्रत्येक माता-पिता की यह इच्छा होती है, कि उनकी बंताज विद्वा के क्षेत्र में आवे बढ़े, उच्च शिक्षा ग्रहण करे, जीवन में कुछ बल लके और आं बाप का भी जाम दोड़ा कर याके। सबस्तरी को ब्राह्मणवायिली भी कहा जाया है, जिनकी कृपा व्यक्तिप यह भवत्यर्थी विद्विं भाला जीवन का एक शौमाल्य है, जिसको धारण करने से मार्गित्यक उपर्युक्त हो जाता है, समरण आस्ति बड़े जाती है, बुद्धि तीक्ष्ण हो जाती है।

आओ बढ़कर आपकी बंताज प्रविद्वि और कीर्ति प्राप्त करती कुर्बी यज्ञोभावी बजाती है, इन से पवित्र्य होने के लाय ही लाय उनमें श्रेष्ठ संस्कारों का भी विकास होता है। 10 जून 2002 सूर्य ब्रह्मण के समय यह माला खाक तौब से आपके लिए तैयार की गई है।

## जीवन का सर्वश्रेष्ठ वान-‘ज्ञान वान’

ज्ञान वान को जीवन का सर्वश्रेष्ठ वान बताया जाया है। आप किसी एक व्यक्ति को दृष्ट्युगुरुदेव की इस जात परम्परा से उसे विकास का वर्षिक सदस्य बनाकर जोड़ सकते हैं। साथ ही आप २० पूर्व प्रकाशित पत्रिकाएं प्राप्त कर मंदिरोंमें, भस्त्रतालीमें, संगल बारोंमें, ब्राह्मणोंको, निधन परिवारोंको ज्ञान कर सकते हैं और इस प्रकार उनके नीवन को भी इन श्रेष्ठ जन के प्रकाश से आलोकित कर सकते हैं, जो अभी तक इससे विचित है। इस किया के माध्यम से अनेक मनुष्योंको गणनात्मक जन की शोलनना प्राप्त होगी और उनका जीवन एक श्रेष्ठ रथ पर भयभर हो सकेगा और आपको पुण्य लाभ होगा।

**क्रिधि** - क्रिधी ज्ञानमयाक व्यो माला का कुंकुम, अक्षत वे पूजन करें, धूप, दीप दिव्याकर डालिए हाथ की गुट्ठी में माला लेकर 'है' बीज मंत्र का ५ मिनट तक जप करें। माला को दो माह तक धारण करें। बाद में लुभक्षित रस्ते हें तथा विशेष ऊर्जाकर्तों (पर्वीका) आदि के समय धारण करें।

प्रत्येक साधना नि शुल्क

# गुरुद्वारा दिल्ली

जिस भूमि पर सैकड़ों प्रबोग और अर्थरथ दीक्षाएं  
सम्पन्न हो चुकी हैं, उस सिद्ध वैतन्य द्वितीय भूमि—

## पर ये दिव्य साधनात्मक प्रयोग

समस्त साधकों एवं शिष्यों के लिए यह योजना प्रारम्भ हुई है। इसके अन्तर्गत विशेष दिवसों पर दिल्ली सिद्धान्तम् में पूज्य गुरुदेव के निर्देशन में ये साधनाएं पूर्ण विधि—विधान के साथ सम्पन्न कराई जाती हैं, जो कि उस दिन शाम 6 से 8 बजे के बीच सम्पन्न होती है यदि श्रद्धा व विश्वास हो, तो उसी दिन से साधनाओं में सिद्धि का अनुभव भी होने लगता है।

23.8.2002 शुक्रवार

विजय गणपति प्रयोग

विजय गणपति साधना अपने आप में समस्त शत्रुओं का नाश करती है। शत्रु जीवन में किसी के भी हो सकते हैं, इस साधना द्वारा शत्रु निभेज हो जाने हैं, आप पर हावी नहीं हो पाते हैं। यदि आपका कोई मुकदमा चल रहा हो, तो इस प्रयोग के माध्यम से उसमें विजय प्राप्त होती है। भगवान विजय गणपति की कृपा प्राप्त साधक हर क्षेत्र में विजय ही प्राप्त करता है। चाहे वह व्यापार हो, राजनीति हो, प्रतियोगी परिवारों हो या कोई और हो।

24.8.2002 शनिवार कुण्डलिनी घटचक न जगण साधन

यह किसी भी मनुष्य के जीवन का सौभाग्य होता है, जब उसे वह साधना प्राप्त होती है, विशेष कुण्डलिनी जागरण ही समस्त सिद्धियों का सार है। मूलाभ्यास से लगाकर सहस्रार तक एक-एक कर चक्र जब जागत होते हैं, तो साधक को अनेकों दिव्यानुभूतियों होती है।

सामने वाले व्यक्ति के मन की बातें जान लेना, दूर कहीं घट रही घटना को बैठे बैठे देख लेना, अदृश्य शक्तियों से वार्तालाप करना, और मानसिक तरणों द्वारा दूरस्थ बैठे व्यक्ति से सम्पर्क करना यह सभी क्रियाएं कुण्डलिनी चक्रों के जागरण से होता है।

25.8.2002 रविवार गुरु गत्य वार्तालाप प्रयोग

सिद्धान्तम् संस्पर्शित गुरुओं की यह विशेषता है, कि वे अपने सन्यासी शिष्यों को संन्यास प्रधान के पूर्व उसे यह साधना अवश्य ही प्रधान करते हैं, जिससे शिष्य कहीं भी रहे, कि नीं भी स्थिति में हो, वह मानसिक रूप से अपने गुरु से सम्पर्क प्राप्त कर अपने साधना क्रम में निरन्तर गतिशील बना रह सके।

पूज्यपाद गुरुदेव ने साधना अपने कई गुहास्थ शिष्यों को भी प्रदान की है। इस साधना को सम्पन्न करने के बाद साधक की ध्यानावस्था में पूज्य गुरुदेव आभास करा देते हैं, और संकट की छड़ी के पूर्व ही उससे बचने का प्रावधान भी कर देते हैं।



1. शाप व  
हनुकर
2. राहि ज  
विनी
3. गत्रका  
लि पु  
विवरत

शास्त्रों  
जी अधिक सा  
गी शेष होता  
तो इससे बड़ा

तुले ऐसे  
अवस्थित रह  
दीशा प्राप्ता व

लींग स्व  
रहा हो, ऐसे व  
जाता होते हैं  
प्रयोगों की व

- \* दीशा शाज  
साधनाएँ भी उ  
लींग के अनु  
ता, जीवन में उ  
लींग प्राप्त कर  
कर लेते हो
- \* गुरु मना शी  
वह दीशा प्राप्त  
लेता है, करीब  
वाले जा रहा है
- \* जीवा में साम  
ने वसन अवि  
श्वासन प्राप्त  
तीर्थों द्वारा ज  
कीजा के अन्तर  
आत्म

फोटो द्वारा  
फैलत २३  
आप यह ना  
अपना छोड़ो।  
उपर न भूल  
मनस्त भी इन  
को प्रदान कर  
दो च सबस्त  
लम्ब पर आ  
अपना यह व  
विज्ञान से नि  
लकड़ी।

सम्पर्क :

इन तीनों दिवसों पर साधना में भाग लेने वाले साधकों के लिए निम्न नियम माल्य होंगे-

- अप्र-अपने किसी दो घंटों अवधि सहजों को (जो विकल के सदृश नहीं है) नव-ठेकड़ विज्ञान विकल का जरूरी उपचार दिल्ली गुरुद्वारा में अन्यन्त लोगों द्वारा घंटों एवं प्रयोग में भाग ले सकते हैं। विकल की बदलता वा एक अर्थी फुल्क र. २३५/- तैयार आपको मत्र के ४६०/- की जगह करते हैं। प्रयोग से सम्बन्धित विवेच भव तित्व, प्राप्त-प्रतिशिला साधनी (प्रति गुटिका आदि) आपको निश्चल प्रदान की जाती है।
- २ यदि आप विकल सहज नहीं हैं, तो आप स्वयं तब यहने किसी एक मित्र के सिर विकल वर्षीक उपचार कर उपरोक्त लिखी साधना में भाग ले सकते हैं।
- ३ विकल सहज यहां कर अपने लिखी एक विकल को उपचार की इस पदनामप्राप्तता की जगह द्वारा से विकल एक फुल्क उन पृथक्षादी कार्य करते हैं। यदि आपके प्रयोग से एक गवाह कुछ लिखी में ईश्वरीय विवरण, साधनामक विज्ञान वा गता है, तो वह आपके लिखी की बदलता का के प्रतीक है। उर्ध्वांत प्रयोग से बदला निश्चल है और यह कुछ द्वारा ही उर्ध्वांत लक्षण सधेन के प्राप्त होते हैं। अपनों के विवेच तराजु के अवधि के दराजे में नहीं होते रहते।

### गुरुद्वारा में दीक्षा व साधना का भवन

शहरों में उपर्युक्त आता है, किंतु गलियों में भव नाम दिया जापु तो अति उत्तम होता है, उत्तरों ली शाश्वत पुण्यद्वारा होता है वहि तको के लिखारे करें, उससे भी अधिक समुद्र तट, और उससे भी अधिक पार्वत में करेंगे, और पार्वत में भी यदि दिमालाय में दिया जापु, तो और भी उपर्युक्त गुरु भेद होता है। इन सबसे भी शेष होता है वहि साधक लुग वर्षों में बैठकर साधना संग्रह करें। और वहि गुरुद्वारा अपने आशन उत्तरि गुरुद्वारा में ही यह साधना प्रदान करें, तो द्वितीय बड़ा शीक्षाव्य और कुछ होता ही नहीं।

कुछ ऐसे स्थान होते हैं, जहां दिव्य शिरों का वास स्थेष रहता ही है। जो सहजुल होते हैं, वे सूक्ष्म रूप से जायना सक्षमीर प्रतिपाल अपने धार में अवशिष्ट रहते हुए भवेत् विवेचि का सूक्ष्म रूप से संतालन करते ही रहते हैं। इन्हें यदि शिव गुरुद्वारा में पहुंच कर गुरु से साधना, गंगा पुर्ण शीक्षा प्राप्त करता है और गुरु द्वारा का स्पर्श कर उनकी ताजा से साधना प्राप्तन करता है, तो उसके जीभांड से देवताओं भी हृषीका करते हैं।

तीर्थ स्थान पुण्यप्रद हैं पर शिव अथवा साधक के लिए जाली तीर्थों से भी पात्र तीर्थ गुरुद्वारा होता है। जिस धार में साधनुरूपेत का लितास स्थान रहा हो, ऐसे दिव्य स्थान पर गुरु द्वारा में उपरिषद होकर गुरु गुरु से गंगा प्राप्त करते ही द्वारा ही साधक ने तब उत्पाद होती है, जब उसके गत्तर्वा जागता होते हैं। इसी तर्ज को स्थान में रहके हुए साधकों के लाभार्थी गुरुद्वारा की व्यवसाय के बाबुजूद भी दिल्ली गुरुद्वारा में नील विवरों के साधनामक प्रयोगों की श्रवणा लिएरित की गई है।

- \* शीक्षा भव के दुनों ओर गुरु प्राप्तनामिक उपाय के जालनामी लाभार्थी की प्राप्त कर लेते हैं, जीवन के असाधन को अपुरोज के दुनों ओर लेते हैं, जीवन में अनुकूलीन भव, साधन, विवेच एवं शीक्षा प्राप्त कर लेते हैं, ताजान में दिल्ली प्राप्त कर लेते हैं।
- \* गुरु प्रबोध शिवाया जट विष्ट विन लाली द्वारा देवता प्राप्त करना है, उसके लियामा अपने उपर लिया है, जीवनीक वह साधनामीं देवता प्राप्त करने का एक रुप जावा है।
- \* शीक्षा ने जल लेते हाथी सभी साधकों का लाला से अपने शीक्षों का लाला के जालना दिल्ली देवतामा प्राप्त दिया जाता है। वह शीक्षा जल नीलों दिल्ली की जाति, वह शीक्षा की जाती है। शीक्षा के अपना एक उत्तम आदर्शी गंगा विवरा जाता है।

**फोटो द्वारा "छिन्नमस्ता दीक्षा"**  
केवल २३-२५ अगस्त को ही  
आप गाहे ने निष्ठारित दिवसों में दूर ही  
अपना फोटो एवं निष्ठाकार राशि का वैक  
द्वारा ('नव-नव-यज्ञ विज्ञान' के नाम से)  
मिलकर भी इन विज्ञानों वा होने वाली दीक्षा  
का प्राप्त कर सकते हैं। आपका कोटों एवं  
एवं एवं सवर्णों के पाते दिल्ली काव्यालय की  
सम्पर्क द्वारा हो सकते हैं। इस हेतु आप  
अपना वज्र शीष - अनिश्चित भेजें। वज्र  
विवरण में दिल्ली पर दीक्षा सम्पादन हो  
लेंगी।

**दीक्षा के विवराइ**  
३ दिवसों के लिये  
दिल्ली पांच व्यक्तियों  
को वार्षिक स्वदर्शन बनाकर  
उनके द्वारा पते लिखावा कर  
उपहार स्वरूप वे दीक्षा आप  
निःशुल्क प्राप्त कर सकते हैं

शक्तिपात्र युक्त दीक्षाएं

235/-  
=Rs. 1175/-

## छिन्नमस्ता

### गहाविद्या दीक्षा

भगवती छिन्नमस्ता के कटे सिर के देखकर यद्यपि धन में भय का संचार अवश्य होता है, परन्तु यह अत्यन्त उच्चकोटि की महाविद्या दीक्षा है। यदि शत्रु हावी हों, बने हुए कार्य बिगड जाते हों, या किसी प्रकार का आपके ऊपर कोई तंत्र प्रयोग हो तो यह दीक्षा अत्यन्त प्रभावी है। इस दीक्षा द्वारा कारोबार में सुदृढ़ता प्राप्त होती है, आर्थिक असाधन समाप्त हो जाते हैं, साथ ही व्यक्ति के शरीर का कायाकल्प भी होना प्रारम्भ हो जाता है, उसके शरीर में एक विशेष ऊर्जा एवं सफूर्ति का संचार हो जाता है। इस साधना द्वारा उच्चकोटि की साधनाओं का मार्ग प्रशस्त हो जाता है, तथा उसे मौसम अथवा सर्दी गर्मी का भी विशेष प्रभाव नहीं पड़ता है।

सम्पर्क : सिद्धाभव 308, कोहाट एक्सेप्ट, पीतमपुर, नई दिल्ली - ३४, फोन : ०११-७१८२२४८, टेली फोन : ०११-७१९६७००

फूलाई 2002 मंत्र-तत्र-यज्ञ विज्ञान '81' स

# Wealth unlimited

*The Sadhak who accomplishes this ritual becomes rich and powerful like Lord Indra! It is said in "Rig Veda" that only through the good Karmas of past lives and grace of the Guru can one obtain Bhuvaneshwari Sadhana.*

When Lord Ram was being crowned his Guru Vashishth said to him – O Ram! In this world a poor man is treated with contempt even by relatives while a rich man is honoured even by strangers.

He further stated – In the world of Sadhanas there is no more powerful Sadhana for becoming prosperous than that of Goddess Bhuvaneshwari.

Lord Ram did just that and his reign was called Ram-rajya in which there was prosperity and joy everywhere.

Even Lord Krishna accomplished this Sadhana and was able to found the wonderful city of Dwarka which was full of riches and wealth.

Lord Shiva has said that even a person who has been fated to be poor can become rich through this wonderful Sadhana.

Bhuvaneshwari is the Goddess who rules over the riches of the whole world and She is worshipped even by the gods and Yogis.

According to the great Yogi Gorakhnath following are the benefits of this Sadhana.

After this Sadhana has been done wealth starts to flow into one's life on its own. The person gains a magnetic personality and is easily able to influence others, even his enemies.

He is ever protected from peril by the kind Goddess and he remains healthy and fit all through life. He also leads a happy family life and

there never is any paucity in his life.

He gains respect and fame in the society and is honoured for his work. Bhuvaneshwari Sadhana is a key to success in life no matter which field one has chosen.

The Sadhana must be tried on a **full moon night** between 9 pm and midnight. Have a bath and wear yellow clothes. Sit facing North on a yellow seat.

Cover a wooden seat with a yellow cloth.

On a mound of rice grains place **Bhuvaneshwari Yantra**. On the Yantra place a **Bhuvantray rosary**. Offer vermilion, rice grains and rose petals on the Yantra.

Light ghee lamp and incense. On the right hand side of the Yantra place an **Eishwarya Gutika**.

Chant one round of Guru Mantra

Then chant 21 rounds of the following Mantra with a **Bhuvantray rosary**.

**Om Hreem Shreem Kleem  
Bhuvaneshwaryei Namah**

After this chant one round of Guru Mantra. Do this regularly for three days. Wear the Gutika in a thread around your neck. Drop the Yantra and rosary bundle in a river or pond.

Offer food and gifts to a girl below ten years in age. After eleven days drop the Gutika in the river too. This is really a very effective Sadhana that cannot fail even in the present age of Kaliyug.

**Sadhana articles – 300/-**

**Hanuman Sadhana**

**Any Saturday**

# **Riddance from ailments**

*Our ancient Rishis knew that the future generations would be very weak and incapable of freeing themselves from ailments. So they devised some wonderful Sadhanas one of which is the following Bajrang Sadhana.*

A life without enthusiasm, energy and joys is useless. But such is the onslaught of tensions and worries today that it is very easy to change for the better, for each moment one feels dynamic and strong.

# HEALTH AND HAPPINESS

One cannot imagine a life without the sun. It is through the motion of the sun that one can count time. All planets revolve around the sun and get their energy from it. For all living forms too sun is the source of nourishment, radiance, strength and power. Through the Sadhana of sun one can gain knowledge, intelligence and power.

Even science accepts that the sun rays are capable of preventing diseases in a human. For incurable ailments the Sadhana of sun is considered best.

In the ancient times the Rishis and Yogis used to worship the sun and perform its Sadhana for remaining disease free and healthy. And not just in India the sun has been worshipped in all countries and all civilizations like Roman, Greek and Egyptian.

The worship of sun also frees one of all evils and weaknesses. Humans do tend to err and hence the human mind and body remain prey to evil thoughts. Due to this reason it becomes difficult to get the desired success in other Sadhanas. Hence with the grace of revered Sadgurudev some highly accomplished Sadhaks of the divine land of Siddhashram have devised a powerful sun Sadhana through which such success can be assured.

This Sadhana also helps get rid of diseases and eye ailments. For the Sadhana one has to get up before sun rise on a **Sunday**. Have a bath and wear fresh clothes. Then offer water from a

copper tumbler to the rising sun.

For this while offering water to the rising sun a special procedure is used. The copper tumbler is held near the chest and water is poured facing the sun. The tumbler is held in a way so that the reflection of the sun is seen in the pouring water.

Sit facing east on a white mat and on a wooden seat place the **Surya Yantra** over red flowers. Offer saffron, betel nut and red flowers on the Yantra.

Next pray thus to the Lord Sun – *O Lord accept my prayers and my offerings of devotion.*

Then wear a **Surya Mannimalya** (a special rosary) around the neck and chant the following Mantra for fifteen minutes.

*Om Hreem Hreem Suryaay Namah*

If the Sadhak performs this Sadhana daily then there is nothing like it. All wishes and Sadhanas of a Sadhak who tries this ritual are fulfilled.

If tried with full devotion and concentration weakness, disease and laziness cannot remain in the body. The Sadhana of sun is specially good for curing problems related to the eyes.

It is through the sun that one is in direct contact with nature. Among all astrological planets too the sun is worshipped first and foremost. Hence everyone should surely try this wonderful and powerful Sadhana that is the very basis of a happy and healthy life.

**Sadhana articles – 360/-**

**The Sadhana of sun is specially good for curing problems related to the eyes. It is through the sun that one is in direct contact with nature. Among all astrological planets too the sun is worshipped first and foremost. Hence everyone should surely try this wonderful and powerful Sadhana that is the very basis of a happy and healthy life.**

# FULFIL ALL WISHES

*It is said that the Sadhana of Lord Ganesh brings all boons. It is also said that in the present age of Kaliyug Lord Ganpati is a deity who is easily pleased and blesses the Sadhak with success in all spheres.*

Lord Ganpati is the epitome of true knowledge and joy. That is why He is worshipped first among all the gods and goddesses. Lord Ganpati being the son of Lord Shiva and Mother Goddess Parvati imbibes the divine powers and kindness of both.

From the very early times it has been believed and it is also said in the ancient texts that Lord Ganpati must be first worshipped before starting any new task. Without his blessings no task can be fulfilled.

Lord Ganpati is a deity who also imbibes the energy and blessings of all deities. This is also the reason why He is worshipped foremost. When Lord Ganpati was born all divine deities came to bless Him. Lord Vishnu blessed Him with his knowledge and Siddhis.

Lord Brahma blessed Him with the power of creation. Lord Shiva blessed him with the power of destroying evil. Goddess Lakshmi blessed Him with wealth and prosperity. Goddess Saraswati blessed Him with intelligence and eloquence. Thus all deities bestowed their powers upon Him.

Hence by worshipping Lord Ganpati one can fulfill all and any wish. If a person remembers the Lord early morning then the entire day is spent happily and successfully. Man always has wishes and he always craves for their fulfillment. He keeps

trying day and night to make his desires fructify.

Lord Ganpati is said to be *Siddhi Pradaataa* that is bestower of all boons. So through Sadhana of Ganpati and that too a special form of the Lord i.e. *Shwetaark Ganpati* all wishes can be fulfilled.

Try this Sadhana only on a **Wednesday** early in the morning. Have a bath and prepare Laddoos for the Lord.

Wear fresh red clothes. Sit facing North on a red mat. First of all chant four rounds of Guru Mantra. Cover a wooden seat with red cloth and on it make a mound of rice grains. On it place the *Shwetaark Ganpati*. On either side place a *Riddhi* and *Siddhi*. Offer Laddoos to the Lord. Then take water in the right palm and express your wish speaking your name and surname i.e. speak thus – I (name and surname) perform this Sadhana for fulfilment of this wish.

Next let the water flow to the ground. Next light a ghee lamp and incense. Then chant the following Mantra meditating on the form of Lord Ganpati for 35 minutes.

*Om Hreem Kleem Vinayakaay Manovaanchhitam  
Siddhaye Om Kleem Hreem Phat*

Do this regularly for 21 days. After the Sadhana place the Shwetaark Ganpati in the worship place.

Sadhana articles – 300/-

**22,23,24 जुलाई 2002**

**ॐकारेश्वर**

**नुसु पूर्णिमा**

**शिविर स्थल - मेला ग्राउण्ड**

**बस स्टेन्ड के पास ॐकारेश्वर**

आयोजक समूह सिद्धांशुग साधक परिवार  
मालवाचंल ॐकारेश्वर तीर्थधार्म (गद्य प्रदेश)

**4 अगस्त 2002**

**शिविर स्थल जाट धर्मशाला रेलवे**

**स्थेशन हिसार(हरियाणा)**

आयोजक हिसार - जोग प्रकाश निलक 98120-  
56108, श्री गफे सिंह पिंडाये हिसार, 01662-81627,  
सत्यीर सिंह कुंगत गिरावी, 9512654-36240,  
राजकुमार शर्मा प्रभुतारा, सत्यनारायण पटवारी-  
उकलाला - 1693-33203, राजेन्द्र निलक, राजा गुरुकर  
शर्मा, डा. बलदीर सिंह कलावाली सिरसा- 22801 विक्रम  
शाही आरनील, पूर्ण चंद रोपणा- नारनील 01385-  
52741, टीष्ठन पाठक, पानीपत- 01742-655781, वरदान  
सिंह कलेहावाल, रामगुरुर सिंह, राजेश कुमार धनबज्य  
एडवोकेट-01662-43488, ओ.पी. शर्मा हिसार , श्री  
आई.आर. छिल्कर अंवाला 95171-2660305

**15 अगस्त 2002 सीतापुर उ.प्र.  
शिविर स्थल राजा कालेज मैदान**

**निकट लाल बाबा चौराहा सीतापुर**  
आयोजक राजकुमार रस्तोनी, लखीमपुर 05872-  
57568 रामसिंह शर्मेष, सीतापुर 05865-22731 राजकीर  
सिंह कलनपुर 0612-612016 सत्यनारायण 0512-603427,  
नितिन पवारिया 0512-359453, शिवदत प्रसाद 05862-  
49948, अनुष प्रताप सिंह 05862-44712, सुशील कुमार  
महेश्वरी, प्रेम शंकर कछवा, रघीन कुमार तिवारी,  
ओ. नीरा सिंह, गन्धु, सकरेना, प्रकाश चंद वाजपेही,  
मदन लाल गठोंड शक्ति प्रताप सिंह, प्रगोद यादव,  
महेश्वर सिंह यादव, रामकृष्ण लिखिल,

**5 सितम्बर 2002 सोलन**

(हिमाचल प्रदेश )

**शिविर स्थल दुर्गा भवन मुशारी**

**मार्केट सोलन (हि.प्र.)**

**चामुण्डा साधना शिविर**

आयोजक जान चंद रत्न एडवोकेट धुगार्डी  
01978-55283 शोलेन्ड्र शेली 01978-44500 अशोक कुमार  
शिंगला -230503 प्रकाश देवी 01978-66059, सुरेश  
कुमार 01978-55846, दिवाज रिंग रामुर्ज 0192-40046,  
चंद्रशेखर 01796-48661, कर्गल रिंग, राजेन्द्र शर्मा,  
डॉ. गगन, के.डी. शर्मा, वर्षी राम नारुर, केवदारगढ़,  
आग्रप्रांशु शर्मा, कुशल रिंग, आर. एम. गिरहारा,  
कर्गल, प्रदीप राणा, हैप्पी, पंकज राणा, राम कुमार।

\* \* \* \* \*

स्वाधक कृपया ध्यान दें

1. यदि आप अपने ध्यान पर भावना लिखिए  
का आयोजन करना चाहते हैं तो इस सम्बन्ध में  
इस आयोजक मंडल बनाकर लिखित भैं पत्र  
नुस्खेव को जोधपुर अधिकारी भैंजे पत्र पास  
होने के पड़वाले हो तीन महीने में जल श्री दिनांक  
उपलब्ध होजी आपको सूचित कर दिया जायेगा।

2. डाक लाभ लिखान द्वारा वी. पी. नुस्खे

लिखित श्री नुस्खे बहुत अधिक बड़ा दिया जाया है।  
आपको वी. पी. भैंजे में बहुत अधिक डाक व्यय  
लबला है इसले बचते हेतु सम्बलियता भावना  
सामन्ती वी. धन बाजी यदि आप पूर्ण व्यपेष  
अधिक भैंजे हो तो आपको कार्यालय खर्च पर  
संजिकता वी. पी. द्वारा भावना सामन्ती भैंजे ही  
जायेगी।

3. भावना सामन्ती जो सम्बलियता धन बाजी  
मंत्र लिखि केन्द्र जोधपुर और परिका से  
सम्बलियता आवक्षणक नुस्खे मंत्र तंत्र दंत्र लिखान  
जोधपुर के जाम हो ही भैंजे।

4. परिका में छापे क्वार्टिक्स दिक्षांतों के अलावा  
जोधपुर अधिकारी दिनांकी भैंट करने हेतु कृपया पहले  
फोल करके जागकारी उत्तरण प्राप्त कर लें।

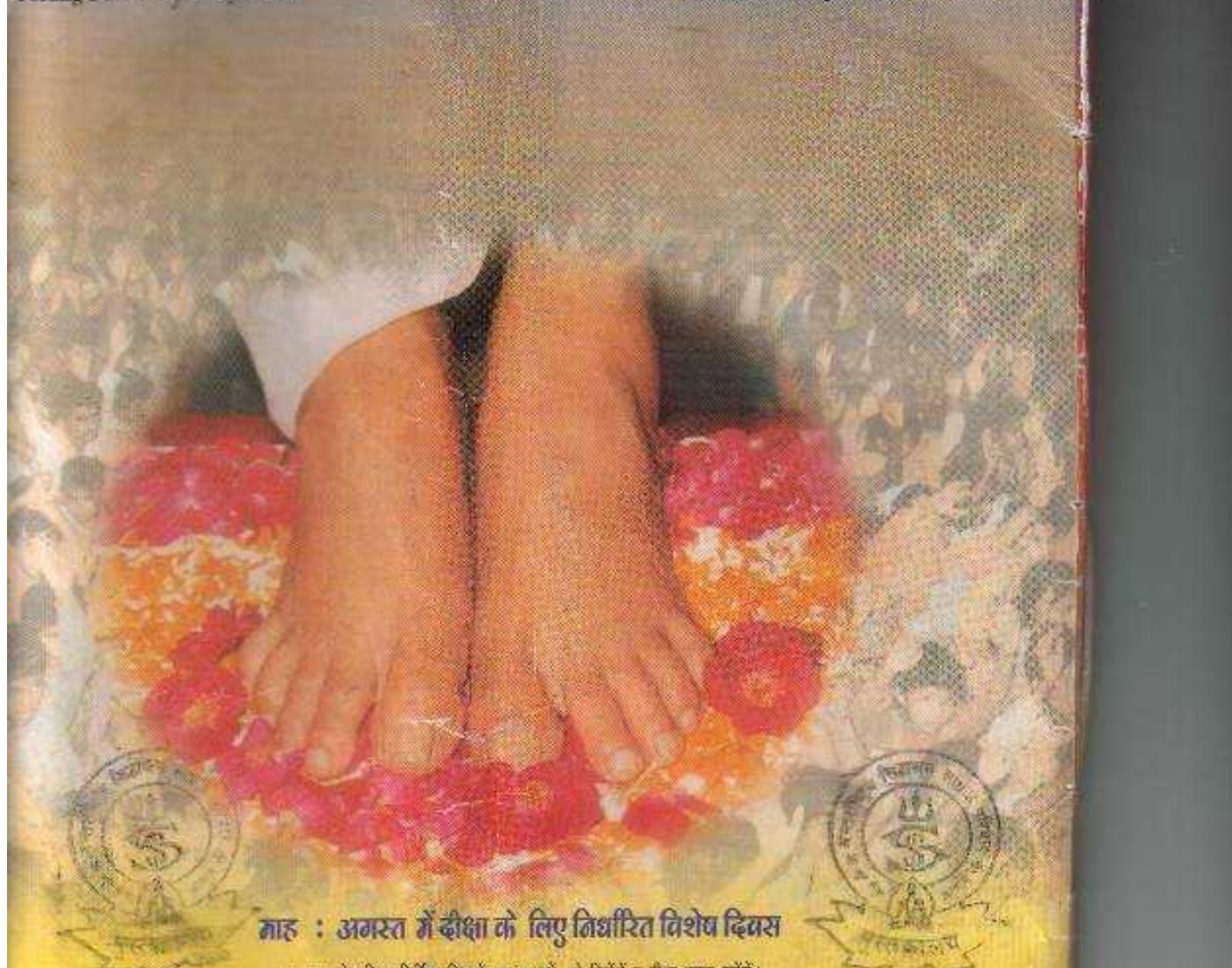
'जुलाई' 2002 मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान '86'

संग्रह संख्या No. 35305/81

With Registrar Newspapers of India  
Posting Date 14-15 every Month

A.H.W.

Postal No. RJ/WR/19/65/2002  
Licence to Post without Pre payment  
Licence No. RJ/WR/PP04/2002



### ताहः : अगस्त में दीक्षा के लिए निर्धारित विशेष दिवस

पूज्य पुरुदेव निमा निर्धारित दिवसों पर साक्षात् रो निर्वाणे द दीक्षा प्रदान करेंगे।

इन्हें साथक निर्धारित दिवसों पर पहुंच कर दीक्षा प्राप्त कर सकते हैं।

नियासित दिवसों पर वे दीक्षा 2 मात्र 11 बजे से 1 बजे के

नय तथा साय 5 बजे से 7:30 बजे के बीच प्रदान की जायेगी।

दिनांक

9-10-11 अगस्त 2002

स्थान

गुरुधाम (जोधपुर)

दिनांक 23-24-25 अगस्त 2002

स्थान

सिद्धाश्रम (दिल्ली)

वर्ष - 22

अंक - 7

सम्पर्क

संत्र तंत्र एवं देहान्त हैं. लौगाली नाम हाईकोट कॉलोनी, जोधपुर 342001 राज. फोन: 0291-432209 | टेली फोन: 0291-432210  
हिन्दुधाम 302 कोहाट एक्स्प्रेस पोस्टमार्ग ताई लैलो - 34 फोन: 011-73249 टेली फोन: 011-7196700



## COLLECTION OF VARIOUS

- > HINDUISM SCRIPTURES
- > HINDU COMICS
- > AYURVEDA
- > MAGZINES

FIND ALL AT [HTTPS://DSC.GG/DHARMA](https://dsc.gg/dharma)

Made with  
By  
  
Avinash/Shashi

Icreator of  
hinduism  
server!

